THE TROUBLE WITH BEING BORN

E. M. CIORAN
TRANSLATED BY RICHARD HOWARD

Table of Contents

□□□ □□□□ □□□□□□:

□□□□□□ □□□

□□□□□□□□

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

[illegible]:

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ई.एम. सियारन

पैदा होने में परेशानी

फ्रेंच से रिचर्ड

हॉवर्ड द्वारा अनुवादित

एस

सीवर बुक्स

न्यूयॉर्क

[illegible] © 1973, 2011 [illegible]
[illegible] © 1976, 2011 [illegible]
[illegible], 307 [illegible] 36 [illegible], 11 [illegible], 10018 [illegible]
arcade@skyhorsepublishing.com.
[illegible]® [illegible], [illegible].® [illegible]
[illegible] www.arcadepub.com [illegible]
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1
[illegible]
ISBN: 978-1-61145-443-7

1

सुबह के तीन बजे, मुझे एहसास होता है, पहले इस पल, फिर इस पल, फिर अगले पल: मैं हर मिनट का हिसाब-किताब रखता हूँ। और यह सब क्यों? क्योंकि मेरा जन्म हुआ है। यह एक खास तरह की अनिद्रा है जो जन्म के प्रति अभिशाप पैदा करती है।

"जबसे मेरा जन्म हुआ है"—यह शब्द मेरे कानों को इतना भयावह लगता है कि असहनीय हो जाता है।

एक ऐसा ज्ञान होता है जो आपके हर काम को महत्व और दायरे से वंचित कर देता है: ऐसे ज्ञान के लिए, स्वयं के सिवा सब कुछ आधारहीन है। वस्तु की अवधारणा से भी घृणा करने की हद तक शुद्ध, यह उस चरम विज्ञान को दर्शाता है जिसके अनुसार कुछ करना या न करना एक ही बात है और इसके साथ एक चरम संतुष्टि भी जुड़ी होती है: हर बार इस खोज को दोहराने की संतुष्टि कि किया गया कोई भी

कार्य बचाव के लायक नहीं है, कि किसी भी चीज में पदार्थ का थोड़ा सा भी अंश नहीं जुड़ता, कि "वास्तविकता" पागलपन के दायरे में आती है। ऐसे ज्ञान को मरणोपरांत ज्ञान कहा जा सकता है: यह इस तरह कार्य करता है मानो जानने वाला जीवित भी हो और न भी हो, एक प्राणी भी हो और एक प्राणी की स्मृति भी। "यह तो अतीत में है," वह अपनी हर उपलब्धि के बारे में कहता है, यहाँ तक कि उसे हासिल करते हुए भी, इस प्रकार वह वर्तमान से हमेशा के लिए वंचित हो जाता है।
विनाश करना, सृजन को समाप्त करना ही एकमात्र ऐसा कार्य है जिसे मनुष्य स्वयं पर ले सकता है, यदि वह, जैसा कि सभी बातों से संकेत मिलता है, स्वयं को सृष्टिकर्ता से अलग करना चाहता है।

मुझे पता है कि मेरा जन्म एक संयोग है, एक हास्यास्पद दुर्घटना है, और फिर भी, जैसे ही मैं खुद को भूल जाता हूं, मैं ऐसा व्यवहार करता हूं मानो यह एक महत्वपूर्ण घटना हो, जो दुनिया की प्रगति और संतुलन के लिए अपरिहार्य हो।

पिता होने के अपराध को छोड़कर बाकी सभी अपराध कर चुका हो।

सामान्यतः, पुरुष निराशा की अपेक्षा रखते हैं: वे जानते हैं कि उन्हें अधीर नहीं होना चाहिए, कि यह कभी न कभी तो आएगी ही, और तब तक टलती रहेगी जब तक वे अपने तात्कालिक कार्यों को पूरा नहीं कर लेते। लेकिन निराशा से मुक्त व्यक्ति अलग होता है: उसके लिए, निराशा कार्य के साथ ही घटित होती है; उसे इसकी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती, यह उसके सामने ही मौजूद होती है। क्रम से स्वयं को मुक्त करके, उसने संभावनाओं को आत्मसात कर लिया है और भविष्य को अनावश्यक बना दिया है। वह दूसरों से कहता है, "मैं तुम्हारे भविष्य में तुमसे नहीं मिल सकता। हमारे पास एक भी पल साझा करने का अवसर नहीं है।" क्योंकि उसके लिए संपूर्ण भविष्य पहले से ही यहाँ मौजूद है।

§

§

§

§

§

प्राणियों के बीच सच्चा संपर्क केवल मूक उपस्थिति से, स्पष्ट गैर-संचार से, उस रहस्यमय और शब्दहीन आदान-प्रदान से स्थापित होता है जो आंतरिक प्रार्थना के समान होता है।

जो कुछ मैं साठ वर्ष की आयु में जानता हूँ, वही मुझे बीस वर्ष की आयु में भी पता था। चालीस वर्षों का लंबा, अनावश्यक, सत्यापन का श्रम।

मैं लगभग पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि हर बात निराधार है, उसका कोई आधार नहीं है, उसका कोई औचित्य नहीं है, इसलिए यदि कोई मुझे चुनौती देने का साहस करे, यहाँ तक कि वह व्यक्ति भी जिसकी मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ, तो वह मुझे एक धोखेबाज या मूर्ख ही लगेगा।

बचपन में भी मैंने घंटों को बहते हुए देखा, किसी संदर्भ, किसी क्रिया, किसी घटना से स्वतंत्र, समय का उस चीज़ से अलगाव जो स्वयं नहीं थी, उसका स्वायत्त अस्तित्व, उसकी विशेष स्थिति, उसका साम्राज्य, उसका अत्याचार। मुझे वह दोपहर अच्छी तरह याद है जब पहली बार, खाली ब्रह्मांड का सामना करते हुए, मैं क्षणों का एक ऐसा प्रवाह मात्र था जो अपनी उचित भूमिका निभाने से हिचकिचा रहा था। समय अपने अस्तित्व से अलग हो रहा था—मेरी ही कीमत पर।

अय्यूब के विपरीत, मैंने अपने जन्म के दिन को शाप नहीं दिया; इसके विपरीत, मैंने बाकी सभी दिनों को अपने अभिशापों से ढक दिया है...

यदि मृत्यु के केवल नकारात्मक पहलू ही होते, तो मरना एक अनियंत्रित क्रिया होती।

§

§

§

§

§

§

यदि स्पष्टता में इतनी असुविधा और अस्पष्टता है, तो इसका कारण यह है कि स्पष्टता हमारी रातों की नींद के दुरुपयोग का परिणाम है।

जन्म को लेकर हमारा जुनून, हमें हमारे अतीत से पहले के किसी बिंदु पर ले जाकर, हमें भविष्य में, वर्तमान में और यहां तक कि अतीत में भी मिलने वाले सुख से वंचित कर देता है।

ऐसे दिन बहुत कम ही होते हैं जब, इतिहास के बाद के परिप्रेक्ष्य में, मैं मानव प्रसंग को पीछे छोड़ते हुए देवताओं की हंसी को देखने में असफल रहता हूं।
हमें एक वैकल्पिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जब अंतिम न्याय का दृष्टिकोण अब किसी को भी संतुष्ट नहीं कर पाएगा।

एक विचार, एक अस्तित्व, कोई भी चीज़ जो साकार रूप धारण करती है, अपनी पहचान खो देती है, विकृत हो जाती है। सभी उपलब्धियों की निरर्थकता। संभावनाओं को कभी मत छोड़ो, शाश्वत तुच्छता में लिप्त रहो, जन्म लेना भूल जाओ।

असली, अनोखी बदकिस्मती: दुनिया के उजाले में आना। एक ऐसी आपदा जिसकी जड़ें आक्रामकता में, विस्तार और क्रोध के बीज में, और उस सबसे बुरे की ओर झुकाव में निहित हैं जिसने सबसे पहले उन्हें झकझोर दिया।

जब हम कई वर्षों बाद किसी से दोबारा मिलते हैं, तो हमें एक-दूसरे के सामने बैठकर घंटों तक कुछ नहीं बोलना चाहिए, ताकि मौन के माध्यम से हमारी घबराहट का आनंद लिया जा सके।

चमत्कारिक बंजरपन के दिन। इन दिनों पर खुशी मनाने, विजय का ऐलान करने, इस सूखे को उत्सव में बदलने, इसे अपनी पूर्णता, अपनी परिपक्वता, संक्षेप में अपनी वैराग्यता का प्रतीक मानने के बजाय, मैंने खुद को द्वेष और आक्रोश से ग्रसित होने दिया: हमारे भीतर का पुराना आदम इतना दृढ़ है, वह चंचल कुतिया, जो आत्म-त्याग के लिए अनुपयुक्त है।

मैं हिंदू दर्शन से मंत्रमुग्ध हूं, जिसका मूल उद्देश्य स्वयं पर विजय प्राप्त करना है; और मैं जो कुछ भी करता हूं, जो कुछ भी सोचता हूं, वह केवल मैं ही हूं और स्वयं के अपमान हैं।

जब हम कोई क्रिया कर रहे होते हैं, तो हमारा एक लक्ष्य होता है; क्रिया हो जाने के बाद, वह हमारे लिए उस लक्ष्य से अधिक वास्तविक नहीं रह जाती जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे। यहाँ कुछ खास मायने नहीं रखता—महज एक खेल। लेकिन हममें से कुछ लोग क्रिया के दौरान इस खेल के प्रति सचेत रहते हैं: हम निष्कर्ष को आधार में, उपलब्धि को आभासी रूप में अनुभव करते हैं—हम अपने अस्तित्व मात्र से ही "गंभीरता" को नकार देते हैं।
अवास्तविकता, सार्वभौमिक शून्यता की कल्पना, रोजमर्रा की अनुभूति और अचानक उत्पन्न होने वाले रोमांच का परिणाम है। सब कुछ एक खेल है—ऐसे रहस्योद्घाटन के बिना, हमारे सामान्य जीवन में व्याप्त अनुभूतियों में वह विशिष्ट छाप नहीं होती जो हमारे आध्यात्मिक अनुभवों को उनकी नकल, हमारी असुविधाओं से अलग करने के लिए आवश्यक होती है। क्योंकि प्रत्येक असुविधा मात्र एक असफल आध्यात्मिक अनुभव है।

§

§

§

§

§

अविचलित प्रतीत होता है, जो सभी प्राणियों की तरह उसे भी अपने प्रति अवश्य ही महसूस होती है।

यदि हम अस्तित्व और गैर-अस्तित्व को समान तीव्रता से समझें तो उनमें कोई अंतर नहीं है।

अज्ञान ही सर्वथा का आधार है; यह हर क्षण दोहराई जाने वाली क्रिया द्वारा सब कुछ सृजित करता है; यह इस संसार और किसी भी संसार का निर्माण करता है, क्योंकि यह निरंतर उस चीज़ को वास्तविक मान लेता है जो वास्तव में नहीं है। अज्ञान ही वह भयानक त्रुटि है जो हमारे सभी सत्यों का आधार है; यह सभी देवताओं से कहीं अधिक प्राचीन और शक्तिशाली है।

हम उस व्यक्ति को इसी तरह पहचानते हैं जिसमें आंतरिक खोज की प्रवृत्ति होती है: वह असफलता को सफलता से ऊपर रखेगा, यहाँ तक कि अनजाने में ही सही, असफलता की तलाश भी करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि असफलता, जो हमेशा आवश्यक होती है, हमें स्वयं से परिचित कराती है, हमें स्वयं को वैसे देखने की अनुमति देती है जैसे ईश्वर हमें देखता है, जबकि सफलता हमें अपने भीतर और वास्तव में हर चीज में निहित सबसे गहरे भाव से दूर कर देती है।

एक समय ऐसा था जब समय का कोई अस्तित्व ही नहीं था... जन्म को अस्वीकार करना, समय से पहले के उस समय के लिए एक तरह की तड़प मात्र है।

मैं अपने उन अनेक मित्रों को याद करता हूँ जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, और मुझे उन पर दया आती है। फिर भी उन पर इतनी दया नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने मृत्यु की समस्या सहित हर समस्या का समाधान कर लिया था।

§

§

§

§

§

अगर मैं पहले किसी ताबूत के पास खड़े होकर खुद से पूछता था: "उस व्यक्ति के जन्म से क्या लाभ हुआ?", तो अब मैं यही सवाल किसी भी जीवित व्यक्ति के बारे में पूछता हूं।

जन्म पर जोर देना, उस अनसुलझे रहस्य को सुलझाने की लालसा से अधिक कुछ नहीं है, जो पागलपन की हद तक पहुंच गई है।

मृत्यु के विषय में, मैं लगातार "रहस्य" और "महत्वहीनता" के बीच, पिरामिड और मुर्दाघर के बीच झूलता रहता हूँ।

यह सोचना असंभव है कि कभी ऐसा भी समय था जब हमारा अस्तित्व ही नहीं था। इसीलिए जन्म से पहले हम जो थे, उससे हमारा लगाव बना रहता है।

जापान के कुशा सागर के एक पुजारी ने एक पश्चिमी आगंतुक से कहा, "स्वयं के अस्तित्वहीन होने पर केवल एक घंटे का ध्यान करें और आप स्वयं को एक अलग इंसान के रूप में महसूस करेंगे।"
बौद्ध मठों में नियमित रूप से न जाने के बावजूद, कितनी ही बार मैंने संसार की अवास्तविकता और इस प्रकार अपनी स्वयं की अवास्तविकता पर चिंतन नहीं किया है? मैं इससे कोई दूसरा व्यक्ति तो नहीं बन गया, नहीं, लेकिन निश्चित रूप से मेरे मन में यह भावना बनी रही है कि मेरी पहचान पूरी तरह से भ्रामक है, और इसे खोने से मैंने कुछ नहीं खोया है, सिवाय कुछ के, सिवाय सब कुछ के।

जन्म लेने की सच्चाई से चिपके रहने के बजाय, जैसा कि विवेक कहता है, मैं जोखिम उठाता हूँ, मैं पीछे मुड़ता हूँ, मैं किसी अज्ञात आरंभ की ओर लगातार पीछे हटता जाता हूँ, मैं उत्पत्ति से उत्पत्ति की ओर बढ़ता हूँ। शायद किसी दिन मैं स्वयं उत्पत्ति तक पहुँच जाऊँगा, ताकि वहाँ विश्राम कर सकूँ, या नष्ट हो जाऊँ।

X ने मेरा अपमान किया। मैं उसे मारने ही वाला था। लेकिन फिर सोचकर मैंने खुद को रोक लिया।
मैं कौन हूँ? मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है: प्रतिक्रिया देने वाला स्वरूप या संयम रखने वाला स्वरूप? मेरी पहली प्रतिक्रिया हमेशा ऊर्जावान होती है; दूसरी, सुस्त। जिसे "बुद्धिमत्ता" कहा जाता है, वह अंततः केवल निरंतर "विचार-विमर्श" है, अर्थात्, पहली प्रवृत्ति के रूप में निष्क्रियता।

यदि आसक्ति एक बुराई है, तो हमें इसका कारण जन्म के कलंक में खोजना चाहिए, क्योंकि जन्म लेना ही आसक्ति है। इसलिए, वैराग्य का उद्देश्य इस कलंक के निशान मिटाना होना चाहिए, जो सभी कलंकों में सबसे गंभीर और असहनीय है।

चिंता और व्याकुलता के बीच, गर्भ में पल रहे भ्रूण के विचार से अचानक शांति का अनुभव होता है।

इस समय, मनुष्यों या देवताओं की ओर से आने वाली कोई भी निंदा मुझ पर असर नहीं डाल सकती: मेरा विवेक उतना ही अच्छा है जितना कि मानो मेरा अस्तित्व ही न रहा हो।

§

§

§

§

§

हमारी असुविधाएँ ही चेतना को प्रेरित करती हैं, उसे जन्म देती हैं; अपना कार्य पूरा करने के बाद, वे एक-एक करके कमजोर होकर लुप्त हो जाती हैं। लेकिन चेतना बनी रहती है और उनसे बची रहती है, बिना यह याद किए कि वह उनसे क्या ऋणी है, यहाँ तक कि बिना कभी उन्हें जाने भी। इसलिए वह निरंतर अपनी स्वायत्तता, अपनी संप्रभुता का बखान करती है, यहाँ तक कि जब वह स्वयं से घृणा करती है और स्वयं को समाप्त करना चाहती है।

संत बेनेडिक्ट के नियम के अनुसार, यदि कोई भिक्षु अपने द्वारा किए जा रहे कार्य पर गर्व करने लगे या केवल उससे संतुष्ट हो जाए, तो उसे उस कार्य को तुरंत त्याग देना चाहिए।
एक खतरा ऐसा है जिससे वह व्यक्ति नहीं डरता जो असंतोष की प्यास में, पश्चाताप और घृणा के उन्माद में जी चुका हो।

यदि यह सच है कि ईश्वर किसी का पक्ष लेना पसंद नहीं करते, तो मुझे उनकी उपस्थिति में कोई असहजता महसूस नहीं होगी, क्योंकि मुझे उनका अनुकरण करने में, हर चीज में उनके जैसा बनने में, "बिना किसी पूर्वाग्रह के" बहुत प्रसन्नता होगी।

सुबह उठना, नहाना-धोना और फिर किसी अनपेक्षित प्रकार के भय या अवसाद की प्रतीक्षा करना।
मैं थोड़ी सी शांति के लिए पूरा ब्रह्मांड और शेक्सपियर की सारी रचनाएँ दे दूंगा।

नीत्शे का कितना बड़ा सौभाग्य था कि उनका अंत परमानंद के साथ हुआ!

एक ऐसी दुनिया का अंतहीन उल्लेख करना जहाँ अभी तक कुछ भी घटित नहीं हुआ था, जहाँ आप चेतना की इच्छा किए बिना ही उसकी प्रत्याशा करते थे, जहाँ आभासी दुनिया में डूबे हुए आप आत्म-बोध से परे एक स्व की शून्य परिपूर्णता में आनंदित होते थे...
जन्म न लेना, बस उस पर चिंतन करना—कितनी खुशी, कितनी आजादी, कितना खुलापन!

2

यदि संसार के प्रति घृणा स्वयं में पवित्रता प्रदान करती है, तो मुझे समझ नहीं आता कि मैं संत बनने से कैसे बच सकता हूँ।

मेरे जितना अपने कंकाल के करीब मैं रहा हूँ, उतना कोई और नहीं रहा: जिसके परिणामस्वरूप एक अंतहीन संवाद और कुछ ऐसे सत्य सामने आते हैं जिन्हें मैं न तो स्वीकार कर पाता हूँ और न ही अस्वीकार कर पाता हूँ।

गुणों की तुलना में अवगुणों के साथ तालमेल बिठाना आसान होता है। अवगुण स्वभाव से ही एक-दूसरे के अनुकूल होते हैं, एक-दूसरे की सहायता करते हैं और परस्पर भोग-विलास से भरे होते हैं, जबकि ईर्ष्यालु गुण एक-दूसरे से लड़ते और नष्ट करते हैं, हर बात में अपनी असंगति और असहिष्णुता दिखाते हैं।

अपने कर्मों या दूसरों के कर्मों पर विश्वास करना व्यर्थ है। आपको दिखावटी चीजों और यहाँ तक कि "वास्तविकताओं" से भी बचना चाहिए; आपको हर चीज और हर व्यक्ति से अलग होकर जीना चाहिए, अपनी इच्छाओं को त्याग देना चाहिए या कुचल देना चाहिए, और हिंदू कहावत के अनुसार, "अकेले हाथी" की तरह कम इच्छाओं के साथ जीवन जीना चाहिए।

मैं X को उसकी पुरानी मुस्कान के कारण सब कुछ माफ कर देता हूँ।

एक भी क्षण ऐसा नहीं रहा जब मुझे इस बात का एहसास न हुआ हो कि मैं स्वर्ग से बाहर हूं।

जो आप छिपाते हैं, वही गहरा और सच्चा होता है। यहीं से निम्न भावनाओं की शक्ति उत्पन्न होती है।

ईसा मसीह की नकल में कहा गया है, "अमा नेसारी" (अज्ञात रहना पसंद करो)। हम स्वयं से और दुनिया से तभी खुश रहते हैं जब हम इस सिद्धांत का पालन करते हैं।

किसी पुस्तक का वास्तविक मूल्य उसके विषय की महत्ता पर निर्भर नहीं करता (अन्यथा धर्मशास्त्रियों का वर्चस्व हो जाता), बल्कि आकस्मिक और महत्वहीन चीजों को समझने के तरीके पर, सूक्ष्मतम को आत्मसात करने पर निर्भर करता है। सारगर्भित चीजों को समझने के लिए कभी किसी प्रतिभा की आवश्यकता नहीं पड़ी।

दस हजार साल दूसरों से पीछे या आगे होने का एहसास, मानवता की शुरुआत या अंत से संबंधित होने का एहसास...

निषेध तर्क से नहीं, बल्कि किसी अधिक अस्पष्ट और प्राचीन अवधारणा से उत्पन्न होता है। तर्क बाद में आते हैं, इसे उचित ठहराने और इसका समर्थन करने के लिए। हर 'नहीं' रक्त से उत्पन्न होता है।

स्मृति के क्षरण की सहायता से, पदार्थ की पहली पहलों और उनसे उत्पन्न जीवन के जोखिमों को याद करना...

जब भी मैं मृत्यु के बारे में सोचने में असफल होता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं अपने भीतर के किसी व्यक्ति को धोखा दे रहा हूँ, उसे छल कर रहा हूँ।

कुछ रातें ऐसी होती हैं जिन्हें सबसे शातिर यातना देने वाले भी नहीं सोच सकते। हम उनसे टुकड़ों में बँटे हुए, मूर्ख, स्तब्ध, बिना यादों और भविष्यवाणियों के, और यहाँ तक कि खुद को जाने बिना ही बाहर निकलते हैं। और तब दिन व्यर्थ लगता है, प्रकाश हानिकारक, अंधकार से भी अधिक दमनकारी।

एक सचेत फल मक्खी को भी ठीक उसी तरह की कठिनाइयों और उसी प्रकार की अनसुलझी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जैसा मनुष्य को करना पड़ता है।

मनुष्य होने से बेहतर जानवर होना, जानवर होने से बेहतर कीड़ा होना, कीड़े होने से बेहतर पौधा होना, और इसी तरह अन्य विकल्प भी बेहतर हैं।
मुक्ति? जो भी चेतना के साम्राज्य को कमज़ोर करे और उसकी सर्वोच्चता से समझौता करे।

मुझमें अन्य लोगों के सभी दोष हैं, फिर भी उनके द्वारा किए गए सभी कार्य मुझे अकल्पनीय लगते हैं।

प्रकृति के अनुसार, मनुष्य को बाहरी दुनिया की ओर मुख करके जीने के लिए बनाया गया है। यदि वह अपने भीतर झांकना चाहे, तो उसे अपनी आंखें बंद करनी होंगी, अपने प्रयासों का त्याग करना होगा, तात्कालिक सुख-सुविधाओं को छोड़ना होगा। जिसे "आंतरिक जीवन" कहा जाता है, वह एक विलंबित घटना है, जो केवल हमारी प्राणिक गतिविधियों को धीमा करने से ही संभव है; "आत्मा" का उद्भव और विकास केवल हमारे अंगों के सुचारू संचालन की कीमत पर ही हो सकता है।

मौसम में जरा सा भी बदलाव मेरी योजनाओं को खतरे में डाल देता है, मेरे विश्वासों की तो बात ही छोड़िए। इस तरह की निर्भरता—सबसे अपमानजनक प्रकार की—मुझे हमेशा कमजोर कर देती है, और साथ ही मेरी आज़ादी की संभावनाओं और स्वयं आज़ादी के बारे में बची-खुची उम्मीदों को भी मिटा देती है। अगर आप गीले और सूखे मौसम के भरोसे हैं तो शेखी बघारने का क्या फायदा? काश कोई कम दयनीय बंधन होता, और भगवान से एक और गुर्दा मिल जाता।

खुद को मारने की कोशिश करना व्यर्थ है, क्योंकि आप हमेशा बहुत देर से ही खुद को मारते हैं।

जब आपको पूरी तरह से पता चल जाता है कि सब कुछ अवास्तविक है, तो आपको यह समझ में नहीं आता कि इसे साबित करने की कोशिश क्यों करनी चाहिए।

जैसे-जैसे भोर पीछे छूटती है और दिन आगे बढ़ता है, प्रकाश स्वयं को वेश्यावृत्ति में परिवर्तित करता है और केवल उसी क्षण उद्धार पाता है - गोधूलि बेला की नैतिकता - जब वह गायब हो जाता है।

बौद्ध ग्रंथों में अक्सर "जन्म की खाई" का उल्लेख मिलता है। वास्तव में एक खाई, एक ऐसी खाई जिसमें हम गिरते नहीं हैं, बल्कि जिससे हम निकलते हैं, जो हम सभी के लिए घोर निराशा का कारण बनता है।

जॉब और चैम्फोर्ट के प्रति कृतज्ञता की भावनाएँ—उग्रवाद और कटु आलोचना की ओर—लगातार बढ़ते अंतराल पर उभरती रहीं…

प्रत्येक राय, प्रत्येक दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से अधूरा, अपूर्ण और अपर्याप्त होता है। दर्शनशास्त्र में और किसी भी विषय में, मौलिकता अपूर्ण परिभाषाओं पर ही निर्भर करती है।

यदि हम अपने तथाकथित उदार कार्यों पर गौर करें, तो ऐसा कोई कार्य नहीं है जो किसी न किसी पहलू से निंदनीय और यहां तक कि हानिकारक न हो, जिसके कारण हमें उसे करने पर पछतावा होता है—अंततः हमें संयम और पश्चाताप के बीच चुनाव करना पड़ता है।

§

§

§

§

§

असफलता के चरम पर, उस क्षण में जब शर्म हमें पूरी तरह से तोड़ देने वाली होती है, अचानक हम गर्व के उन्माद में बह जाते हैं जो हमें थका देने, हमें ऊर्जाहीन कर देने और हमारी शक्तियों के साथ हमारी शर्म की तीव्रता को कम करने के लिए ही पर्याप्त समय तक रहता है।

यदि मृत्यु उतनी ही भयावह है जितना दावा किया जाता है, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि एक निश्चित अवधि बीत जाने के बाद हम किसी भी प्राणी, चाहे वह मित्र हो या शत्रु, जिसने जीना छोड़ दिया हो, को सुखी मानते हैं?

कई बार मैं अपने कमरे से बाहर निकलने में कामयाब रहा हूँ, क्योंकि अगर मैं वहीं रहता तो किसी अचानक आए फैसले का सामना कर पाता या नहीं, यह मैं निश्चित नहीं कह सकता था। सड़क ज़्यादा सुकून देती है, वहाँ आप अपने बारे में कम सोचते हैं, वहाँ सब कुछ कमज़ोर और मुरझा जाता है, यहाँ तक कि आपकी अपनी उलझन भी।

बीमारी की यह विशेषता है कि जब सब कुछ सो रहा होता है, जब सब कुछ आराम कर रहा होता है, तब भी बीमार व्यक्ति जागता रहता है।

जब हम जवान होते हैं, तो हमें अपनी कमज़ोरियों में एक खास तरह का आनंद मिलता है। वे हमें बिल्कुल नई और समृद्ध लगती हैं! उम्र बढ़ने के साथ, वे हमें आश्चर्यचकित नहीं करतीं, हम उन्हें अच्छी तरह जान लेते हैं। अब, उनमें कुछ भी अप्रत्याशित न होने के कारण, उन्हें सहने का कोई औचित्य नहीं रह जाता।

जब हम अपने अंतर्मन से प्रेरणा लेते हैं, जब हम मेहनत करना और कुछ उत्पन्न करना शुरू करते हैं, तब हम अपनी प्रतिभाओं पर दावा करने लगते हैं, और अपनी कमियों से बेखबर हो जाते हैं। कोई भी यह स्वीकार करने की स्थिति में नहीं होता कि उसके भीतर से निकली हुई चीज़ बेकार हो सकती है। "आत्म-ज्ञान"? यह तो विरोधाभास है।

ये सभी कविताएँ जिनमें केवल कविता ही प्रश्न में है—एक संपूर्ण कविता जिसका अपने आप में कोई अन्य सार नहीं है! हम उस प्रार्थना के बारे में क्या कहेंगे जिसका उद्देश्य धर्म हो?

वह मन जो हर चीज़ पर सवाल उठाता है, हज़ारों पूछताछ के बाद लगभग पूर्ण निष्क्रियता की स्थिति में पहुँच जाता है, एक ऐसी स्थिति जिसे निष्क्रिय व्यक्ति वास्तव में सहज रूप से शुरुआत से ही जानता है। आख़िर निष्क्रियता जन्मजात उलझन के सिवा और कुछ नहीं है?

यह कितनी निराशाजनक बात है कि एपिकुरस, वह विद्वान जिसकी मुझे सबसे अधिक आवश्यकता है, ने तीन सौ से अधिक ग्रंथ लिखे! और यह कितनी राहत की बात है कि वे खो गए!

आप सुबह से शाम तक क्या करते हैं? मैं खुद को सहन करता हूँ।

हमारी मां को जिन कष्टों और पीड़ाओं का सामना करना पड़ा, उसके संदर्भ में मेरे भाई ने एक टिप्पणी की थी: "बुढ़ापा प्रकृति की आत्म-आलोचना है।"

“ज्ञात भाषाओं में अच्छी तरह बोलने के लिए व्यक्ति को पागल या नशे में होना चाहिए,” अब्बे सियेस ने कहा। मैं इसमें यह जोड़ना चाहूंगा कि शब्दों का प्रयोग करने का साहस करने के लिए भी व्यक्ति को नशे में या पागल होना चाहिए…

निराशावादी विचारधारा का कट्टर समर्थक लेखक बनने को छोड़कर किसी भी पेशे में निश्चित रूप से सफल होगा।

हमेशा सबसे बुरी स्थिति का सामना करने के डर में जीने के कारण, मैंने हर परिस्थिति में पहले से ही तैयारी करने की कोशिश की है, और दुर्भाग्य आने से बहुत पहले ही खुद को उसमें झोंक दिया है।

हम प्रार्थना करने की क्षमता रखने वालों से ईर्ष्या नहीं करते, जबकि हम धनवानों, धन और प्रसिद्धि के धनियों से ईर्ष्या करते हैं। यह विचित्र है कि हम किसी के उद्धार को तो स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन उसके क्षणिक लाभों को नहीं।

मैंने आज तक किसी ऐसे विलक्षण बुद्धिजीवी से मुलाकात नहीं की जो अस्वीकार्य कमियों से भरपूर न हो।

साधारणता की प्रबल मात्रा के बिना सच्ची कला संभव नहीं है। अपरिचित चीजों का निरंतर प्रयोग हमें आसानी से ऊबा देता है, असाधारण चीजों की एकरूपता से ज्यादा असहनीय कुछ भी नहीं है।

किसी दूसरी भाषा का प्रयोग करने में समस्या यह है कि उसमें बहुत अधिक गलतियाँ करने का अधिकार नहीं होता। अब, बिना दुरुपयोग किए एक निश्चित त्रुटि की तलाश करके, निरंतर व्याकरण संबंधी त्रुटियों के करीब पहुँचकर ही लेखन को जीवंतता का आभास दिया जा सकता है।

हममें से प्रत्येक व्यक्ति, निश्चित रूप से पूरी तरह अचेतन रूप से, यह मानता है कि सत्य की खोज केवल वही कर रहा है, जिसे बाकी लोग न तो खोज सकते हैं और न ही प्राप्त करने के योग्य हैं। यह पागलपन इतना गहरा और इतना उपयोगी है कि यह कल्पना करना भी असंभव है कि यदि यह एक दिन लुप्त हो जाए तो हममें से प्रत्येक का क्या होगा।

निःसंदेह, प्रथम विचारक ही वह पहला व्यक्ति था जो 'क्यों' के रहस्य में लीन था। यह एक असामान्य जुनून था, जो बिल्कुल भी संक्रामक नहीं था: ऐसे लोग वास्तव में दुर्लभ हैं जो इससे ग्रस्त होते हैं, जो प्रश्न पूछने के लिए तरसते हैं, और जो किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि वे जन्म से ही अनिश्चितता की स्थिति में होते हैं।

वस्तुनिष्ठ होने का अर्थ है दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा आप किसी वस्तु, किसी शव के साथ करते हैं—उनके साथ एक अंतिम संस्कार करने वाले की तरह व्यवहार करना।

यह पल हमेशा के लिए लुप्त हो गया है, अपरिवर्तनीय के गुमनाम समूह में खो गया है। यह कभी वापस नहीं आएगा। मैं इससे पीड़ित भी हूँ और नहीं भी। सब कुछ अद्वितीय है—और महत्वहीन भी।

एमिली ब्रोंटे: उनकी हर रचना मुझे अभिभूत कर देती है। हॉवर्थ मेरे लिए तीर्थस्थल है।

किसी धारा के किनारे चलना, उसे पार करना, पानी के साथ बहना, बिना किसी प्रयास के, बिना किसी जल्दबाजी के, जबकि मृत्यु हमारे भीतर अपने चिंतन, अपने निरंतर आत्मभाषण को जारी रखती है...

हमें त्यागने का अधिकार केवल ईश्वर के पास है। मनुष्य ही हमें छोड़ सकते हैं।

भूलने की क्षमता के बिना, हमारा अतीत हमारे वर्तमान पर इतना भारी बोझ बन जाएगा कि हमारे पास एक और पल का सामना करने की शक्ति ही नहीं रहेगी, उसे जीना तो दूर की बात है। जीवन केवल उन लोगों के लिए सहनीय होगा जिनका स्वभाव तुच्छ होता है, यानी वे लोग जो वास्तव में याद नहीं रखते।

पोर्फिरी बताते हैं कि प्लोटिनस में लोगों की आत्मा को पढ़ने की क्षमता थी। एक दिन, बिना किसी पूर्व सूचना के, उन्होंने अपने आश्चर्यचकित शिष्य से कहा कि वह आत्महत्या करने का प्रयास न करे, बल्कि यात्रा पर निकल जाए। पोर्फिरी सिसिली के लिए रवाना हो गए: वहाँ उनका अवसाद दूर हो गया, लेकिन वे खेदपूर्वक कहते हैं कि इस कारण वे अपने गुरु की मृत्यु के समय उपस्थित नहीं हो सके, जो उनकी अनुपस्थिति में हुई थी।
दार्शनिकों ने मनुष्यों की आत्माओं को पढ़े हुए काफी समय हो गया है। हमें बताया जाता है कि यह उनका काम नहीं है। शायद। लेकिन अगर वे अब हमारे लिए ज्यादा मायने नहीं रखते हैं तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

किसी भी कृति का अस्तित्व तभी होता है जब उसे अंधेरे में, पूरी सावधानी और एकाग्रता के साथ रचा जाए, ठीक उसी तरह जैसे कोई हत्यारा अपने अपराध की योजना बनाता है। दोनों ही मामलों में, महत्वपूर्ण बात है वार करने की इच्छाशक्ति।

आत्मज्ञान—सबसे कड़वा ज्ञान और वह ज्ञान जिसे हम सबसे कम विकसित करते हैं: सुबह से शाम तक, भ्रम की स्थिति में खुद को पकड़ने, प्रत्येक कृत्य की निर्दयतापूर्वक जड़ तक खोज करने और अपने ही न्यायालय में एक के बाद एक मामले हारने का क्या लाभ है?

जब भी मेरी याददाश्त कमजोर होती है, तो मैं उन लोगों की पीड़ा के बारे में सोचता हूँ जिन्हें यह पता होता है कि उन्हें अब कुछ भी याद नहीं है। लेकिन मुझे अंदर से यह एहसास होता है कि कुछ समय बाद उन्हें एक गुप्त आनंद मिलता है, एक ऐसा आनंद जिसे वे अपनी किसी भी याद के बदले नहीं छोड़ना चाहेंगे, चाहे वह कितनी भी मार्मिक क्यों न हो...

यह दावा करना कि आप किसी और से ज्यादा अलग-थलग हैं, हर चीज से ज्यादा अजनबी हैं, और महज उदासीनता के कट्टरपंथी होना!

आप जितने अधिक परस्पर विरोधी आवेगों के शिकार होते हैं, उतना ही कम आप यह जान पाते हैं कि किसके आगे झुकना है। चरित्रहीनता—ठीक यही है, और कुछ नहीं।

शुद्ध समय, घटनाओं, प्राणियों और वस्तुओं से मुक्त, समय केवल रात के कुछ निश्चित क्षणों में प्रकट होता है, जब आप इसे आते हुए महसूस करते हैं, जिसका एकमात्र उद्देश्य आपको एक अनुकरणीय तबाही की ओर ले जाना होता है।

3

अचानक ऐसा महसूस होना कि आप हर चीज के बारे में भगवान जितना ही जानते हैं और उतनी ही अचानक इस अनुभूति का गायब हो जाना...

प्रत्यक्ष विचारक चीजों पर चिंतन करते हैं; अन्य लोग समस्याओं पर। हमें अपने अस्तित्व से आमने-सामने होकर जीना चाहिए, न कि मन से।

“हार मानने के लिए तुम किसका इंतज़ार कर रहे हो?” —हर बीमारी एक सवाल के रूप में हमें चेतावनी भेजती है। हम अनसुना कर देते हैं, जबकि हम जानते हैं कि खेल खत्म हो चुका है और अगली बार हमें आखिरकार हार मानने का साहस दिखाना ही होगा।

जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, उन्माद और उन्माद पर मेरी प्रतिक्रिया कम होती जाती है। विचारकों में, मेरी रुचि अब केवल विलुप्त ज्वालामुखियों तक ही सीमित है।

एक युवा के रूप में, मैं खुद को बेहद ऊबा हुआ महसूस करता था, लेकिन मुझे खुद पर भरोसा था। भले ही मुझे इस बात का जरा भी आभास न हो कि मैं भविष्य में एक नीरस प्राणी बन जाऊंगा, फिर भी मैं जानता था कि चाहे कुछ भी हो जाए, उलझन मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी, बल्कि ईश्वर की कृपा से पूरी लगन और सटीकता के साथ मेरे जीवन पर नजर रखेगी।

अगर हम खुद को वैसे देख पाते जैसे दूसरे हमें देखते हैं, तो हम पल भर में गायब हो जाते।

एक बार मैंने अपने एक इतालवी मित्र से कहा कि लैटिन अमेरिकी लोग गोपनीयता से दूर रहते हैं—बहुत खुले और बातूनी—और मुझे वे राष्ट्र अधिक पसंद हैं जो संकोच से ग्रस्त हैं। मैंने आगे कहा कि जिस लेखक ने अपने जीवन में संकोच का अनुभव नहीं किया, उसकी रचनाएँ निष्कलंक हैं। उसने उत्तर दिया, “आप सही कह रहे हैं। जब हम अपने अनुभवों को पुस्तकों में वर्णित करते हैं, तो उनमें गहनता और विस्तार की कमी होती है, क्योंकि हम उन्हें पहले ही सौ बार बता चुके होते हैं।” इसके बाद हमने नारीत्व साहित्य के बारे में, और उन देशों में इसके रहस्यहीन होने के बारे में बात की जहाँ सामाजिक समारोह और धार्मिक सभाएँ प्रचलित हैं।

हमें कभी भी स्वयं को "धर्मपरायणता के सुखों" से वंचित नहीं करना चाहिए, मुझे याद नहीं किसने एक बार यह टिप्पणी की थी। क्या धर्म को इससे अधिक सूक्ष्मता से कभी उचित ठहराया गया है?

अपनी रुचियों को बदलने, मूर्तियों को बदलने, कहीं और प्रार्थना करने की यह लालसा...

खेत में लेट जाना, मिट्टी की सुगंध लेना और खुद से कहना कि यही हमारी निराशाओं का अंत और आशा दोनों है, कि इससे बेहतर कुछ भी खोजने की कोशिश करना व्यर्थ होगा जिसमें हम मग्न हो सकें, जिसमें विलीन हो सकें...

जब मैं व्यस्त होता हूँ, तो मैं किसी भी चीज़ के "अर्थ" के बारे में एक पल के लिए भी नहीं सोचता, खासकर उस काम के बारे में जो मैं कर रहा होता हूँ। यह इस बात का प्रमाण है कि हर चीज़ का रहस्य क्रिया में निहित है, निष्क्रियता में नहीं, जो चेतना का घातक कारण है।

सौ वर्षों में चित्रकला, कविता और संगीत का स्वरूप कैसा होगा? कोई नहीं बता सकता। एथेंस और रोम के पतन के बाद जिस प्रकार एक लंबा विराम आएगा, वह अभिव्यक्ति के साधनों की कमी और चेतना के क्षय के कारण होगा। अतीत से पुनः जुड़ने के लिए मानवता को एक नई सरलता का आविष्कार करना होगा, जिसके बिना कलाएँ कभी पुनः आरंभ नहीं हो सकतीं।

इस आदर्श रूप से बदसूरत चर्च के एक चैपल में, हम वर्जिन मैरी को अपने पुत्र के साथ पृथ्वी के ऊपर खड़े पाते हैं: एक आक्रामक संप्रदाय जिसने एक साम्राज्य को कमजोर और विजय प्राप्त की है और उसकी खामियों को विरासत में प्राप्त किया है, जिसकी शुरुआत विशालतावाद से होती है।

ज़ोहर में लिखा है: "जब मनुष्य प्रकट हुआ, तभी फूल प्रकट हुए।" मुझे लगता है कि वे उससे बहुत पहले से मौजूद थे, और उसके आगमन ने उन सभी को एक ऐसी अचेत अवस्था में डाल दिया जिससे वे अभी तक उबर नहीं पाए हैं।

क्लिस्ट की एक भी पंक्ति को पढ़े बिना यह सोचना असंभव है कि उन्होंने आत्महत्या की थी: मानो उनकी आत्महत्या उनके कार्यों से पहले ही हो गई हो।

पूर्व में, सबसे विचित्र और विलक्षण पश्चिमी विचारकों को उनके विरोधाभासों के कारण कभी गंभीरता से नहीं लिया जाता। यही कारण है कि हम उनमें रुचि रखते हैं। हम किसी एक विचारक को नहीं, बल्कि उसके उतार-चढ़ाव, उसकी जीवनी, उसमें पाई जाने वाली असंगतताओं और विकृतियों को पसंद करते हैं; संक्षेप में, उन विचारकों को जो न तो बाकी मानवता के अनुरूप ढल पाते हैं और न ही स्वयं के, और अपनी सनक और नियति दोनों से ही धोखा देते हैं। उनकी विशिष्ट पहचान क्या है? त्रासदी में बनावटीपन का पुट, और अपरिहार्य परिस्थितियों में भी चंचलता का संकेत।

टेरेसा ऑफ एविला ने अपनी रचनाओं में यदि उदासी के विषय पर विस्तार से चर्चा की है, तो इसका कारण यह है कि वे इसे लाइलाज मानती हैं। उनका कहना है कि चिकित्सक इसका इलाज नहीं कर सकते, और किसी मठ की प्रधानाध्यापिका के पास ऐसे रोगियों के सामने केवल एक ही उपाय बचता है: उन्हें अधिकार का भय दिलाना, उन्हें धमकाना, उन्हें डराना। संत का तरीका ही सर्वोत्तम है: अवसादग्रस्त व्यक्ति के मामले में केवल लात-घूंसे, थप्पड़ और अच्छी तरह पिटाई ही कारगर होती है। इसके अलावा, जब अवसादग्रस्त व्यक्ति आत्महत्या करने का निर्णय लेता है, तो वह स्वयं भी ठीक यही तरीका अपनाता है: वह बस अधिक कठोर साधनों का प्रयोग करता है।

जीवन के किसी भी कार्य के संबंध में, मन एक बाधक की भूमिका निभाता है।

यह कल्पना करना आसान है कि प्रकृति के तत्व अपने घिसे-पिटे विषय से ऊब चुके हैं, अपने अपरिवर्तनीय और पूरी तरह से अनुमानित संयोजनों से निराश होकर, कुछ मनोरंजन की तलाश में हैं: जीवन महज एक विषयांतर होगा, महज एक किस्सा होगा...

जो कुछ भी किया जा सकता है, वह मुझे हानिकारक और कम से कम व्यर्थ ही लगता है। जरूरत पड़ने पर मैं खुद को प्रेरित तो कर सकता हूँ, लेकिन कार्य नहीं कर सकता। मैं वर्ड्सवर्थ द्वारा कोलरिज के वर्णन को भलीभांति समझता हूँ: बिना कर्म के निरंतर सक्रियता।

जब भी कोई चीज अभी भी संभव लगती है, तो मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मुझ पर जादू कर दिया गया हो।

सच्ची स्वीकारोक्ति वह होती है जो हम अप्रत्यक्ष रूप से करते हैं—जब हम दूसरे लोगों के बारे में बात करते हैं।

हम किसी विश्वास को इसलिए नहीं अपनाते क्योंकि वह सत्य है (वे सभी सत्य हैं), बल्कि इसलिए कि कोई रहस्यमय शक्ति हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित करती है। जब यह शक्ति हमें छोड़ देती है, तो हम हताशा और पतन की स्थिति में पहुँच जाते हैं, मानो हम अपने शेष अस्तित्व से ही आमने-सामने हो रहे हों।

“प्रत्येक परिपूर्ण रूप का गुण यह है कि वह मन को तुरंत मुक्त कर देता है, जबकि भ्रष्ट रूप मन को बंदी बनाकर रखता है, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई खराब दर्पण जो हमें अपने सिवा कुछ नहीं बताता।” क्लेइस्ट की इस प्रशंसा में—और यह कितना अटपटा जर्मन लगता है—स्पष्टता का उनका निशाना विशेष रूप से दर्शनशास्त्र नहीं था। फिर भी, यह दार्शनिक शब्दावली की सर्वोत्तम संभव आलोचना है, एक छद्म भाषा जो विचारों को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करते हुए, केवल उनकी कीमत पर एक रूपरेखा धारण कर लेती है, उन्हें विकृत और अंधकारमय कर देती है, और केवल स्वयं पर ध्यान आकर्षित करती है। सबसे कष्टदायक अतिक्रमणों में से एक के द्वारा, शब्द ने एक ऐसे क्षेत्र में अग्रणी भूमिका ग्रहण कर ली है जहाँ उसे अदृश्य होना चाहिए।

“हे शैतान, मेरे स्वामी, मैं अपने आप को सदा के लिए तुझे समर्पित करती हूँ!” मुझे कितना अफसोस है कि मैं उस नन का नाम नहीं भूल पाई, जिसने अपने ही खून में डूबी कील से ये शब्द लिखे थे और जो प्रार्थना और संक्षिप्तता के संकलन में शामिल होने की पात्र है।

चेतना कांटा मात्र नहीं है, यह मांस में चुभने वाले खंजर के समान है।

खुशी को छोड़कर हर परिस्थिति में क्रूरता पाई जाती है। दूसरों की पीड़ा में प्रसन्न होना, यानी द्वेषपूर्ण आनंद, एक गलत धारणा है। बुराई करना सुख है, आनंद नहीं। आनंद, जो संसार पर एकमात्र सच्ची विजय है, अपने सार में शुद्ध है, इसलिए इसे सुख में नहीं बदला जा सकता, जो अपने आप में और अपनी अभिव्यक्तियों में हमेशा संदेहास्पद होता है।

एक ऐसा जीवन जो लगातार असफलताओं से रूपांतरित होता रहता है।

बुद्धिमान व्यक्ति हर बात पर सहमत हो जाता है, क्योंकि वह किसी भी चीज से स्वयं को नहीं जोड़ता। वह इच्छाओं से रहित एक अवसरवादी होता है।

प्रकृति की सबसे बड़ी गलती यह थी कि वह स्वयं को एक ही "राज्य" तक सीमित नहीं रख पाई: वनस्पतियों के साथ, बाकी सब कुछ बेमेल और अनुपयुक्त लगता है। सूर्य को पहले कीट के प्रकट होने पर ही रूठ जाना चाहिए था, और चिंपैंजी के आगमन के साथ ही पूरी तरह से गायब हो जाना चाहिए था।

जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, अगर हम "समस्याओं" की बजाय अपने अतीत की बारीकी से जांच करने लगते हैं, तो इसका कारण सिर्फ यह है कि हम विचारों की तुलना में यादों को अधिक आसानी से संभाल लेते हैं।

जिनकी बेवफाई को हम अंत में क्षमा करेंगे, वे वही लोग हैं जिन्हें हमने निराश किया है।

दूसरों के कामों को देखकर हमें हमेशा लगता है कि हम उन्हें और बेहतर कर सकते थे। दुर्भाग्य से, अपने कामों के बारे में हमारी ऐसी भावना नहीं होती।

“मैं पैगंबर था,” मोहम्मद हमें बताते हैं, “जब आदम अभी पानी और मिट्टी के बीच थे।” … जब हममें किसी धर्म की स्थापना करने—या कम से कम उसे नष्ट करने—का साहस ही नहीं है, तो हम दिन के उजाले में खुद को प्रकट करने का साहस कैसे कर सकते हैं?

वैराग्य सीखा नहीं जा सकता: यह सभ्यता में अंतर्निहित होता है। हम इसकी ओर प्रवृत्त नहीं होते, बल्कि इसे स्वयं में खोजते हैं। मैं यही सोच रहा था जब मैंने पढ़ा कि एक धर्म प्रचारक ने जापान में अठारह वर्षों के बाद केवल साठ लोगों को ही धर्मांतरित किया था, और वे भी वृद्ध थे। इतना ही नहीं, वे अंतिम क्षण में उससे बच निकले और जापानी रीति-रिवाज से, बिना किसी पश्चाताप या पीड़ा के, अपने पूर्वजों के योग्य वंशज बनकर मर गए, जिन्होंने मंगोल युद्धों के दिनों में स्वयं को निर्मल बनाने के लिए समस्त भौतिक शून्यता और अपनी स्वयं की शून्यता में विलीन होने दिया था।

हम अनंतकाल का चिंतन केवल लेटकर ही कर सकते हैं। एक लंबे समय तक, अनंतकाल पूर्वी सभ्यता का मुख्य विषय था: क्या वे लेटने की स्थिति को प्राथमिकता नहीं देते थे? एक बार लेट जाने पर, समय का चलना, समय का गिनना बंद हो जाता है। इतिहास एक ऐसी जाति की रचना है जो खड़ी रहती है। एक ऊर्ध्वाधर प्राणी होने के नाते, मनुष्य को न केवल अंतरिक्ष में बल्कि समय में भी आगे देखने की आदत डालनी पड़ी। भविष्य की उत्पत्ति इन्हीं दुर्भाग्यपूर्ण कारणों से हुई है!

हर मानवद्वेषी, चाहे वह कितना भी सच्चा क्यों न हो, कभी-कभी मुझे उस बूढ़े कवि की याद दिलाता है, जो बिस्तर पर पड़ा हुआ था और पूरी तरह भुला दिया गया था, जिसने अपने समकालीनों से क्रोधित होकर घोषणा कर दी थी कि वह उनमें से किसी को भी स्वीकार नहीं करेगा। उसकी पत्नी, दया भाव से, समय-समय पर उसके दरवाजे की घंटी बजाती थी...

कोई कार्य तब पूर्ण होता है जब हम उसमें और सुधार नहीं कर सकते, भले ही हम जानते हों कि वह अपर्याप्त और अपूर्ण है। हम उस कार्य से इतने बोझिल हो जाते हैं कि एक अल्पविराम लगाने की भी शक्ति नहीं रह जाती, चाहे वह कितना

§

§

§

§

§

के लिए ऐसे प्रयास की आवश्यकता होती है जो कोई भी करने में सक्षम नहीं होता।

जल्दबाजी का हर रूप, चाहे वह अच्छे काम के प्रति ही क्यों न हो, किसी न किसी मानसिक विकार का संकेत देता है।

सबसे कम अशुद्ध विचार वे होते हैं जो हमारी चिंताओं के बीच, हमारी झुंझलाहट के अंतराल में, उन सुखद क्षणों में प्रकट होते हैं जो हमारी पीड़ा स्वयं को प्रदान करती है।

काल्पनिक पीड़ाएं अब तक की सबसे वास्तविक पीड़ाएं हैं जिन्हें हम झेलते हैं, क्योंकि हमें उनकी निरंतर आवश्यकता महसूस होती है और हम उन्हें गढ़ते हैं क्योंकि उनके बिना जीना संभव नहीं है।

यदि किसी बुद्धिमान व्यक्ति का यह गुण है कि वह कोई व्यर्थ कार्य न करे, तो ज्ञान में मुझसे आगे कोई नहीं होगा: मैं उपयोगी कार्यों में भी स्वयं को नीचा नहीं दिखाता।

एक पतित प्राणी, एक उप-पशु की कल्पना करना असंभव है।

काश, मनुष्य से पहले जन्म हुआ होता!

मैं लाख कोशिश कर लूं, लेकिन मैं उन सदियों को तुच्छ नहीं समझ सकता जिनमें मनुष्य ईश्वर की परिभाषा को पूर्ण करने के अलावा और किसी काम में व्यस्त रहे।

चाहे निराशा जानबूझकर हो या बेवजह, उससे बचने का सबसे कारगर तरीका यह है कि आप एक शब्दकोश लें, अधिमानतः किसी ऐसी भाषा का जिसे आप मुश्किल से जानते हों, और उसमें एक-एक शब्द को देखें, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे ऐसे शब्द हैं जिनका आप कभी उपयोग नहीं करेंगे...

जब तक आप इस भयावहता के इस पहलू से बाहर हैं, तब तक आपको इसे व्यक्त करने के लिए शब्द मिल जाएंगे; एक बार जब आप इसे भीतर से जान लेंगे, तो आपको एक भी शब्द नहीं मिलेगा।

इसमें निराशा की कोई गुंजाइश नहीं है।

हर तरह की शिकायतें बीत जाती हैं, लेकिन उनका स्रोत अटल रहता है और उस पर किसी भी चीज का कोई असर नहीं होता: अभेद्य और अपरिवर्तनीय, यही हमारा भाग्य है।

क्रोध और निराशा दोनों में यह अहसास करना कि प्रकृति, जैसा कि बॉसुएट कहते हैं, हमें "पदार्थ का यह छोटा सा टुकड़ा जो वह उधार देती है" लंबे समय तक नहीं देगी। - पदार्थ का यह छोटा सा टुकड़ा: इस पर विचार करने के बल पर हम शांति प्राप्त करते हैं, हालांकि यह ऐसी शांति है जिसे कभी न जानना ही बेहतर होता।

§

§

§

§

§

§

खुश रहने के लिए आपको उन कष्टों को निरंतर याद रखना होगा जिनसे आप बच निकले हैं। यह स्मृति के लिए स्वयं को सुधारने का एक तरीका होगा, क्योंकि सामान्यतः यह केवल विपत्तियों को ही संजो कर रखती है, और खुशी को नष्ट करने में कितनी उत्सुक और सफल भी होती है!

एक अनसुनी रात के बाद, सड़क पर चल रहे लोग मानो मशीनी मशीनों की तरह लग रहे हैं। मानो कोई साँस ले रहा हो, चल रहा हो। हर कोई ऐसा लग रहा है जैसे किसी यंत्र से चल रहा हो: कुछ भी स्वाभाविक नहीं; मशीनी मुस्कान, भावहीन हाव-भाव। अगर आप खुद एक प्रेत हों, तो दूसरों को जीवित कैसे देख पाएँगे?

इतनी सारी संवेदनाओं के साथ बांझपन! शब्दों के बिना शाश्वत कविता।

शुद्ध थकान—बिना किसी कारण के थकान, जो कभी वरदान तो कभी अभिशाप जैसी लगती है: यही मुझे खुद को संभालने में मदद करती है, यही मुझे अपने 'स्व' का ज्ञान प्रदान करती है। एक बार यह मुझसे दूर हो जाए, तो मैं एक निर्जीव वस्तु से अधिक कुछ नहीं रह जाता।

लोककथाओं में जो कुछ भी जीवित है, वह ईसाई धर्म से पहले का है। यही बात हममें से प्रत्येक के भीतर जीवित हर चीज पर भी लागू होती है।

जो व्यक्ति उपहास से डरता है, वह कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा, चाहे अच्छा हो या बुरा: वह अपनी प्रतिभा के दायरे में ही सीमित रहेगा, और भले ही उसमें प्रतिभा हो, वह औसत दर्जे का ही रह जाएगा।

"अपनी सबसे गहन गतिविधियों के बीच, एक क्षण रुककर अपने मन पर 'विचार' करें"—यह सलाह निश्चित रूप से उन लोगों को नहीं दी जाती है जो दिन-रात अपने मन पर 'विचार' करते रहते हैं, और जिन्हें अपनी गतिविधियों को रोकने की कोई आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि वे वास्तव में कोई गतिविधि नहीं करते हैं।

जो विचार एकांत में, ईश्वर के सामने बैठकर उत्पन्न हुए हों, वही स्थायी रहते हैं—चाहे कोई आस्तिक हो या न हो।

कस्तूरी की सुगंध के प्रति जुनून अपने आप में एक स्वीकारोक्ति है। हम उस अजनबी के बारे में अधिक जानते हैं जो खुद को इसके प्रति समर्पित कर देता है, बजाय उस व्यक्ति के जो कस्तूरी की सुगंध के प्रति अनभिज्ञ है और जिसे हम हर दिन देखते हैं।

बिना दोहराव की प्रवृत्ति के ध्यान संभव नहीं है।

जब तक ईश्वर ने मनुष्य का मार्गदर्शन किया, तब तक उसकी प्रगति धीमी रही, इतनी धीमी कि उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ। अब जब वह किसी के साये में नहीं रहता, तो वह जल्दबाजी में है और उसे इसका अफसोस है—वह पुरानी लय को पुनः प्राप्त करने के लिए कुछ भी देने को तैयार है।

जन्म लेकर हमने उतना ही खोया है जितना मृत्यु के समय खोएंगे। सब कुछ।

तृप्ति—मैंने अभी-अभी यह शब्द बोला है, और मुझे पहले से ही पता नहीं है कि यह किसके संदर्भ में है, क्योंकि यह इतनी आसानी से मेरी हर भावना और विचार पर, मेरी हर प्रेम और घृणा पर, यहाँ तक कि स्वयं तृप्ति पर भी लागू होता है।

मैंने किसी को नहीं मारा, मैंने इससे भी बुरा किया है: मैंने संभावना को ही मार डाला है, और मैकबेथ की तरह, मुझे सबसे ज्यादा प्रार्थना करने की जरूरत है, लेकिन उसकी तरह ही, मैं आमीन नहीं कह सकता।

4

ऐसे मोव्स को पहुंचाना जिनमें से कोई भी जमीन पर न उतरे, बिना किसी को पता चले सब पर हमला करना, ऐसे तीर चलाना जिनका जहर केवल तुम ही झेलो!

X, जिसके साथ मैंने हमेशा जितना बुरा बर्ताव किया है, वह मुझसे नाराज़ नहीं है क्योंकि वह किसी से नाराज़ नहीं होता। वह हर अपमान को माफ कर देता है, यहाँ तक कि भूल भी जाता है। मुझे उससे कितनी ईर्ष्या होती है! उसके जैसा बनने के लिए मुझे कई जन्म लेने होंगे और पुनर्जन्म की अपनी सारी संभावनाओं को समाप्त करना होगा।

§

§

§

§

§

§

§

असफलता, अंततः एक ही बात पर निर्भर करती है।” “आप सही कह रहे हैं,” उन्होंने कुछ पल सोचने के बाद कहा। ऐसी महिला की यह अप्रत्याशित सहमति मुझे लगभग उतना ही प्रभावित कर गई जितना मेरे मित्र की मृत्यु ने।

अजनबी... मुझे ऐसा लगता है कि उनका साहसिक कार्य, किसी और से कहीं अधिक, भविष्य पर प्रकाश डालता है, कि केवल वे ही हमें इसकी झलक पाने और इसे समझने का अवसर देते हैं, और यदि हम उनके कारनामों को नजरअंदाज कर दें तो हम आने वाले दिनों का वर्णन करने के लिए पूरी तरह से अयोग्य हो जाते हैं।

आप कह रहे थे, "यह अफसोस की बात है कि एन ने कभी कुछ भी नहीं बनाया।"
“तो क्या हुआ! वो तो है ही। अगर उसने किताबों को जन्म दिया होता, अगर उसे ‘सच्चाई’ का एहसास हुआ होता, तो हम पिछले एक घंटे से उसके बारे में बात नहीं कर रहे होते।” किसी व्यक्ति का होना सृजन करने से कहीं अधिक दुर्लभ है। सृजन करना आसान है; मुश्किल तो अपनी प्रतिभा का उपयोग न करना है।

एक दृश्य की शूटिंग के दौरान, एक ही घटना के अनगिनत टेक लिए जाते हैं। सड़क पर खड़ा एक व्यक्ति—जो स्पष्ट रूप से एक देहाती है—इसे देखकर स्तब्ध रह जाता है और कहता है, "इसके बाद, मैं फिर कभी सिनेमा नहीं जाऊंगा।"
किसी भी ऐसी चीज़ के बारे में, जिसका छिपा हुआ पहलू हमने देख लिया हो, जिसका रहस्य हमने जान लिया हो, शायद हम भी इसी तरह प्रतिक्रिया दें। फिर भी, एक ऐसी रहस्यमयी प्रक्रिया के चलते, जिसमें चमत्कारिक सा कुछ छिपा रहता है, ऐसे स्त्री रोग विशेषज्ञ भी होते हैं जो अपनी मरीज़ों की ओर आकर्षित होते हैं, ऐसे कब्र खोदने वाले भी होते हैं जो बच्चों के पिता बन जाते हैं, ऐसे असाध्य रोगी भी होते हैं जो योजनाएँ बनाते हैं, और ऐसे संशयवादी भी होते हैं जो लिखते हैं...

टी, जो एक रब्बी का बेटा है, शिकायत करता है कि अभूतपूर्व उत्पीड़न के इस दौर में कोई ऐसी मौलिक प्रार्थना नहीं बनी जिसे समुदाय अपना सके और आराधनालयों में पढ़ सके। मैं उसे आश्वस्त करता हूँ कि इस तथ्य से दुखी या भयभीत होना उसकी गलती है: बड़ी आपदाएँ साहित्यिक या धार्मिक स्तर पर कुछ भी उत्पन्न नहीं करतीं। केवल आंशिक विपत्तियाँ ही फलदायी होती हैं, क्योंकि वे हो सकती हैं, क्योंकि वे एक आरंभिक बिंदु होती हैं, जबकि एक अति परिपूर्ण नरक लगभग स्वर्ग जितना ही बंजर होता है।

मैं बीस साल का था। हर चीज़ बोझ लग रही थी। एक दिन मैं सोफे पर गिर पड़ा और बोला, "अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता।" मेरी माँ, जो पहले से ही मेरी नींद हराम होने से परेशान थीं, ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे "आराम" के लिए प्रार्थना करवाई है। एक नहीं, बल्कि तीस हज़ार! मैं मन ही मन चिल्लाना चाहता था, चार्ल्स पंचम ने अपनी वसीयत में जो संख्या लिखी थी, उसे याद करते हुए—सचमुच, बहुत लंबे आराम के लिए।

पच्चीस साल बाद, बिल्कुल संयोग से, मेरी उससे फिर मुलाकात हो गई। वह बिल्कुल अपरिवर्तित, अक्षुण्ण और पहले से भी अधिक तरोताजा लग रहा था, मानो वह किशोरावस्था की ओर लौट गया हो।
वह कहाँ छिपा रहा है, और समय के प्रभाव से बचने के लिए, हमारी झुर्रियों और चेहरों से दूर रहने के लिए उसने क्या किया है? और अगर वह सच में जिया है, तो कैसे जिया है? असल में, एक भूत। उसने ज़रूर धोखा दिया होगा, उसने एक जीवित व्यक्ति के रूप में अपना कर्तव्य नहीं निभाया, खेल नहीं खेला। एक भूत, हाँ, और एक घुसपैठिया। मुझे उसके चेहरे पर विनाश का कोई निशान नहीं दिखता, उन निशानों में से कोई भी नहीं जो यह गवाही देते हैं कि वह एक वास्तविक प्राणी है, एक व्यक्ति है, न कि कोई प्रेत। मैं उससे क्या कहूँ? मैं असहज, शर्मिंदा, यहाँ तक कि डरा हुआ महसूस कर रहा हूँ। हम समय से बचने वाले या उसे धोखा देने वाले किसी भी व्यक्ति से बहुत परेशान होते हैं।

डी.सी., जो अपने रोमानियाई गांव में अपने बचपन की यादें लिख रहे थे, ने अपने पड़ोसी, कोमन नामक एक किसान से कहा था कि उन्हें भी इसमें शामिल किया जाएगा, और अगले दिन सुबह कोमन उनसे मिलने आए: "मैं जानता हूं कि मैं एक बेकार आदमी हूं, लेकिन फिर भी मैंने नहीं सोचा था कि मैं इतना नीचे गिर जाऊंगा कि मेरे बारे में एक किताब में बात की जाए।"
मौखिक जगत हमारे जगत से कितना श्रेष्ठ था! प्राणी (या कहें, लोग) सत्य में तभी तक जीते हैं जब तक उन्हें लिखित से घृणा रहती है। एक बार जब उन्हें यह घृणा लग जाती है, तो वे अवास्तविकता की ओर मुड़ जाते हैं, अपने पुराने अंधविश्वासों को त्यागकर एक नया अंधविश्वास अपना लेते हैं, जो उन सभी से कहीं अधिक बुरा होता है।

उठने में असमर्थ, बिस्तर से जकड़ा हुआ, मैं अपनी यादों के उतार-चढ़ाव में खोया रहता हूँ, और खुद को कार्पेथियन पहाड़ों में एक बच्चे के रूप में घूमते हुए देखता हूँ। एक दिन मेरी नज़र एक कुत्ते पर पड़ी, जिसका मालिक, शायद उससे छुटकारा पाने के लिए, उसे एक पेड़ से बाँध दिया था; वह जानवर कंकाल मात्र था, इतना बेजान कि वह हिल भी नहीं पा रहा था और मुश्किल से मेरी तरफ देख पा रहा था। फिर भी वह खड़ा था, वह कुत्ता...

एक अजनबी मेरे पास आता है और मुझे बताता है कि उसने किसी का कत्ल कर दिया है। पुलिस उसे नहीं ढूंढ रही क्योंकि किसी को उस पर शक नहीं है। सिर्फ मैं ही जानती हूँ कि वही कातिल है। मैं क्या करूँ? मुझमें न तो हिम्मत है और न ही विश्वासघात (क्योंकि उसने मुझे एक राज़ बताया है—और कितना बड़ा राज़!) कि मैं उसे पुलिस के हवाले कर दूँ। मुझे लगता है कि मैं उसकी साथी हूँ, और मैं खुद को गिरफ्तार होने और सज़ा पाने के लिए तैयार कर लेती हूँ। साथ ही, मैं खुद से कहती हूँ कि यह बहुत बेतुका होगा। शायद मुझे फिर भी जाकर उसकी शिकायत कर देनी चाहिए। और यह सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक मैं जाग नहीं जाती।

अनिश्चितता ही अंतहीनता की विशेषता है। वे अपने लिए जीवन की रूपरेखा तैयार नहीं कर सकते, और न ही अपने सपनों की, जिनमें वे अपनी झिझक, कायरता और संशय को निरंतर बनाए रखते हैं। वे दुःस्वप्न के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त हैं।

जंगली जानवरों पर बनी एक फिल्म: हर क्षेत्र में अंतहीन क्रूरता। "प्रकृति," एक विलक्षण यातना देने वाली, जो स्वयं में और अपने काम में डूबी हुई है, उचित कारण से आनंदित होती है: एक भी क्षण ऐसा नहीं जब जीवित प्राणी कांपने से या दूसरों को कांपने से चूक जाए। दया एक विचित्र विलासिता है जिसे केवल सबसे कपटी और सबसे क्रूर प्राणी ही सता सकता है, स्वयं को दंडित और यातना देने की आवश्यकता से—यद्यपि क्रूरता से।

एक गिरजाघर के दरवाजे पर लगे पोस्टर पर, जिस पर 'फ्यूग की कला' लिखा है, किसी ने बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया है: ईश्वर मर चुका है। यह उस संगीतकार के संदर्भ में है जो गवाही देता है कि ईश्वर, अपनी मृत्यु की स्थिति में, ठीक उसी समय पुनर्जीवित हो सकता है जब हम कुछ कैंटाटा, कुछ फ्यूग सुन रहे होते हैं!

हमने एक घंटे से थोड़ा अधिक समय साथ बिताया है। उसने इस समय का उपयोग अपनी बड़ाई करने में किया है, और अपने बारे में रोचक बातें कहने की कोशिश में वह सफल भी रहा है। अगर वह केवल संयमित रूप से अपनी बड़ाई करता, तो मुझे वह उबाऊ लगता और मैं कुछ ही मिनटों में चला जाता। अतिशयोक्ति करके, अपनी पूरी क्षमता से मोर की तरह व्यवहार करके, वह चतुराई के इतने करीब पहुँच गया है कि कुछ हद तक चतुराई का प्रदर्शन कर सके। सूक्ष्म दिखने की इच्छा सूक्ष्मता को नष्ट नहीं करती। एक मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति, अगर उसमें विस्मित करने की इच्छा होती, तो वह हमें धोखा देने में कामयाब हो जाता— यहाँ तक कि बुद्धि के मामले में भी बराबरी कर लेता।

X, जो कुलपतियों से भी अधिक उम्र का है, लंबी बातचीत के दौरान इधर-उधर की बातें करने के बाद मुझसे कहता है: “मेरे जीवन की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि मैंने कभी किसी से नफरत नहीं की।” हमारी नफरत उम्र के साथ कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती ही जाती है। X जैसे बूढ़े व्यक्ति की नफरत तो अकल्पनीय रूप ले लेती है: अब अपने पुराने स्नेह के प्रति असंवेदनशील होकर, वह अपनी सारी शक्ति अपने द्वेष की सेवा में लगा देता है, जो चमत्कारिक रूप से पुनर्जीवित होकर उसकी स्मृति और यहाँ तक कि उसकी बुद्धि के कमजोर पड़ने के बाद भी जीवित रहता है।
वृद्धों के साथ बार-बार समय बिताने का खतरा यह है कि जब हम उन्हें वैराग्य से इतना दूर और इसे अपनाने में इतना असमर्थ पाते हैं, तो हम उन सभी लाभों को स्वयं को सौंप देते हैं जो उनके पास होने चाहिए, जबकि वास्तव में उनके पास नहीं होते। और यह अपरिहार्य है कि थकान या अरुचि के मामलों में उन पर हमारी वास्तविक या काल्पनिक श्रेष्ठता हमें अहंकार की ओर ले जाए।

हर परिवार का अपना एक दर्शन होता है। मेरे एक चचेरे भाई, जिनकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई, ने एक बार मुझे लिखा था: "यह सब वैसा ही है जैसा हमेशा से रहा है और शायद तब तक वैसा ही रहेगा जब तक कुछ भी शेष नहीं रह जाता।"
जबकि मेरी माँ ने मुझे भेजे गए अपने आखिरी पत्र का समापन इस वसीयती वाक्य के साथ किया: "लोग चाहे जो भी करने की कोशिश करें, उन्हें देर-सवेर इसका पछतावा जरूर होगा।"
और मैं यह दावा भी नहीं कर सकता कि मैंने अपनी असफलताओं से पश्चाताप का यह दुर्गुण प्राप्त किया है। यह मुझसे पहले से मौजूद है, यह मेरे कबीले की विरासत का हिस्सा है। कैसी विरासत है, भ्रम के लिए कितनी अनुपयुक्तता!

मेरे जन्मस्थान वाले गाँव से कुछ किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर बसा एक छोटा सा गाँव था, जहाँ केवल खानाबदोश लोग रहते थे। 1910 में एक शौकिया

नृवंशविज्ञानी एक फोटोग्राफर के साथ वहाँ गया। उसने गाँव वालों को इकट्ठा कर लिया, जो बिना यह जाने कि इसका क्या मतलब है, अपनी तस्वीर खिंचवाने के लिए राज़ी हो गए। जैसे ही उन्हें स्थिर खड़े रहने को कहा गया, एक बूढ़ी औरत चीखी: “सावधान रहो, वे हमारी आत्माएँ चुरा रहे हैं!” यह सुनकर वे सब उन दोनों आगंतुकों पर टूट पड़े, जिन्हें वहाँ से भागना बहुत मुश्किल हुआ।
ये अर्ध-जंगली खानाबदोश - आखिर ये भारत ही तो थे, उनकी जन्मभूमि जो इन परिस्थितियों में उनके माध्यम से बोल रही थी?

अपने पूर्वजों के विरुद्ध निरंतर विद्रोह करते हुए, मैंने अपना पूरा जीवन कुछ और बनने की चाह में बिताया है: स्पैनिश, रूसी, नरभक्षी—कुछ भी, सिवाय उसके जो मैं था। अपने आप से भिन्न होने की चाह रखना, सैद्धांतिक रूप से हर स्थिति को अपनाना, सिवाय अपनी स्वयं की स्थिति के, एक विकृति है।

जिस दिन मैंने उन लगभग सभी संस्कृत शब्दों की सूची पढ़ी जो परम सत्ता को दर्शाते हैं, मुझे एहसास हुआ कि मैंने गलत रास्ता, गलत देश और गलत मुहावरा चुन लिया था।

एक दोस्त, न जाने कितने सालों की चुप्पी के बाद, लिखती है कि उसके पास जीने के लिए ज़्यादा समय नहीं बचा है, और वह "अज्ञात में प्रवेश करने" की तैयारी कर रही है...। यह घिसा-पिटा मुहावरा मुझे चौंका देता है। मुझे समझ नहीं आता कि मृत्यु से कोई किस चीज़ में प्रवेश कर सकता है। इस संदर्भ में कोई भी बात मुझे भ्रम लगती है। मृत्यु कोई अवस्था नहीं है, शायद कोई परिवर्तन भी नहीं। तो फिर यह क्या है? और मैं अपनी दोस्त को किस घिसे-पिटे मुहावरे से जवाब दूँगी?

मैं एक ही विषय पर, एक ही घटना पर, एक ही दिन में दस, बीस, तीस बार अपनी राय बदल सकता हूँ। और सोचिए, हर बार, एक सबसे बड़े धोखेबाज़ की तरह, मैं "सत्य" शब्द बोलने की हिम्मत करता हूँ!

अभी भी स्वस्थ और तंदुरुस्त, वह महिला अपने पति को अपने पीछे घसीटती हुई ले जा रही थी, एक लंबा, झुका हुआ आदमी, जिसकी आँखें टकटकी लगाए हुए थीं; वह उसे ऐसे घसीट रही थी मानो वह किसी दूसरे युग का जीवित प्राणी हो, एक क्रोधित और याचना करने वाला डिप्लोडोकस।
एक घंटे बाद, दूसरी मुलाकात: साफ-सुथरे कपड़े पहने एक बूढ़ी औरत, बेहद झुकी हुई, मेरी ओर "बढ़ी"; उसका शरीर एक पूर्ण अर्धवृत्त बना रहा था, और वह अपनी निगाहें ज़मीन पर टिकाए हुए थी, शायद अपने अकल्पनीय धीमे कदमों को गिन रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह चलना सीख रही हो, मानो उसे डर हो कि चलने के लिए अपने पैर कहाँ और कैसे रखने हैं।
… हर चीज अच्छी है जो मुझे बुद्ध के करीब लाती है।

अपने सफेद बालों के बावजूद, वह अब भी ग्राहकों की तलाश में फुटपाथ के अपने हिस्से पर इधर-उधर घूमती रहती थी। मैं अक्सर उससे सुबह तीन बजे मिलता था, और जब तक मैं उससे कुछ किस्से या कारनामे न सुन लेता, तब तक मुझे घर जाने का मन नहीं करता था। मैं किस्से और कारनामे दोनों भूल चुका हूँ, लेकिन वह तत्परता नहीं भूल पाया हूँ, जब एक रात मैं पेरिस के सभी सोए हुए 'कीड़ों' पर अपना गुस्सा निकालने लगा था, तो उसने अपनी तर्जनी उंगली आसमान की ओर इशारा करते हुए तुरंत कहा, "ऊपर बैठे उन कीड़ों का क्या?"

“सब कुछ निराधार, निराधार है,” और मैं इसे जब भी स्वयं से दोहराता हूँ, तो मुझे एक प्रकार की खुशी महसूस होती है। दुर्भाग्य से, ऐसे कई क्षण आते हैं जब मैं इसे स्वयं से दोहराने में असफल रहता हूँ।

5

मैं उनकी रचनाएँ इसलिए पढ़ता हूँ क्योंकि उनकी हर रचना मुझे एक डूबे हुए जहाज़ के मलबे जैसी अनुभूति देती है। पहले तो आप उनका अनुसरण करते हैं, फिर आप गोल-गोल घूमने लगते हैं, फिर आप एक शांत, हानिरहित भंवर में फंस जाते हैं, और आप खुद से कहते हैं कि आप डूब रहे हैं, और फिर आप डूब ही जाते हैं। लेकिन आप सचमुच डूबते नहीं हैं—यह तो बहुत आसान होता! आप सतह पर वापस आ जाते हैं, फिर से उनका अनुसरण करते हैं, यह देखकर आश्चर्यचकित होते हैं कि वे कुछ कहना चाहते हैं और समझ रहे हैं कि वे क्या कहना चाहते हैं, और फिर आप गोल-गोल घूमने लगते हैं, और एक बार फिर डूब जाते हैं…। यह सब गहन होने का दावा करता है, और लगता भी है। लेकिन जब आप होश में आते हैं तो आपको एहसास होता है कि यह केवल गूढ़ और अस्पष्ट है, और वास्तविक गहनता और कृत्रिम गहनता के बीच का अंतर उतना ही बड़ा है जितना किसी रहस्योद्घाटन और सनक के बीच का।

लेखन में स्वयं को समर्पित करने वाला कोई भी व्यक्ति, अनजाने में ही सही, यह मानता है कि उसका काम वर्षों, युगों और समय के साथ अमर रहेगा।... यदि उसे लेखन करते समय यह आभास हो जाए कि उसका काम क्षणभंगुर है, तो वह वहीं रुक जाएगा, वह कभी पूरा नहीं कर पाएगा। सक्रियता और अंधविश्वास परस्पर संबंधित शब्द हैं।

“हंसी थम गई, और हंसी के बाद मुस्कान रह गई।” एलेक्जेंडर ब्लोक के जीवनीकार की यह भोली-भाली टिप्पणी किसी भी पतन के कार्यक्रम को पूरी तरह से परिभाषित करती है।

जब कोई व्यक्ति न तो आस्तिक हो और न ही नास्तिक, तो ईश्वर के बारे में बात करना कोई आसान बात नहीं है: और यह निस्संदेह वह नाटक है जो हम सभी साझा करते हैं, जिसमें धर्मशास्त्री भी शामिल हैं - अब न तो आस्तिक और न ही नास्तिक होने में सक्षम हैं।

एक लेखक के लिए, वैराग्य और मुक्ति की ओर प्रगति एक अभूतपूर्व आपदा है। उसे, किसी और से ज़्यादा, अपनी कमियों की आवश्यकता होती है: यदि वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है, तो वह खो जाता है। इसलिए उसे सावधान रहना चाहिए कि वह सुधार न करे, क्योंकि यदि वह सफल हो जाता है, तो उसे इसका घोर पछतावा होगा।

हमें अपने बारे में जो भी अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, उससे सावधान रहना चाहिए। हमारा आत्मज्ञान हमारे आंतरिक दैमन को परेशान और पंगु बना देता है — यहीं पर हमें वह कारण खोजना चाहिए जिसके कारण सुकरात ने कुछ नहीं लिखा।

खराब कवियों की दुर्दशा का कारण यह है कि वे केवल कवियों को ही पढ़ते हैं (ठीक वैसे ही जैसे खराब दार्शनिक केवल दार्शनिकों को पढ़ते हैं), जबकि वनस्पति विज्ञान या भूविज्ञान की पुस्तक से उन्हें कहीं अधिक लाभ हो सकता था। हम तभी समृद्ध होते हैं जब हम अपने क्षेत्र से भिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं। यह बात केवल उन क्षेत्रों में ही सत्य है जहाँ अहंकार प्रबल होता है।

टर्टुलियन हमें बताते हैं कि मिर्गी से ठीक होने के लिए, मिर्गी के रोगी "अखाड़े में मारे गए अपराधियों का खून लालच से चूसते थे।" अगर मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनूँ, तो चाहे कोई भी बीमारी हो, मैं इसी तरह की दवा अपनाऊँगा।

हमें किसी ऐसे व्यक्ति से नाराज़ होने का क्या अधिकार है जो हमें राक्षस कहता है? राक्षस तो परिभाषा के अनुसार ही अद्वितीय होता है, और एकांत, यहाँ तक कि बदनामी का एकांत भी, कुछ सकारात्मकता का संकेत देता है, एक विचित्र चुनाव, लेकिन निस्संदेह एक चुनाव।

दो दुश्मन—एक ही व्यक्ति के दो अलग-अलग रूप।

“किसी व्यक्ति का मूल्यांकन तब तक न करें जब तक आप स्वयं को उसकी जगह पर न रख लें।” यह पुरानी कहावत सभी प्रकार के मूल्यांकन को असंभव बना देती है, क्योंकि हम किसी का मूल्यांकन तभी करते हैं जब वास्तव में हम स्वयं को उसकी जगह पर नहीं रख पाते।

यदि आप अपनी स्वतंत्रता से प्रेम करते हैं, तो इसकी रक्षा के लिए आपको हर प्रकार के दुराचार का सहारा लेना होगा; आपको स्वयं बदनामी का जोखिम उठाना होगा।

हममें से प्रत्येक के भीतर मौजूद आलोचक और उससे भी अधिक घृणित दार्शनिक से ज्यादा घृणित कुछ भी नहीं है: यदि मैं एक कवि होता, तो मैं डायलन थॉमस की तरह व्यवहार करता, जो जब लोग उनकी कविताओं पर उनकी उपस्थिति में चर्चा करते थे, तो वह ऐंठन के दौरे में फर्श पर गिर जाते थे।

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

हमें अंत तक कष्ट सहना होगा, उस क्षण तक जब हम कष्ट में विश्वास करना छोड़ दें।

“इच्छा और घृणा से भरे मनुष्य से सत्य छिपा रहता है” (बुद्ध)…अर्थात्, प्रत्येक जीवित मनुष्य से।

एकांत से मोहित होकर भी, वह संसार में बना रहता है: बिना स्तंभ के एक स्तंभकार।

“तुम्हारा मुझ पर भरोसा करना गलत था।” ऐसे शब्द कौन बोल सकता है? ईश्वर और विफलता।

हम जो कुछ भी हासिल करते हैं, जो कुछ भी हमसे निकलता है, वह अपने मूल को भूलने की आकांक्षा रखता है और केवल हमारा विरोध करके ही सफल होता है।
इसीलिए हमारी सभी सफलताओं पर नकारात्मक चिह्न अंकित होता है।

किसी भी विषय पर कुछ कहने को नहीं है। इसलिए पुस्तकों की संख्या की कोई सीमा नहीं हो सकती।

असफलता, चाहे बार-बार ही क्यों न हो, हमेशा ताज़ा लगती है; जबकि सफलता, चाहे कितनी भी बार मिले, अपना सारा आकर्षण और रुचि खो देती है। यह दुर्भाग्य

नहीं बल्कि सुख है—हाँ, अभिमानपूर्ण सुख—जो द्वेष और व्यंग्य को जन्म देता है।

“शत्रु उतना ही उपयोगी है जितना बुद्ध।” बिलकुल सही, क्योंकि हमारा शत्रु हम पर नज़र रखता है, हमें अपनी आत्मसंतुष्टि खोने से बचाता है। हमारी छोटी से छोटी कमजोरी को उजागर करके, वह हमें सीधे मोक्ष की ओर ले जाता है, और हमें अपने आदर्श के अयोग्य होने से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। इसलिए उसके प्रति हमारी कृतज्ञता असीम होनी चाहिए।

हम स्वयं को और अपने अस्तित्व को बेहतर ढंग से तब समझ पाते हैं जब हम नकारने वाली, विघटनकारी पुस्तकों—उनकी हानिकारक शक्ति—के विरुद्ध प्रतिक्रिया करते हैं। वास्तव में, पुस्तकें हमें सशक्त बनाती हैं, क्योंकि वे उसी ऊर्जा को उत्तेजित करती हैं जो उन्हें नकारती है। उनमें जितना अधिक विष होता है, उनका प्रभाव उतना ही लाभकारी होता है, बशर्ते हम उन्हें विपरीत दिशा में पढ़ें, जैसा कि हमें किसी भी पुस्तक को पढ़ना चाहिए, धर्मोपदेश से शुरू करके।

किसी लेखक पर हम सबसे बड़ा उपकार यही कर सकते हैं कि उसे एक निश्चित अवधि के लिए काम करने से रोक दें। अल्पकालिक प्रतिबंध आवश्यक हैं—ऐसे प्रतिबंध जो सभी बौद्धिक गतिविधियों को रोक दें। अभिव्यक्ति की निर्बाध स्वतंत्रता प्रतिभा को घातक खतरे में डालती है, उसे उसकी सीमाओं से परे धकेलती है और उसे संवेदनाओं और अनुभवों का संचय करने से रोकती है। असीमित स्वतंत्रता मस्तिष्क के विरुद्ध अपराध है।

आत्म-दया उतनी निरर्थक नहीं है जितना हम सोचते हैं। जैसे ही हमें इसका हल्का सा भी आभास होता है, हम एक विचारक का दृष्टिकोण अपना लेते हैं, और जब हम इस बारे में सोचते हैं, तो हम विचार करने लगते हैं!

स्टोइक दर्शन का यह सिद्धांत कि हमें उन चीजों को बिना शिकायत किए स्वीकार कर लेना चाहिए जो हमारे वश में नहीं हैं, केवल बाहरी दुर्भाग्य को ही ध्यान में रखता है, जो हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। लेकिन जो दुर्भाग्य हमारे अपने कारण से आते हैं, उनसे हम कैसे निपटें? यदि हम ही अपनी परेशानियों के स्रोत हैं, तो हमें किससे निपटना चाहिए? स्वयं से? सौभाग्य से, हम यह भूलने में कामयाब हो जाते हैं कि हम ही दोषी हैं, और इसके अलावा, जीवन तभी सहनीय है जब हम प्रतिदिन इस झूठ, इस विस्मृति के नाटक को दोहराते रहें।

मैंने जीवन भर इस भावना के साथ जीवन व्यतीत किया है कि मुझे मेरे वास्तविक स्थान से दूर रखा गया है। यदि "आध्यात्मिक निर्वासन" अभिव्यक्ति का कोई अर्थ न होता, तो मेरा अस्तित्व ही इसे अर्थ प्रदान कर देता।

प्रतिभा जितनी अधिक होती है, आध्यात्मिक स्तर पर उसकी प्रगति उतनी ही कम होती है। प्रतिभा आंतरिक जीवन में बाधा है।

"महानता" शब्द को आधिकारिकता से बचाने के लिए, हमें इसका प्रयोग केवल अनिद्रा या विधर्म के संदर्भ में ही करना चाहिए।

शास्त्रीय भारत में, ऋषि और संत एक ही व्यक्ति में समाहित थे। ऐसी सफलता की कल्पना करने के लिए, हमें त्याग और परमानंद के बीच, एक ठंडे स्वभाव वाले

संयमी व्यक्ति और एक अव्यवस्थित रहस्यवादी के बीच एक सम्मिश्रण की कल्पना करनी होगी, यदि हम ऐसा कर सकते हैं।

अस्तित्व ही संदिग्ध है। तो फिर "जीवन" के बारे में क्या कहा जाए, जो कि उसका विचलन और कलंक है?

जब कोई हमारे बारे में कोई नकारात्मक राय रखता है, तो दुखी होने के बजाय, हमें उन सभी "बुराइयों" के बारे में सोचना चाहिए जो हमने दूसरों के बारे में कही हैं, और यह समझना चाहिए कि हमारे बारे में भी ऐसा ही कहा जाना न्यायसंगत है। विडंबना यह है कि चुगली करने वाले से ज़्यादा कमज़ोर, संवेदनशील और अपनी कमियों को स्वीकार करने में सबसे कम इच्छुक कोई नहीं होता। उसे बस इतना बता दीजिए कि किसी ने उसके बारे में ज़रा सी भी आपत्ति जताई है, और वह अपना आपा खो देगा, अपना आपा खो देगा और अपनी ही कड़वाहट में डूब जाएगा।

बाहर से देखने पर हर संप्रदाय, कुल और दल में सद्भाव दिखाई देता है; लेकिन अंदर से देखने पर कलह का भाव झलकता है। मठ में होने वाले संघर्ष उतने ही आम और उतने ही घातक होते हैं जितने किसी भी समाज में। यहां तक कि जब लोग नरक से बाहर निकलते हैं, तो वे उसे कहीं और फिर से स्थापित करने के लिए ही ऐसा करते हैं।

न्यूनतम रूपांतरण को ही प्रगति माना जाता है। सौभाग्यवश, इसके अपवाद भी मौजूद हैं।
मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक अठारहवीं सदी का वह यहूदी संप्रदाय है जिसमें पुरुष खुद को नीचा दिखाने के लिए ईसाई धर्म अपना लेते थे; और दूसरी कहानी उस दक्षिण अमेरिकी भारतीय की है जिसने धर्म परिवर्तन के बाद विलाप

किया कि अब उसे अपने बच्चों द्वारा खाए जाने के बजाय कीड़ों का शिकार बनना पड़ेगा, एक ऐसा सम्मान जो उसे मिलता अगर उसने अपने कबीले की मान्यताओं का त्याग न किया होता।

यह स्वाभाविक ही है कि मनुष्य को अब धर्म में रुचि न हो, बल्कि विभिन्न धर्मों में रुचि हो, क्योंकि केवल उन्हीं के माध्यम से वह अपने आध्यात्मिक पतन के अनेक रूपों को समझ पाएगा।

जब हम अपने करियर के विभिन्न चरणों का पुनरावलोकन करते हैं, तो यह महसूस करना शर्मनाक होता है कि हमें वे विपत्तियाँ नहीं मिलीं जिनके हम हकदार थे, वे विपत्तियाँ जिनकी हमें अपेक्षा करने का अधिकार था।

कुछ पुरुषों में, निकट भविष्य में होने वाले अंत की आशंका ऊर्जा का संचार करती है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी, और उन्हें गतिविधियों के उन्माद में डुबो देती है। अपने प्रयासों और कार्यों से स्वयं को अमर बनाने के लिए वे इतने भोले होते हैं कि वे इसे पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं: एक पल भी गंवाना नहीं चाहते।
यही दृष्टिकोण दूसरों को भी निरर्थक सोच में डूबने के लिए प्रेरित करता है, एक स्थिर स्पष्टता में, और निराशा के निर्विवाद सत्यों में।

“जो भी मेरे ग्रंथों के भावी संस्करणों में जानबूझकर कुछ भी बदलेगा—चाहे एक वाक्य हो, या सिर्फ एक शब्द, एक अक्षर, एक विराम चिह्न!” क्या शोपेनहावर के भीतर का दार्शनिक या लेखक इस तरह बोलता है? दोनों एक साथ, और यह संयोजन (जब हम किसी दार्शनिक रचना की भयानक शैली के बारे में सोचते हैं) अत्यंत दुर्लभ है। ऐसा श्राप हेगेल ने नहीं दिया होगा। प्लेटो को छोड़कर किसी अन्य प्रमुख दार्शनिक ने भी नहीं।

एक ऐसी निरंतर और लगातार चलने वाली विडंबना से ज्यादा परेशान करने वाली कोई बात नहीं है जो आपको सांस लेने तक का समय न दे और सोचने का तो बिल्कुल भी नहीं; जो कभी-कभार होने के बजाय विशाल, स्वतःस्फूर्त और अपने मूल रूप से नाजुक स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होती है। और जर्मनी में इसका इस्तेमाल इसी तरह होता है, एक ऐसा राष्ट्र जिसने इस पर सबसे ज्यादा चिंतन किया है, लेकिन इसे सबसे कम कुशलता से इस्तेमाल कर पाता है।

चिंता किसी कारण से उत्पन्न नहीं होती: यह स्वयं को सही ठहराने का प्रयास करती है, और ऐसा करने के लिए यह किसी भी चीज़, यहाँ तक कि सबसे तुच्छ बहाने का भी सहारा लेती है, जिनसे एक बार गढ़ने के बाद यह चिपकी रहती है। एक ऐसी वास्तविकता जो इसकी विशिष्ट अभिव्यक्तियों, इसकी विविधताओं से पहले मौजूद होती है, चिंता स्वयं को उत्पन्न करती है, स्वयं को जन्म देती है, यह "अनंत सृजन" है, और इस प्रकार यह मन की कार्यप्रणाली की तुलना में दैवीय कार्यप्रणाली का अधिक संकेत देती है।

स्वचालित उदासी: एक शोकगीत गाने वाला रोबोट।

किसी कब्र पर, ये शब्द मन में आते हैं: खेल, छल, मज़ाक, सपना। यह सोचना असंभव है कि अस्तित्व एक गंभीर घटना है। शुरुआत से ही, मूल रूप से, दिखावा होना निश्चित है। हमारे कब्रिस्तानों के द्वार पर लिखा होना चाहिए: "कुछ भी दुखद नहीं है। सब कुछ अवास्तविक है।"

मैं उसके चेहरे पर व्याप्त भय, खौफ, असहनीय पीड़ा और आक्रामकता के भावों को कभी नहीं भूल पाऊंगा। नहीं, वह खुश नहीं था। मैंने अपने ताबूत में किसी को इतना असहज कभी नहीं देखा।

न आगे देखो, न पीछे, अपने भीतर देखो, न डर के साथ, न पछतावे के साथ। जब तक कोई अतीत या भविष्य का गुलाम बना रहता है, तब तक वह अपने भीतर नहीं उतर सकता।

किसी व्यक्ति को उसकी बांझपन के लिए कोसना अनुचित है, जबकि यही उसका मूल सिद्धांत है, उसकी उपलब्धि का तरीका है, उसका सपना है...

जिन रातों में हम सोए होते हैं, वे मानो कभी थीं ही नहीं। हमारी यादों में केवल वही रातें रह जाती हैं जब हम अपनी आँखें बंद नहीं कर पाते थे: रात का मतलब है नींदहीन रात।

इन समस्याओं को हल करने से बचने के लिए, मैंने अपनी सभी व्यावहारिक कठिनाइयों को सैद्धांतिक कठिनाइयों में बदल दिया है। अब जब मेरे सामने अनसुलझी समस्या है, तो मुझे आखिरकार राहत की सांस मिली है...

एक छात्र ने मुझसे पूछा कि ज़राथुस्त्रा के लेखक के बारे में मेरी क्या राय है, तो मैंने जवाब दिया कि मैंने उन्हें पढ़ना बहुत पहले ही बंद कर दिया था। क्यों? "मुझे वे बहुत भोले लगते हैं..."
मैं उसके उत्साह और जोश को नापसंद करता हूँ। उसने कई मूर्तियों को ध्वस्त किया और उनकी जगह दूसरी मूर्तियाँ स्थापित कीं: एक झूठा मूर्तिभंजक, किशोरावस्था जैसी शक्ल और एक खास तरह की मासूमियत, एक खास तरह का भोलापन जो उसके एकाकी जीवन में निहित था। उसने लोगों को केवल दूर से ही देखा। अगर वह

करीब आता, तो वह न तो उस महामानव की कल्पना कर पाता और न ही उसका प्रचार कर पाता, वह बेतुका, हास्यास्पद, यहाँ तक कि विकृत भ्रम, एक ऐसा सनकीपन जो केवल उसी दिमाग में आ सकता है जिसके पास उम्र बढ़ने का समय न हो, जिसने अलगाव की लंबी, शांत घृणा को न जाना हो।
मार्कस ऑरेलियस मेरे कहीं अधिक करीब हैं। उन्माद की गीतात्मकता और स्वीकृति के गद्य के बीच एक पल का भी संकोच नहीं है: मुझे गर्जनाशील पैगंबर की तुलना में थके हुए सम्राट में अधिक आराम, यहाँ तक कि अधिक आशा भी मिलती है।

6

हिंदू धर्म की वह धारणा कितनी आकर्षक है जिसमें हम अपनी मुक्ति किसी और को, किसी चुने हुए "संत" को सौंप देते हैं, और उसे हमारी जगह प्रार्थना करने, हमें बचाने के लिए कुछ भी करने की अनुमति देते हैं। अपनी आत्मा को ईश्वर को बेच देना...

“क्या प्रतिभा को भावनाओं की आवश्यकता होती है? हाँ, कई दबी हुई भावनाओं की” (जौबर्ट)। ऐसा कोई नैतिकवादी नहीं है जिसे हम फ्रायड का अग्रदूत न बना सकें।

यह जानकर हमेशा आश्चर्य होता है कि महान रहस्यवादियों ने इतना कुछ रचा, इतनी सारी रचनाएँ छोड़ीं। निःसंदेह उनका उद्देश्य केवल ईश्वर की महिमा करना था। यह बात आंशिक रूप से सत्य है, लेकिन केवल आंशिक रूप से।
हम किसी रचना का निर्माण तब तक नहीं करते जब तक हम उससे स्वयं को जोड़ न लें, जब तक हम स्वयं को उसके अधीन न कर लें। लेखन सभी क्रियाओं में सबसे कम तपस्वी क्रिया है।

जब मैं देर रात तक जागता रहता हूं, तो मेरी बुरी आत्माएं मुझ पर हावी हो जाती हैं, जैसे फिलिप्पी की लड़ाई से पहले ब्रूटस पर हावी हो गई थीं।

“क्या मैं ऐसा दिखता हूँ कि इस धरती पर मेरा कोई काम है?” — यही जवाब मैं उन लोगों को देना चाहूँगा जो मेरी गतिविधियों के बारे में पूछताछ करते रहते हैं।

यह कहा जाता रहा है कि रूपक "स्पष्ट रूप से चित्रित किया जा सकना चाहिए।" साहित्य में जो कुछ भी मौलिक और कम से कम एक सदी तक टिकाऊ रहता है, वह इस कथन का खंडन करता है। क्योंकि यदि किसी चीज़ ने अपनी उपयोगिता खो दी है, तो वह "सुसंगत" रूपक है, एक ऐसा रूपक जिसकी स्पष्ट रूपरेखा हो। कविता ने ऐसे ही रूपकों के विरुद्ध निरंतर विद्रोह किया है, यहाँ तक कि एक मृत कविता सुसंगति से ग्रस्त कविता बन जाती है।

मौसम की रिपोर्ट सुनते हुए, मुझे "छिटपुट बारिश" शब्दों पर तीव्र प्रतिक्रिया महसूस होती है। यह निश्चित रूप से साबित करता है कि कविता हमारे भीतर होती है, अभिव्यक्ति में नहीं, हालांकि "छिटपुट" एक ऐसा विशेषण है जो एक विशेष प्रकार की अनुभूति पैदा करने में सक्षम है।

जब मैं कोई संदेह उत्पन्न करता हूँ, या यूँ कहूँ कि जब मुझे संदेह उत्पन्न करने की आवश्यकता महसूस होती है, तो मुझे एक विचित्र, बेचैन कर देने वाला सुख अनुभव होता है। मेरे लिए संदेह के बिना जीने की तुलना में विश्वास के बिना जीना कहीं अधिक आसान होगा। विनाशकारी संदेह, पोषण देने वाला संदेह!

इसमें कोई बनावटी सनसनी नहीं है।

अपने भीतर लीन हो जाओ, वहाँ एक ऐसी खामोशी का अनुभव करो जो अस्तित्व जितनी ही पुरानी है, शायद उससे भी पुरानी...

यदि मैं मनुष्य से घृणा करता हूँ, तो मैं उसी बात को दोहरा नहीं सकता: मैं मानव अस्तित्व से घृणा करता हूँ, क्योंकि सब कुछ के बावजूद उस शब्द 'अस्तित्व' में कुछ और है, कुछ रहस्यमय और आकर्षक है जो मनुष्य की अवधारणा से परे गुणों का सुझाव देता है।

धम्मपद में यह सुझाव दिया गया है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए हमें अच्छे और बुरे के दोहरे बंधन से मुक्त होना होगा। यह बात कि अच्छाई स्वयं हमारे बंधनों में से एक है, हम आध्यात्मिक रूप से इतने पिछड़े हुए हैं कि इसे स्वीकार नहीं कर पाते। और इसलिए हमें मोक्ष प्राप्त नहीं होगा।

सब कुछ दर्द पर निर्भर करता है; बाकी सब गौण है, यहाँ तक कि नगण्य भी, क्योंकि हम केवल उसी चीज़ को याद रखते हैं जिससे दर्द होता है। दर्द भरी संवेदनाएँ ही एकमात्र वास्तविक संवेदनाएँ हैं, इसलिए अन्य संवेदनाओं का अनुभव करना लगभग व्यर्थ है।

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

हमें भावुक कर देने वाले पत्र लिखने वालों से ईर्ष्या न करना असंभव है।

भारत के एक सुदूर प्रांत में, हर बात सपनों के माध्यम से समझाई जाती थी, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सपनों का उपयोग बीमारियों के इलाज के लिए भी किया जाता था। व्यापार और जीवन-मृत्यु के निर्णय भी सपनों के आधार पर ही होते थे। अंग्रेजों के आने तक यही स्थिति थी। एक स्थानीय निवासी ने कहा, "तब से हम सपने नहीं देखते।"
जिसे हम "सभ्यता" कहने पर सहमत हुए हैं, उसमें निस्संदेह एक शैतानी सिद्धांत विद्यमान है, जिसके बारे में मनुष्य को बहुत देर से पता चला है, जब इसका समाधान करना अब संभव नहीं था।

महत्वाकांक्षा के सुधार के बिना स्पष्टता ठहराव की ओर ले जाती है। यह आवश्यक है कि एक दूसरे का समर्थन करे, एक दूसरे से बिना जीते संघर्ष करे, ताकि किसी कार्य, किसी जीवन का अस्तित्व संभव हो सके।

हम उन लोगों को क्षमा नहीं कर सकते जिनकी हमने दिल खोलकर प्रशंसा की है, हम उनसे नाता तोड़ने के लिए बेचैन हैं, उस सबसे नाजुक बंधन को तोड़ने के लिए बेचैन हैं: प्रशंसा का बंधन..., यह उद्दंडता से नहीं, बल्कि अपनी राह खोजने, स्वतंत्र होने, और स्वयं को पहचानने की आकांक्षा से प्रेरित है। और यह आकांक्षा हमें केवल अन्यायपूर्ण कृत्य से ही प्राप्त होती है।

जिम्मेदारी की समस्या का अर्थ तभी होगा जब हमारे जन्म से पहले हमसे परामर्श किया गया होता और हमने ठीक वही होने की सहमति दी होती जो हम हैं।

मेरे जीवन की ऊर्जा और शक्ति मुझे लगातार आश्चर्यचकित करती रहती है। इतनी दुर्बलता में भी इतना जोश! इसी विरोधाभास के कारण मैं अपने अंतिम क्षणों को चुनने में असमर्थ हूँ।

हमारे कार्यों के लिए, हमारी जीवंतता के लिए ही, स्पष्टता का दावा उतना ही विनाशकारी है जितना कि स्वयं स्पष्टता।

बच्चे अपने माता-पिता के खिलाफ हो जाते हैं, और उन्हें होना ही पड़ता है, और माता-पिता इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि वे एक ऐसे नियम के अधीन हैं जो सभी जीवित प्राणियों के बीच संबंधों को निर्धारित करता है: अर्थात्, प्रत्येक प्राणी अपने शत्रु को स्वयं जन्म देता है।

हमें चीजों से इतना चिपके रहना सिखाया गया है कि जब हम उनसे मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें समझ नहीं आता कि कैसे मुक्त हों। और अगर मृत्यु हमारी सहायता के लिए न आए, तो जीने की हमारी हठधर्मिता हमें बुढ़ापे से परे, क्षय से परे, जीवन जीने का कोई न कोई तरीका ढूंढने पर मजबूर कर देगी।

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि जन्म एक विपत्तिपूर्ण या कम से कम एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है, तो सब कुछ आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट हो जाता है; लेकिन यदि हम इसके विपरीत सोचते हैं, तो हमें अस्पष्टता को स्वीकार करना होगा, या फिर दूसरों की तरह धोखा देना होगा।

हमारे युग की दूसरी शताब्दी के एक ग्नोस्टिक ग्रंथ में हम पढ़ते हैं: “एक उदास व्यक्ति की प्रार्थना में कभी भी ईश्वर तक पहुँचने की शक्ति नहीं होती।” … चूंकि मनुष्य केवल निराशा में ही प्रार्थना करता है, इसलिए हम यह

निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कोई भी प्रार्थना कभी भी अपने गंतव्य तक नहीं पहुँची है।

वह सबसे श्रेष्ठ था, और इसमें उसका कोई हाथ नहीं था: वह तो बस इच्छा करना ही भूल गया था...

प्राचीन चीन में, क्रोध या शोक से ग्रस्त महिलाएं सड़कों पर उनके लिए विशेष रूप से बनाए गए चबूतरों पर चढ़ जाती थीं और वहां अपने क्रोध या विलाप को खुलकर व्यक्त करती थीं। ऐसे पश्चात्ताप कक्षों को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए और विश्व भर में अपनाया जाना चाहिए, कम से कम चर्च के अप्रचलित कक्षों या विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के अप्रभावी कक्षों के स्थान पर।

इस दार्शनिक में आंतरिक स्वरूप का अभाव है। वह इतना बनावटी है कि जीवित या वास्तविक भी नहीं लगता—एक भयावह कठपुतली। यह जानकर कितना सुकून मिलता है कि मुझे उसकी किताबें फिर कभी नहीं खोलनी पड़ेंगी!

कोई भी यह नहीं कहता कि वह स्वस्थ है और उसे कोई परेशानी नहीं है, जबकि इस दोहरे आशीर्वाद को जानने वाले सभी लोगों को ऐसा ही करना चाहिए। अपनी खुशी का ऐलान न कर पाने की अक्षमता से बढ़कर हमें और कुछ भी दोषी नहीं ठहराता।

निराशा से प्रेम के कारण हमेशा हर चीज में असफल होना!

अपनी एकांतता की रक्षा करने का एकमात्र तरीका है कि आप अपने प्रियजनों से शुरू करके सभी को नाराज कर दें।

एक किताब एक तरह से स्थगित आत्महत्या है।

चाहे जो भी कहा जाए, मृत्यु प्रकृति का वह सर्वोत्तम उपाय है जिससे हर किसी को प्रसन्न किया जा सके। हममें से प्रत्येक के साथ, सब कुछ लुप्त हो जाता है, सब कुछ हमेशा के लिए रुक जाता है। कितना बड़ा लाभ, कितना बड़ा दुरुपयोग! बिना किसी प्रयास के, हम ब्रह्मांड के स्वामी बन जाते हैं, हम उसे अपने ही अंत में खींच लेते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मरना अनैतिक है।

7

यदि आपके कष्ट आपको ऊर्जावान उल्लास की स्थिति में लाने के बजाय आपको विस्तारित करने और निराश और कड़वा बनाने के बजाय आपको निराश और कड़वा कर देते हैं, तो आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आपके पास कोई आध्यात्मिक बुलावा नहीं है।

उम्मीद में जीना, भविष्य पर या भविष्य की किसी प्रतिरूप पर भरोसा करना: हम इसके इतने आदी हो चुके हैं कि हमने अमरता का विचार केवल अनंत काल तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता से ही उत्पन्न किया है।

हर दोस्ती एक सूक्ष्म नाटक है, सूक्ष्म घावों की एक श्रृंखला है।

लुकास फोर्टनैगल द्वारा रचित "लूथर डेड"। एक साधारण, आक्रामक, भयावह मुखौटा, मानो किसी महान सूअर का हो... जो उस व्यक्ति की विशेषताओं को पूरी तरह से दर्शाता है जिसकी हमने इस कथन के लिए जितनी प्रशंसा की है, उतनी कम है: "सपने झूठे होते हैं; अगर तुम अपने बिस्तर में शौच करते हो, तो वह सच है।"

आप जितना अधिक जीते हैं, उतना ही कम उपयोगी वह जीवन प्रतीत होता है।

बीस साल की उम्र में, वो रातें जब मैं घंटों तक खिड़की के शीशे पर माथा टिकाए अंधेरे में घूरता रहता था...

किसी भी निरंकुश शासक के पास उतनी शक्ति नहीं होती जितनी उस बेचारे व्यक्ति के पास होती है जो आत्महत्या करने की योजना बना रहा हो।

अपने पीछे कोई निशान न छोड़ने की शिक्षा प्राप्त करना, पल-पल खुद से किया जाने वाला युद्ध है, जिसका एकमात्र उद्देश्य यह साबित करना है कि यदि आप चाहें तो एक ऋषि बन सकते हैं...

§

§

§

§

§

मासूमियत ही सबसे परिपूर्ण अवस्था है, शायद एकमात्र परिपूर्ण अवस्था, इसलिए यह समझ से परे है कि जो व्यक्ति इस अवस्था का आनंद ले रहा हो, वह इसे त्यागना चाहे। फिर भी, इतिहास, अपने आरंभ से लेकर हमारे समय तक, केवल यही है और कुछ नहीं।

मैं पर्दे खींच लेता हूँ और प्रतीक्षा करता हूँ। वास्तव में, मैं किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहा हूँ, मैं बस स्वयं को अनुपस्थित कर रहा हूँ। कुछ मिनटों के लिए ही सही, मन को मंद और अवरुद्ध करने वाली अशुद्धियों से मुक्त होकर, मैं चेतना की एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाता हूँ जहाँ अहंकार का अभाव होता है, और मुझे ऐसा सुकून मिलता है मानो मैं ब्रह्मांड से बाहर विश्राम कर रहा हूँ।

मध्ययुगीन काल के एक भूत-प्रेत भगाने के अनुष्ठान में, शरीर के सभी अंगों, यहाँ तक कि सबसे छोटे अंगों का भी उल्लेख किया जाता है, जिनसे भूत को निकलने का आदेश दिया जाता है: एक प्रकार का सनकी शरीर रचना विज्ञान का ग्रंथ, जो अपनी अतिशय सटीकता और अप्रत्याशित विवरणों की भरमार के कारण आकर्षक है। एक सावधानीपूर्वक मंत्रोच्चार। नाखून छोड़ दो! कट्टरपंथी, लेकिन काव्यात्मक प्रभाव से रहित नहीं। क्योंकि वास्तविक कविता का "कविता" से कोई लेना-देना नहीं है।

हमारे सभी सपनों में, चाहे वे बाढ़ से संबंधित ही क्यों न हों, हमेशा, भले ही क्षण भर के लिए ही सही, कोई न कोई छोटी सी घटना अवश्य होती है जिसे हमने कल देखा था। यह नियमितता, जिसकी मैंने वर्षों से पुष्टि की है, एकमात्र स्थिर तत्व है, एकमात्र नियम या नियम का आभास है जिसे मैं रात की अविश्वसनीय अराजकता में समझ पाया हूँ।

संवाद की विलक्षण शक्ति। इससे यह समझ में आता है कि ध्यान और कर्म दोनों के लिए मौन क्यों आवश्यक है।

यह निश्चितता कि मैं महज एक संयोग हूं, हर परिस्थिति में मेरे साथ रही है, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, और यदि इसने मुझे खुद को आवश्यक मानने के प्रलोभन से बचाया है, तो दूसरी ओर इसने मुझे भ्रमों के टूटने से उत्पन्न होने वाले एक निश्चित घमंड से पूरी तरह से मुक्त नहीं किया है।

स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति से मिलना दुर्लभ है, और जब ऐसा कोई मिलता है, तो आप महसूस करते हैं कि ऐसे विचारों का सर्वश्रेष्ठ रूप उनके कार्यों में प्रकट नहीं होता (लिखते समय हम रहस्यमय ढंग से बंधनों में जकड़े होते हैं), बल्कि उन गोपनीय क्षणों में प्रकट होता है जहाँ, दृढ़ विश्वास और दिखावे से मुक्त होकर, कठोरता या प्रतिष्ठा की परवाह किए बिना, वह अपनी कमजोरियों को प्रदर्शित करता है। और जहाँ वह स्वयं के प्रति विधर्मी जैसा व्यवहार करता है।

यदि कोई विदेशी भाषा के क्षेत्र में रचनात्मक नहीं है, तो इसका कारण यह है कि वह स्थानीय लोगों के बराबर अच्छा प्रदर्शन करना चाहता है: चाहे वह सफल हो या न हो, यही महत्वाकांक्षा उसके पतन का कारण बनती है।

मैं बार-बार पत्र लिखना शुरू करता हूँ, पर कोई निष्कर्ष नहीं निकलता: क्या कहूँ और कैसे कहूँ? मुझे यह भी याद नहीं रहता कि मैं किसे लिख रहा हूँ। केवल जुनून या लाभ ही सही लहजा अपना पाते हैं। दुर्भाग्य से, अलगाव भाषा के प्रति उदासीनता है, शब्दों के प्रति असंवेदनशीलता है। फिर भी, शब्दों से संपर्क खोने से ही हम मनुष्यों से संपर्क खो देते हैं।

हर किसी को किसी न किसी क्षण में एक असाधारण अनुभव हुआ है, जो उसके लिए, उस अनुभव की संजोई हुई स्मृति के कारण, उसके आंतरिक रूपांतरण में एक महत्वपूर्ण बाधा बन जाता है।

मुझे शांति तभी मिलती है जब मेरी महत्वाकांक्षाएं शांत होती हैं। एक बार जब वे जाग उठती हैं, तो चिंता फिर से मुझे घेर लेती है। जीवन महत्वाकांक्षा की अवस्था है। सुरंग खोदने वाला तिल भी महत्वाकांक्षी होता है। महत्वाकांक्षा हर जगह मौजूद है, और हम इसके निशान मृतकों के चेहरों पर भी देख सकते हैं।

वेदांत या बौद्ध धर्म के कारण भारत जाना लगभग वैसा ही है जैसा जैनसेनवाद के कारण फ्रांस जाना। इसके अलावा, जैनसेनवाद तो और भी नया है, क्योंकि यह केवल तीन शताब्दियों पहले ही लुप्त हुआ है।

कहीं भी वास्तविकता का जरा सा भी नामोनिशान नहीं है—सिवाय मेरी अवास्तविकता की अनुभूति के।

यदि हम उन चीजों को महत्व देना बंद कर दें जिनका कोई महत्व नहीं है, तो अस्तित्व एक अत्यंत अव्यावहारिक प्रयास बन जाएगा।

गीता में कर्मों के फल का त्याग करने को इतना महत्व क्यों दिया गया है? क्योंकि ऐसा त्याग दुर्लभ, अव्यावहारिक, हमारे स्वभाव के विपरीत है, और क्योंकि इसे प्राप्त करना उस मनुष्य का नाश करना है जो हम रहे हैं और जो हम हैं, अपने भीतर के पूरे अतीत, सहस्राब्दियों के कर्मों का नाश करना है—

संक्षेप में, स्वयं को उस घृणित और अनादि काल के व्यभिचार से मुक्त करना है।

हमें अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही रहना चाहिए था, विकास को त्याग देना चाहिए था, अपूर्ण ही रहना चाहिए था, मौलिक विश्राम में आनंद लेना चाहिए था और भ्रूण अवस्था के परमानंद में शांतिपूर्वक स्वयं को लीन कर लेना चाहिए था।

सत्य व्यक्तिगत संघर्ष में निहित है। यदि मैं वास्तविक रूप से पीड़ा सहता हूँ, तो मैं एक व्यक्ति से कहीं अधिक पीड़ा सहता हूँ; मैं अपने स्व-स्वरूप के दायरे से ऊपर उठ जाता हूँ; मैं दूसरों के सार से जुड़ जाता हूँ। सार्वभौमिकता की ओर बढ़ने का एकमात्र मार्ग यही है कि हम केवल उन्हीं चीजों पर ध्यान केंद्रित करें जो हमसे संबंधित हैं।

जब हम संदेह पर ही केंद्रित होते हैं, तो हम उस पर अटकलें लगाने में उससे कहीं अधिक आनंद लेते हैं जितना कि उसका अभ्यास करने में।

यदि आप किसी राष्ट्र को जानना चाहते हैं, तो उसके द्वितीय श्रेणी के लेखकों से मिलें: केवल वही उसके वास्तविक स्वरूप को प्रतिबिंबित करते हैं। अन्य लेखक अपने देशवासियों की निरर्थकता की निंदा या उसे विकृत रूप देते हैं, और न तो वे स्वयं को उनके बराबर रख सकते हैं और न ही रखना चाहते हैं। वे संदिग्ध गवाह हैं।

मेरी जवानी में कई सप्ताह ऐसे होते थे जब मैं कभी आँखें बंद नहीं करता था। मैं एक अनछुई दुनिया में जीता था, मुझे ऐसा लगता था कि समय, अपने सभी

क्षणों के साथ, मेरे भीतर ही समाहित हो गया है, जहाँ वह चरम पर पहुँचता है, जहाँ उसकी विजय होती है। मैं उसे आगे बढ़ाता था, बेशक, मैं ही उसका प्रवर्तक और वाहक था, उसका कारण और सार था, और एक माध्यम और सहयोगी के रूप में ही मैंने उसके उत्कर्ष में भाग लिया। जब नींद हमसे दूर हो जाती है, तो अनसुनी चीजें रोजमर्रा की, सहज हो जाती हैं: हम बिना किसी तैयारी के उसमें प्रवेश करते हैं, उसमें रहते हैं, उसमें डूब जाते हैं।

आश्चर्य की बात है, मैंने अस्तित्व और घटित होने वाली घटनाओं के "अर्थ" को समझने में कितने घंटे बर्बाद कर दिए हैं... लेकिन उस "अर्थ" का कोई अर्थ नहीं है, जैसा कि सभी गंभीर बुद्धिजीवी जानते हैं। इसलिए वे अपना समय और ऊर्जा अधिक उपयोगी कार्यों में लगाते हैं।

पेचोरिन से लेकर स्टावरो-गिन तक, रूसी बायरनवाद के प्रति मेरी आत्मीयता, मेरी ऊब और ऊब के प्रति मेरा जुनून।

एक्स, जिसे मैं खास पसंद नहीं करता, एक ऐसी बेवकूफी भरी कहानी सुना रहा था कि मैं एकदम चौंककर जाग गया: जिन्हें हम पसंद नहीं करते वे शायद ही कभी हमारे सपनों में चमकते हैं।

व्यस्तता के अभाव में, वृद्ध लोग किसी अत्यंत जटिल समस्या को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं, और अपनी शेष सभी क्षमताओं को उसमें लगा रहे हैं। शायद यही कारण है कि वे सामूहिक रूप से आत्महत्या नहीं करते, जबकि यदि वे थोड़ा भी कम तल्लीन होते तो उन्हें ऐसा करना चाहिए था।

प्रेम अपने चरम पर भी दो मनुष्यों को इतना करीब नहीं ला पाता जितना निंदा। निंदा करने वाला और निंदा का शिकार, दोनों ही एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े होते हैं, एक अलौकिक एकता का निर्माण करते हैं, जो हमेशा के लिए एक दूसरे से विलीन हो जाती है। कोई भी उन्हें अलग नहीं कर सकता। एक पीड़ा पहुँचाता है, दूसरा उसे सहता है, लेकिन यदि वह इसे सहता है, तो इसलिए कि उसे इसकी आदत हो चुकी है, वह इसके बिना नहीं रह सकता, बल्कि इस पर अड़ा रहता है। वह जानता है कि उसकी इच्छाएँ पूरी होंगी, उसे कभी भुलाया नहीं जाएगा, और चाहे कुछ भी हो जाए, वह अपने अथक उपकारक के मन में सदा उपस्थित रहेगा।

घुमंतू साधु, विचरण करने वाला भिक्षु—अब तक की सर्वोच्च उपलब्धि। उस मुकाम तक पहुंचना जहां त्यागने के लिए कुछ भी न बचे! यही किसी भी भ्रममुक्त मन का सपना होगा।

सिसकते हुए नकारना—नकारने का एकमात्र सहनीय रूप।

भाग्यशाली जॉब, जिसे अपने विलापों पर टिप्पणी लिखने की कोई बाध्यता नहीं थी!

देर रात मुझे उन्माद में डूबने का मन करता है, खुद को मुक्त करने के लिए कुछ अभूतपूर्व करने का मन करता है, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि किसके खिलाफ, किस चीज के खिलाफ...

सेंट-साइमन का कहना है कि श्रीमती डी'हेउडिकोर्ट ने अपने जीवन में कभी भी किसी की प्रशंसा करते समय कोई तीखी टिप्पणी नहीं जोड़ी। यह चुगली की नहीं, बल्कि आम तौर पर बातचीत की एक बेहतरीन परिभाषा है।

हर सजीव प्राणी शोर करता है। खनिज जगत के पक्ष में कितना ठोस तर्क है!

बाख झगड़ालू, मुकदमेबाज, स्वार्थी, उपाधियों और सम्मानों का लालची आदि थे। तो क्या हुआ! मृत्यु को विषय बनाकर रचित कैंटाटाओं की सूची बनाते हुए एक संगीतविज्ञानी ने टिप्पणी की है कि किसी भी नश्वर प्राणी को मृत्यु के प्रति इतनी गहरी तड़प कभी नहीं हुई। और यही सबसे महत्वपूर्ण है। बाकी सब जीवनी पर निर्भर करता है।

चिंतन और प्रयास के बिना तटस्थ अवस्था प्राप्त करने में असमर्थ होना ही हमारा दुर्भाग्य है। जो एक मूर्ख शुरुआत में ही हासिल कर लेता है, उसे पाने के लिए हमें दिन-रात संघर्ष करना पड़ता है, और वह भी रुक-रुक कर!

मैं हमेशा से अनगिनत पलों के मेरे विरुद्ध मार्च करने की कल्पना के साथ जीती रही हूँ। समय ही मेरे लिए बिरनाम वुड साबित होगा।

असभ्य लोगों द्वारा पूछे गए कष्टदायक या चोट पहुँचाने वाले प्रश्न हमें व्यथित और क्रोधित करते हैं, और इनका प्रभाव प्राच्य ध्यान की कुछ तकनीकों के समान हो सकता है। कौन जानता है कि क्या घोर, आक्रामक मूर्खता ज्ञानोदय को जन्म न दे? यह निश्चित रूप से किसी छड़ी से सिर पर एक जोरदार प्रहार जितना ही सार्थक है।

ज्ञान संभव नहीं है, और यदि संभव भी हो जाए, तो उससे कुछ हल नहीं होगा। यही संशयवादी की स्थिति है। तो फिर वह क्या चाहता है—वह क्या खोज रहा है? न तो वह और न ही कोई कभी जान पाएगा। संशयवाद गतिरोध का परमानंद है।

दूसरों से घिरे होने के बावजूद, मैं भागने की कोशिश करता हूँ, हालाँकि मुझे इसमें ज़्यादा सफलता नहीं मिलती, यह स्वीकार करना ही होगा। फिर भी, मैं हर दिन किसी न किसी तरह उस व्यक्ति से कुछ पल के लिए मिलने का मौका निकाल लेता हूँ, जैसा मैं बनना चाहता था।

एक निश्चित उम्र तक पहुँचते-पहुँचते, हमें अपना नाम बदलकर कहीं छिप जाना चाहिए, दुनिया से अलग-थलग, जहाँ फिर कभी दोस्तों या दुश्मनों से मिलने का कोई खतरा न हो, और एक अति व्यस्त अपराधी का शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए।

हम चिंतन और विनम्रता नहीं रख सकते। एक बार मन काम पर लग जाए तो वह ईश्वर और बाकी सब कुछ को पीछे छोड़ देता है। यह अविवेक, अतिक्रमण और अपवित्रता है। यह निर्माण नहीं करता, बल्कि विस्थापन करता है। इसके तरीकों से उत्पन्न तनाव इसके क्रूर और निर्दयी स्वभाव को उजागर करता है: क्रूरता की भरपूर मात्रा के बिना हम किसी विचार को उसके निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा सकते।

अधिकांश विद्रोही, दूरदर्शी और उद्धारक या तो मिर्गी के रोगी रहे हैं या बदहजमी के। मिर्गी के गुणों पर सर्वसम्मति है; वहीं दूसरी ओर, पेट की गड़बड़ी को कम प्रशंसनीय माना जाता है। फिर भी, विद्रोह के लिए पाचन क्रिया से बेहतर कुछ नहीं हो सकता, जो कभी भूलने को तैयार न हो।

मेरा उद्देश्य उन सभी लोगों के लिए कष्ट सहना है जो अनजाने में ही पीड़ा झेल रहे हैं। मुझे उनके लिए प्रायश्चित करना होगा, उनकी अज्ञानता का, उनके उस दुर्भाग्य का कि वे अपनी पीड़ा से अनभिज्ञ हैं।

जब भी समय मुझे सताता है, मैं खुद से कहता हूं कि हममें से किसी एक को पीछे हटना होगा, कि इस क्रूर टकराव का अनिश्चित काल तक जारी रहना असंभव है।

जब हम गहरे अवसाद में डूबे होते हैं, तो हर वो चीज़ जो इसे बढ़ावा देती है, इसे और अधिक बल प्रदान करती है, इसे उस स्तर तक ले जाती है जहाँ हम इसका अनुसरण नहीं कर पाते और इस प्रकार इसे अत्यधिक, अतिरंजित बना देते हैं: इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हम उस बिंदु पर पहुँच जाते हैं जहाँ हम इसे अपना मानना बंद कर देते हैं।

किसी विपत्ति का पूर्वाभास, जब अंततः घटित होता है, तो उसे सहना अप्रत्याशित विपत्ति की तुलना में दस गुना, बल्कि सौ गुना अधिक कठिन होता है। अपनी आशंकाओं के दौरान ही हम उसे पहले से जी लेते हैं, और जब वह घटित होती है तो अतीत की पीड़ाएँ वर्तमान पीड़ाओं में जुड़ जाती हैं, और मिलकर एक ऐसा बोझ बन जाती हैं जिसका भार असहनीय होता है।

स्पष्ट है कि ईश्वर ही एक समाधान था, और स्पष्ट है कि इतना संतोषजनक समाधान फिर कभी नहीं मिलेगा।

मैं केवल अपमानित और सुखी व्यक्ति की ही पूर्ण प्रशंसा करूँगा। मेरा मानना है कि एक ऐसा व्यक्ति होता है जो अपने साथियों की राय को नकारता है और स्वयं में ही सांत्वना और सुख पाता है।

§

§

§

§

कट्टरता संवाद का अंत है। हम शहादत के उम्मीदवार से गपशप नहीं करते। हम उस व्यक्ति से क्या कहें जो हमारी तर्कशक्ति को समझने से इनकार करता है और जो हमारे सामने झुकने से इनकार करते ही मरने को तैयार हो जाता है? हमें ऐसे शौकिया और सोफिस्ट चाहिए जो कम से कम सभी तर्कों का समर्थन तो करें...

जब हम किसी के बारे में और उसके कार्यों के बारे में अपनी राय बताते हैं, तो हम अपने आप को एक अपमानजनक श्रेष्ठता का प्रतीक मानते हैं। स्पष्टवादिता न तो कोमल भावनाओं के अनुकूल है और न ही नैतिक अनिवार्यता के।

सबसे ज़्यादा तो हमारे रिश्तेदार ही हमारी खूबियों पर शक करने को तैयार रहते हैं। यह एक सर्वमान्य नियम है: स्वयं बुद्ध भी इससे अछूते नहीं रहे— उनके चचेरे भाइयों में से एक ने उनका सबसे ज़्यादा विरोध किया, और उसके बाद ही शैतान मारा ने।

चिंता से ग्रस्त व्यक्ति के लिए सफलता और विफलता में कोई अंतर नहीं होता। दोनों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया एक जैसी होती है: दोनों ही उसे समान रूप से परेशान करते हैं।

जब मैं काम न करने के लिए खुद को कुछ ज्यादा ही परेशान करता हूँ, तो मैं खुद से कहता हूँ कि इससे अच्छा तो मैं मर ही जाऊँ और तब तो मुझे और भी कम काम करना पड़ेगा...

चबूतरे पर रखने की बजाय नाली में रखना बेहतर है।

§

§

§

§

§

§

घबराहट या किसी तरह की बेचैनी से उबरने के लिए, अपने अंत्येष्टि की कल्पना करने से बेहतर कुछ नहीं है। यह एक कारगर तरीका है, जो सभी के लिए आसानी से उपलब्ध है। दिनभर में बार-बार इसका सहारा न लेना पड़े, इसलिए बेहतर है कि सुबह उठते ही इसका लाभ महसूस करें। या फिर इसका इस्तेमाल केवल असाधारण क्षणों में ही करें, जैसे पोप इनोसेंट IX ने किया था। उन्होंने अपनी मृत्युशय्या पर लेटे हुए एक चित्र बनवाया था, जिसे वे हर महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले देखते थे।

ऐसा कोई भी नकारने वाला व्यक्ति नहीं है जो किसी विनाशकारी 'हाँ' के लिए तरसता न हो।

हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि मनुष्य कभी भी उन गहराइयों तक नहीं पहुंच पाएगा जो उसने अपने ईश्वर के साथ अहंकारपूर्ण संवाद के युगों के दौरान अनुभव की थीं।

एक भी क्षण ऐसा नहीं जब मैं ब्रह्मांड से अलग न होऊं! ... जैसे ही मैं अपनी दयनीय स्थिति पर विलाप करता हूँ, मुझे एहसास होता है कि जिन शब्दों में मैंने अपने दुर्भाग्य का वर्णन किया है, वे ठीक वही शब्द हैं जो "सर्वोच्च सत्ता" की पहली विशेषता को परिभाषित करते हैं।

अरस्तू, अक्विनास, हेगेल—तीनों ने मन को गुलाम बना लिया। निरंकुशता का सबसे बुरा रूप व्यवस्था है, चाहे वह दर्शन में हो या हर चीज में।

ईश्वर वह है जो इस बात के प्रमाणों के बावजूद कायम रहता है कि किसी भी चीज पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

§

§

§

§

§

§

त्सिमत्सुम। यह सुनने में अटपटा सा लगने वाला शब्द काबाला की एक प्रमुख अवधारणा को दर्शाता है। संसार के अस्तित्व के लिए, ईश्वर, जो सर्वव्यापी और सर्वत्र विद्यमान थे, ने स्वयं को सिकोड़ने की सहमति दी, एक खाली स्थान छोड़ दिया जहाँ वे स्वयं नहीं रहे: इसी "खाली स्थान" में संसार का जन्म हुआ।
इस प्रकार हम उस बंजर भूमि पर निवास करते हैं जो उन्होंने दया या सनक में हमें सौंप दी। हमारे अस्तित्व के लिए, उन्होंने अपनी संप्रभुता को सीमित कर दिया। हम उनके स्वैच्छिक संकुचन, उनके विलोपन, उनकी आंशिक अनुपस्थिति का परिणाम हैं। अपने पागलपन में उन्होंने वास्तव में हमारे लिए स्वयं को काट डाला है। काश, उनमें पूर्ण रहने की समझ और विवेक होता!

“मिस्रियों के सुसमाचार” में यीशु घोषणा करते हैं: “जब तक स्त्रियाँ जन्म देती रहेंगी, पुरुष मृत्यु के शिकार होते रहेंगे।” और वे स्पष्ट करते हैं: “मैं स्त्रियों के कामों को नष्ट करने आया हूँ।”
जब हम ग्नोस्टिक्स के चरम सत्यों का बार-बार अध्ययन करते हैं, तो हम संभव हो तो और भी आगे जाना चाहेंगे, कुछ ऐसा कहना चाहेंगे जो पहले कभी नहीं कहा गया हो, जो इतिहास को स्थिर या चूर-चूर कर दे, कुछ ऐसा जो ब्रह्मांडीय नीरोनियनवाद से, पदार्थ के पैमाने पर एक पागलपन से उपजा हो।

किसी जुनून को व्यक्त करना उसे अपने से बाहर प्रोजेक्ट करना है, उसका पीछा करना है, उसे दूर भगाना है। जुनून उस दुनिया के राक्षस हैं जिसमें आस्था नहीं है।

मनुष्य मृत्यु को स्वीकार करता है, लेकिन मृत्यु के समय को नहीं। वह किसी भी समय मर सकता है, सिवाय उस समय के जब मरना अनिवार्य हो!

§

§

§

§

§

मेरे जितना इस बात से आश्वस्त कोई नहीं रहा कि सब कुछ व्यर्थ है; और किसी ने भी इतने दुखद ढंग से इतनी सारी व्यर्थ चीजों को नहीं सहा है।

अपने कबीले का आखिरी अमेरिकी मूल निवासी इशी, गोरों के डर से वर्षों तक छिपने के बाद, भुखमरी से त्रस्त होकर, अपनी मर्ज़ी से अपने लोगों के संहारकों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, यह मानते हुए कि उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जाएगा। उसका बहुत सम्मान किया गया। उसकी कोई संतान नहीं थी, वह सचमुच आखिरी था।
एक बार जब मानवता नष्ट हो जाएगी या पूरी तरह से विलुप्त हो जाएगी, तो हम एक अकेले जीवित व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं जो पृथ्वी पर भटकता रहेगा, जिसके पास आत्मसमर्पण करने के लिए भी कोई नहीं होगा...

अपने हृदय की गहराई में, मनुष्य चेतना से पहले की अपनी अवस्था में पुनः प्रवेश करने की आकांक्षा रखता है। इतिहास महज़ वह मोड़ है जिसके द्वारा वह वहाँ पहुँचता है।

केवल एक ही बात मायने रखती है: हारने वाला बनना सीखना।

प्रत्येक घटना किसी अन्य, व्यापक घटना का विकृत रूप है: समय, शाश्वतता का रोग; इतिहास, समय का रोग; जीवन, फिर से, पदार्थ का रोग।
तो फिर सामान्य क्या है, स्वस्थ क्या है? अनंतकाल? जो स्वयं ईश्वर की ही एक दुर्बलता है।

8

एक असफल ब्रह्मांड की धारणा के बिना, हर व्यवस्था में अन्याय का तमाशा एक अबुलिक को भी जकड़ लेगा।

विनाश शक्ति का अहसास कराता है, हमारे भीतर छिपी किसी रहस्यमयी, किसी मौलिक चीज़ को उभारता है। निर्माण से नहीं, बल्कि चूर-चूर करने से ही हम ईश्वर की गुप्त संतुष्टियों को जान सकते हैं। यही कारण है कि विनाश का आकर्षण और उससे उत्पन्न होने वाले भ्रम किसी भी युग के उन्मादी लोगों में पैदा होते हैं।

प्रत्येक पीढ़ी पूर्णता में जीती है: वह ऐसा व्यवहार करती है मानो वह इतिहास के अंत तक नहीं तो शिखर तक पहुँच चुकी हो।

अपने जीवन के किसी न किसी मोड़ पर, हर राष्ट्र स्वयं को चुना हुआ मानता है। यही वह क्षण होता है जब वह अपना सर्वश्रेष्ठ और सबसे बुरा रूप प्रदर्शित करता है।

यह कोई संयोग नहीं है कि ट्रैपिस्ट संप्रदाय की स्थापना इटली या स्पेन के बजाय फ्रांस में हुई। यह सच है कि स्पेन और इटली के लोग लगातार बोलते रहते हैं, लेकिन वे खुद को बोलते हुए नहीं सुनते, जबकि फ्रांसीसी अपनी

वाक्पटुता का आनंद लेता है, कभी नहीं भूलता कि वह बोल रहा है, और इस तथ्य से पूरी तरह अवगत है कि केवल वही मौन को एक परीक्षा, एक तपस्या मान सकता है।

मेरे लिए फ्रांसीसी क्रांति की सबसे बड़ी खामी यह है कि यह सब मंच पर घटित होता है, इसके प्रमोटर जन्मजात अभिनेता हैं, और गिलोटिन महज एक सजावट मात्र है। फ्रांस का इतिहास, कुल मिलाकर, एक सुनियोजित इतिहास, एक अभिनयित इतिहास प्रतीत होता है: इसमें सब कुछ नाटकीय दृष्टि से परिपूर्ण है। यह एक प्रदर्शन है, हाव-भाव और घटनाओं की एक श्रृंखला जिसे देखा जाता है, न कि सहा जाता है, एक ऐसा तमाशा जिसे मंच पर प्रस्तुत करने में दस शताब्दियाँ लग जाती हैं। यही कारण है कि आतंक के दौर में भी दूर से देखने पर तुच्छता का आभास होता है।

समृद्ध समाज अन्य समाजों की तुलना में कहीं अधिक नाजुक होते हैं, क्योंकि उनके लिए केवल अपना ही विनाश शेष रहता है। आराम कोई आदर्श नहीं रह जाता, खासकर तब जब वह पीढ़ियों से चला आ रहा हो। इसके अलावा, प्रकृति ने अपने आकलन में खुशहाली को शामिल नहीं किया है और ऐसा करने से वह स्वयं नष्ट हो जाएगी।

यदि सभी लोग एक साथ उदासीन हो जाएँ, तो कोई संघर्ष नहीं होगा, कोई युद्ध नहीं होगा, कोई साम्राज्य नहीं होगा। लेकिन दुर्भाग्य से युवा पीढ़ी है, और वास्तव में युवा लोग ही परोपकारियों के सपनों के लिए एक बड़ी बाधा हैं: सभी मनुष्यों को एक ही स्तर की सुस्ती या निष्क्रियता की स्थिति में लाना...

हमें हर मौके पर उत्पीड़ितों का साथ देना चाहिए, भले ही वे गलत हों, लेकिन इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि वे भी अपने उत्पीड़कों की तरह ही एक ही मिट्टी से बने हैं।

पतनशील शासन प्रणालियों की विशेषता: विश्वासों और सिद्धांतों के एक भ्रमित मिश्रण की अनुमति देना, और साथ ही यह भ्रम पैदा करना कि चुनाव के क्षण को अनिश्चित काल के लिए टाला जा सकता है...
यही क्रांति-पूर्व काल के आकर्षण का स्रोत है—एकमात्र स्रोत।

केवल झूठे विचार ही प्रचलित होते हैं, क्योंकि हर कोई उन्हें आत्मसात कर सकता है, उनकी नकल कर सकता है (जिससे वे भी दूसरे दर्जे के झूठे बन जाते हैं)। सफल होने वाला विचार अनिवार्य रूप से एक छद्म विचार होता है।

क्रांतियां खराब साहित्य की पराकाष्ठा हैं।

सार्वजनिक दुर्भाग्य की सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि हर कोई खुद को उनके बारे में बात करने के लिए योग्य समझता है।

आदर्श राज्य के संविधान में हमें परेशान करने वाले हर व्यक्ति को दबाने का अधिकार सर्वोपरि होना चाहिए।

युवाओं को बस यही सिखाया जाना चाहिए कि जीवन से आशा करने लायक कुछ भी नहीं है। स्कूलों में एक ऐसी निराशाओं की सूची लगाने का सपना है जिसमें हम सभी के लिए निर्धारित सभी हताशाओं को शामिल किया गया हो।

राजकुमारी पैलेटाइन के अनुसार, राजा की मृत्यु के बाद के वर्षों में, जब मैडम डी मेनटेनॉन की कोई भूमिका नहीं रह गई थी, तो वह अक्सर दोहराती थीं: "कुछ समय से एक तरह का भ्रम फैल रहा है जो हर जगह फैल रहा है।" हारने वालों ने हमेशा इस "भ्रम" को महसूस किया है, और यह सही भी है, और हम इस सूत्र के परिप्रेक्ष्य से पूरे इतिहास पर पुनर्विचार कर सकते हैं।

प्रगति वह अन्याय है जो प्रत्येक पीढ़ी अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी के प्रति करती है।

अतिभोग से ग्रस्त लोग स्वयं से घृणा करते हैं—गुप्त रूप से नहीं बल्कि सार्वजनिक रूप से, और किसी न किसी तरह से इस प्रक्रिया से मुक्त होना चाहते हैं। वे किसी भी हालत में यही पसंद करते हैं कि यह प्रक्रिया उनके स्वयं के सहयोग से ही संपन्न हो। यही क्रांतिकारी परिस्थिति का सबसे विचित्र और मौलिक पहलू है।

एक राष्ट्र केवल एक ही क्रांति को जन्म देता है। जर्मनों ने सुधार आंदोलन की उपलब्धि को कभी दोहराया नहीं है, या यूं कहें कि उन्होंने उसे दोहराया तो है, लेकिन उसके बराबर नहीं पहुंच पाए हैं। फ्रांस 1989 की क्रांति का शाश्वत अनुयायी बना रहा है। रूस और सभी राष्ट्रों के लिए समान रूप से सच यह है कि क्रांतियों के संदर्भ में स्वयं की नकल करने की यह प्रवृत्ति एक साथ आश्वस्त करने वाली और चिंताजनक दोनों है।

पतन के दौर के रोमन केवल उसी चीज़ का आनंद लेते थे जिसे वे यूनानी अवकाश (ओटियम ग्रेकम) कहते थे, वह चीज़ जिसे उन्होंने अपने वैभव के काल में सबसे अधिक तुच्छ समझा था। आज की सभ्यताओं के साथ यह समानता इतनी स्पष्ट है कि इस पर ज़ोर देना अनुचित होगा।

अलारिक का दावा था कि एक "राक्षस" ने उसे रोम के विरुद्ध जाने के लिए उकसाया था। हर थकी-हारी सभ्यता अपने बर्बर योद्धा की प्रतीक्षा करती है, और हर बर्बर योद्धा अपने राक्षस योद्धा की प्रतीक्षा करता है।

पश्चिम: एक मीठी गंध वाली सड़न, एक सुगंधित लाश।

ये सभी राष्ट्र महान थे क्योंकि उनमें प्रबल पूर्वाग्रह थे। अब उनमें कोई पूर्वाग्रह नहीं है। क्या वे अब भी राष्ट्र हैं? ज़्यादा से ज़्यादा, बिखरी हुई भीड़।

श्वेत जाति तेजी से उस नाम की हकदार होती जा रही है जो अमेरिकी मूलनिवासियों ने दिया था: गोरे लोग।

यूरोप में, खुशी वियना में आकर रुक जाती है। उसके आगे, शुरुआत से ही दुख पर दुख ही दुख है।

रोमन, तुर्क और ब्रिटिश साम्राज्य इसलिए स्थायी बन सके क्योंकि उन्होंने किसी भी सिद्धांत को मानने से इनकार कर दिया और अपने अधीन राष्ट्रों पर

कोई सिद्धांत थोपा नहीं। यदि वे किसी मसीहाई बुराई से ग्रस्त होते तो वे इतने लंबे समय तक प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाते। अप्रत्याशित उत्पीड़क, प्रशासक और परजीवी, दृढ़ विश्वासहीन स्वामी, उनमें अधिकार और उदासीनता, कठोरता और निर्ममता का संयोजन करने की कला थी। यही कला, सच्चे स्वामी का रहस्य, प्राचीन स्पेनियों में नहीं थी, जैसा कि आज के विजेताओं में भी नहीं है।

जब तक कोई राष्ट्र अपनी श्रेष्ठता के प्रति सजग रहता है, तब तक वह शक्तिशाली और सम्मानित रहता है; एक बार जब वह इस सजगता को खो देता है, तो राष्ट्र मानवीय हो जाता है और उसका कोई महत्व नहीं रह जाता।

जब मैं इस युग के विरुद्ध क्रोधित होता हूँ, तो मैं केवल यह सोचकर शांत हो जाता हूँ कि आगे क्या होगा, हमारे बाद आने वालों की ईर्ष्या के बारे में सोचकर। कुछ मायनों में, हम पुरानी मानवता से संबंध रखते हैं, उस मानवता से जो स्वर्ग के लिए भी तरस सकती है। लेकिन हमारे बाद आने वालों को उस पछतावे का सहारा भी नहीं मिलेगा, उन्हें इसका कोई आभास भी नहीं होगा, यहाँ तक कि वे इसका नाम भी नहीं ले सकेंगे!

भविष्य के बारे में मेरी कल्पना इतनी सटीक है कि अगर मेरे बच्चे होते, तो मैं उन्हें यहीं और अभी गला घोंटकर मार डालता।

जब हम रोमांटिक काल के बर्लिन के सैलून के बारे में सोचते हैं, उनमें हेनरिटा हर्ज़ या राहेल लेविन जैसी अभिनेत्रियों की भूमिका के बारे में, राहेल और युवराज लुई-फर्डिनेंड के बीच की दोस्ती के बारे में; और जब हम सोचते हैं कि अगर ऐसी महिलाएं इस सदी में जीवित होतीं तो उनकी किसी गैस

चैंबर में मौत हो जाती, तो हम प्रगति में विश्वास को सबसे झूठा और मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास मानने से खुद को रोक नहीं पाते।

हेसियोड इतिहास के दर्शन को विस्तार से समझाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने ही पतन की अवधारणा को भी प्रतिपादित किया। ऐसा करके उन्होंने ऐतिहासिक प्रक्रिया पर कितना प्रकाश डाला! यदि होमर के बाद के युग के आरंभ में ही उन्होंने यह मान लिया था कि मानवता लौह युग में है, तो कुछ शताब्दियों बाद वे क्या कहते—आज वे क्या कहते?
तुच्छता या आदर्शवाद के अंधकार में डूबे समय को छोड़कर, मनुष्य ने हमेशा स्वयं को सबसे बुरे दौर की दहलीज पर खड़ा माना है। जो कुछ वह जानता था, उसे जानते हुए भी, किस चमत्कार से वह अपनी इच्छाओं और भय को निरंतर बदलता रहा?

प्रथम विश्व युद्ध के ठीक बाद, जब मेरे जन्मस्थान वाले गाँव में बिजली आई, तो पहले विरोध की हल्की-हल्की आवाज़ उठी, फिर सन्नाटा छा गया। लेकिन जब चर्चों (वहाँ तीन चर्च थे) में बिजली आई, तो हर कोई आश्वस्त हो गया कि मसीह-विरोधी आ गया है और उसके साथ ही कयामत का समय भी आ गया है।
कार्पेथियन के इन किसानों ने स्पष्ट रूप से देखा था, दूर तक देखा था: प्रागैतिहासिक काल से उभरकर, वे उस युग में ही वह सब जानते थे जो "सभ्य" मनुष्य हाल ही में जान पाए हैं।

हर उस चीज के प्रति मेरा पूर्वाग्रह ही है जिसका परिणाम अच्छा होता है, और इसी पूर्वाग्रह ने मुझे इतिहास पढ़ने का शौक पैदा किया है।
विचार अंतिम पीड़ा के लिए अनुपयुक्त होते हैं; वे मर तो जाते हैं, लेकिन मरने का तरीका जाने बिना, जबकि कोई घटना केवल अपने अंत की दृष्टि से ही अस्तित्व में रहती है। इसलिए दार्शनिकों की संगति के बजाय इतिहासकारों की संगति को प्राथमिकता देने का यह एक पर्याप्त कारण है।

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में रोम की अपनी प्रसिद्ध यात्रा के दौरान, कार्नेडेस ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए पहले दिन न्याय के विचार के पक्ष में और अगले दिन उसके विरोध में भाषण दिया। उसी क्षण से, उस सुसंस्कृत देश में अब तक न के बराबर मौजूद दर्शनशास्त्र ने अपना कहर बरपाना शुरू कर दिया। तो फिर दर्शनशास्त्र क्या है? फल में कीड़ा...
यूनानियों के द्वंद्वात्मक प्रदर्शनों में उपस्थित रहे सेंसर कैटो उनसे चिंतित हो गए और उन्होंने सीनेट से एथेंस के प्रतिनिधिमंडल को जल्द से जल्द संतुष्ट करने का अनुरोध किया, क्योंकि वे उनकी उपस्थिति को इतना हानिकारक और खतरनाक मानते थे। रोमन युवाओं को ऐसे विनाशकारी विचारों वाले लोगों के साथ समय बिताना उचित नहीं था।
नैतिक स्तर पर, कार्नेडेस और उनके साथी सैन्य शक्ति के मामले में कार्थेजवासियों के समान ही शक्तिशाली थे। उभरते राष्ट्र सबसे अधिक पूर्वाग्रहों और प्रतिबंधों की अनुपस्थिति, बौद्धिक निर्भीकता से भयभीत होते हैं, जो पतनशील सभ्यताओं का आकर्षण होता है।

हरक्यूलिस को अपने सभी कार्यों में सफल होने के कारण दंडित किया गया। इसी प्रकार, अत्यधिक प्रसन्नता के कारण ट्रॉय का भी विनाश हुआ।
दुखद कवियों द्वारा साझा किए गए इस दृष्टिकोण पर विचार करते हुए, हम यह सोचने से खुद को रोक नहीं सकते कि तथाकथित स्वतंत्र दुनिया, जिस पर हर तरह का धन लुटाया गया है, अनिवार्य रूप से इलियन के भाग्य का शिकार होगी, क्योंकि देवताओं की ईर्ष्या उनके गायब होने के बाद भी जीवित रहती है।

"फ्रांसीसी लोग अब काम नहीं करना चाहते, वे सब लिखना चाहते हैं," मेरी चौकीदार ने मुझसे कहा, इस बात से अनजान कि वह उसी समय और उसी स्थान पर सभी पुरानी सभ्यताओं पर फैसला सुना रही थी।

किसी समाज का पतन तब निश्चित हो जाता है जब उसमें सीमित होने की शक्ति नहीं रह जाती। खुले दिमाग से—अत्यधिक खुले दिमाग से—वह स्वतंत्रता की अति और घातक जोखिमों से खुद को कैसे बचा सकता है?

वैचारिक विवाद केवल उन्हीं देशों में चरम सीमा तक पहुंचते हैं जहां लोग शब्दों को लेकर एक-दूसरे से लड़े हैं, जहां वे शब्दों के लिए मौत तक गए हैं... संक्षेप में, उन देशों में जिन्होंने धार्मिक युद्ध देखे हैं।

जिस राष्ट्र का उद्देश्य पूरा हो चुका है, वह उस लेखक के समान है जो अपनी ही बात दोहराता रहता है—नहीं, जिसके पास कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं। क्योंकि अपनी बात दोहराना यह साबित करता है कि आप अब भी खुद पर और अपनी कही बातों पर विश्वास रखते हैं। लेकिन पतन की ओर बढ़ रहे राष्ट्र में अब अपने पुराने आदर्श वाक्यों को दोहराने की भी शक्ति नहीं रह जाती, जिन्होंने कभी उसे उसकी श्रेष्ठता और गौरव का आश्वासन दिया था।

फ्रेंच एक प्रांतीय भाषा बन गई है। स्थानीय लोगों को इससे कोई आपत्ति नहीं है। केवल विदेशी ही इसके कारण दुखी हैं—केवल वही बारीकियों के लिए शोक मनाते हैं…

थेमिस्टोक्लेस ने सर्वसम्मति से पारित एक फरमान के द्वारा, ज़ेरक्सेस के राजदूतों के दुभाषिए को "एक बर्बर के आदेशों को व्यक्त करने के लिए ग्रीक भाषा का उपयोग करने का साहस करने" के लिए मौत की सजा दी।
कोई राष्ट्र ऐसा कृत्य तभी करता है जब वह अपने चरम उत्कर्ष पर होता है। वह पतन की ओर अग्रसर होता है, वह मरणासन्न होता है, जब वह अपनी भाषा पर विश्वास करना छोड़ देता है, जब वह यह मानना बंद कर देता है कि उसकी भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोच्च रूप है, उसकी एकमात्र भाषा है।

§

§

§

§

§

§

रहने लगें, खुलेआम या छिपकर कांपना बंद कर दें, तो वे भी ऐसा ही नज़ारा पेश कर सकते हैं।

सही परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं होता। जो इतिहासकार अतीत का मूल्यांकन करने का साहस करता है, वह किसी और सदी में पत्रकारिता कर रहा होता है।

दो सौ वर्षों में (आइए हम सटीक रहें!), अत्यधिक भाग्यशाली राष्ट्रों के बचे हुए लोगों को आरक्षण क्षेत्रों में रखा जाएगा और उनसे मिलने जाया जाएगा, घृणा, सहानुभूति या स्तब्धता के साथ-साथ द्वेषपूर्ण प्रशंसा के साथ उनका चिंतन किया जाएगा।

समूह में रहने वाले बंदर उन बंदरों को अस्वीकार कर देते हैं, जो किसी न किसी रूप में मनुष्यों के संपर्क में रहे हों। यह कितना दुखद है कि स्विफ्ट को इस तथ्य की जानकारी कभी नहीं हुई!

क्या हमें अपने युग की निंदा करनी चाहिए—या सभी युगों की?
क्या हम बुद्ध के संसार से विमुख होने के पीछे उनके समकालीनों का हाथ समझते हैं?

यदि मानवता को उद्धारकों के प्रति इतना प्रेम है, उन कट्टरपंथियों के प्रति जो इतनी बेशर्मी से खुद पर विश्वास करते हैं, तो इसका कारण यह है कि मानवता मानती है कि वे उस पर विश्वास करते हैं।

इस राजनेता की ताकत दूरदर्शी और संशयवादी होना है। एक ऐसा स्वप्नद्रष्टा जो किसी भी बात से संकोच नहीं करता।

सबसे जघन्य अपराध उत्साह में आकर किए जाते हैं, जो एक विकृत अवस्था है और लगभग सभी सार्वजनिक और निजी आपदाओं के लिए जिम्मेदार है।

क्या आपको भविष्य आकर्षक लगता है? यह तो आपका है! मैं तो वर्तमान और अतीत के अद्भुत नज़ारों में ही खोया रहना पसंद करता हूँ। इस अद्भुत अनुभव को जीना मैं आप पर छोड़ता हूँ।

"आप पिछली जंग के बाद से किए गए हर काम के खिलाफ हैं," उस बेहद आधुनिक महिला ने कहा।
"आपने गलत तारीख बताई है: मैं आदम के समय से लेकर अब तक जो कुछ भी हुआ है, उसके खिलाफ हूं।"

हिटलर निःसंदेह इतिहास का सबसे क्रूर चरित्र है। और सबसे दयनीय भी। उसने ठीक वही हासिल किया जो वह चाहता था, उसका बिल्कुल उल्टा; उसने अपने आदर्श को एक-एक करके नष्ट कर दिया। इसी कारण वह एक अलग ही श्रेणी का राक्षस है— अर्थात्, दोहरा राक्षस, क्योंकि उसकी करुणा भी भयावह है।

सभी महान घटनाओं की शुरुआत पागलों ने की है, साधारण पागलों ने। और हमें पूरा यकीन है कि यह बात "दुनिया के अंत" के बारे में भी सच होगी।

ज़ोहर सिखाता है कि जो लोग पृथ्वी पर बुराई करते हैं, वे स्वर्ग में भी बेहतर नहीं होते, वे इसे छोड़ने के लिए अधीर होते हैं, और रसातल के मुँह की ओर दौड़ते हुए, वे "उस समय से पहले ही पहुँच जाते हैं जब उन्हें इस दुनिया में उतरना होता है।"
आत्माओं के पूर्व-अस्तित्व की इस दृष्टि की गहनता और दुष्टों की निश्चितता, विजय, उनकी दृढ़ता और उनकी सक्षमता को समझाने में इसकी उपयोगिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अपने प्रयासों की इतनी पूर्व-तैयारी के कारण, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने पृथ्वी पर अधिकार कर लिया: उन्होंने यहाँ आने से पहले ही इस पर विजय प्राप्त कर ली थी..., अनंत काल पहले, और वास्तव में अनंत काल तक के लिए।

सच्चे पैगंबर को बाकी लोगों से जो बात अलग करती है, वह यह है कि वह उन आंदोलनों और सिद्धांतों के उद्गम स्थल पर खड़ा होता है जो एक दूसरे का खंडन और विरोध करते हैं।

चाहे महानगर हो या छोटा गाँव, हमें आज भी सबसे ज्यादा अच्छा लगता है अपने ही किसी साथी का पतन देखना।

विनाश की भूख हमारे भीतर इतनी गहराई से समाई हुई है कि कोई भी इसे जड़ से उखाड़ नहीं सकता। यह हमारी प्रकृति का हिस्सा है, क्योंकि हमारे अस्तित्व का मूल ही राक्षसी प्रवृत्ति से प्रेरित है।
ऋषि एक शांत, एकांतप्रिय विनाशक हैं। बाकी सब व्यवहार में विनाशक हैं।

दुर्भाग्य एक निष्क्रिय, सहन की जाने वाली अवस्था है, जबकि अभिशाप में विद्रोह की भावना निहित होती है, परिणामस्वरूप एक मिशन, एक आंतरिक शक्ति का भाव, जो दुर्भाग्य में निहित नहीं होता। एक अभिशापित व्यक्ति या

राष्ट्र निश्चित रूप से एक दुर्भाग्यशाली व्यक्ति या राष्ट्र से श्रेष्ठ होता है।

सच कहें तो, इतिहास खुद को दोहराता नहीं है, लेकिन चूंकि मनुष्य के भ्रम सीमित संख्या में होते हैं, इसलिए वे हमेशा किसी न किसी रूप में लौट आते हैं, जिससे कुछ बेहद जर्जर गंदगी को नवीनता और एक दुखद चमक का रूप मिल जाता है।

मैंने जोविनियन, सेंट बेसिल और कई अन्य लोगों के बारे में कुछ पन्ने पढ़े। ईसाई धर्म के प्रारंभिक शताब्दियों में रूढ़िवादिता और विधर्म के बीच का संघर्ष आधुनिक विचारधाराओं द्वारा हमें परिचित कराए गए संघर्ष से अधिक पागलपन भरा नहीं लगता। विवाद के तौर-तरीके, उसमें निहित भावनाएँ, मूर्खताएँ और बेतुकेपन लगभग एक जैसे हैं। दोनों ही मामलों में, सब कुछ अवास्तविक और असत्यापित पर आधारित है, जो धार्मिक या राजनीतिक सिद्धांतों का मूल आधार बनते हैं। इतिहास तभी सहनीय होगा जब हम दोनों प्रकार के इतिहास से मुक्त हो जाएँगे। सच है, तब यह पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, जो सभी के हित में होगा—उन लोगों के लिए भी जो इसे सहते हैं और उन लोगों के लिए भी जो इसे रचते हैं।

विनाश को संदिग्ध बनाने वाली बात इसकी सरलता है: कोई भी व्यक्ति इसमें निपुण हो सकता है। लेकिन यदि विनाश करना आसान है, तो स्वयं को नष्ट करना उतना आसान नहीं है। आंदोलनकारी या अराजकतावादी की तुलना में बहिष्कृत व्यक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

यदि मैं ईसाई धर्म के प्रारंभिक काल में जीवित होता, तो मुझे डर है कि मैं भी उसके प्रलोभन में आ जाता। और मैं उस सहानुभूति रखने वाले, उस काल्पनिक

कट्टरपंथी से घृणा करता हूँ: मैं दो हज़ार साल पहले किए गए उस धर्मांतरण को कभी क्षमा नहीं कर सकता…

टॉम, हिंसा और मोहभंग के बीच, मैं खुद को एक आतंकवादी के रूप में देखता हूँ जो किसी अत्याचार को अंजाम देने के लिए सड़क पर निकलता है और रास्ते में उपदेशक या एपिक्टेटस से परामर्श करने के लिए रुकता है।

हेगेल के अनुसार, मनुष्य तभी पूर्णतः स्वतंत्र होगा जब वह "अपने आप को पूरी तरह से अपने द्वारा निर्मित दुनिया से घेर लेगा।"
लेकिन उसने ठीक यही किया है, और मनुष्य आज जितना जंजीरों में जकड़ा हुआ है, जितना गुलाम है, उतना पहले कभी नहीं था।

जीवन केवल उसी मानवता के बीच सहनीय हो पाएगा जिसके पास अब कोई भ्रम शेष न हो, एक ऐसी मानवता जो पूरी तरह से भ्रममुक्त हो और ऐसा होने से प्रसन्न हो।

मैंने जो कुछ भी महसूस किया है और सोचा है, वह सब एक तरह से आदर्शवाद-विरोधी प्रयास से मेल खाता है।

मनुष्य का जीवन लंबा नहीं चलेगा। थकावट से घिरकर, उसे अपने अति-प्रायोगिक जीवन का फल भुगतना पड़ेगा। क्योंकि यह अकल्पनीय और प्रकृति के विरुद्ध होगा कि वह और अधिक समय तक जीवित रहे और उसका अंत सुखद हो। यह संभावना निराशाजनक है, इसलिए इसकी प्रबल संभावना है।

"प्रबुद्ध निरंकुशता": एकमात्र ऐसी शासन व्यवस्था जो भ्रममुक्त मानसिकता को आकर्षित कर सकती है, एक ऐसी मानसिकता जो क्रांतियों की सहभागी बनने में असमर्थ है क्योंकि यह इतिहास की भी सहभागी नहीं है।

दो समकालीन भविष्यवक्ताओं से अधिक कष्टदायी कुछ नहीं होता। यदि एक उपहास का पात्र नहीं बनना चाहता, तो उसे पीछे हटना होगा, गायब हो जाना होगा। जब तक कि दोनों का ही उपहास न हो जाए, जो कि सबसे न्यायसंगत समाधान होगा।

जब भी मेरी नज़र किसी निर्दोष व्यक्ति पर पड़ती है, तो मैं विचलित और अभिभूत हो जाता हूँ। वह कहाँ से आया है? उसका मकसद क्या है? क्या ऐसी उपस्थिति किसी आपदा का संकेत नहीं है? किसी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में, जिसे हम अपने जैसा नहीं कह सकते, हम एक विशेष प्रकार की बेचैनी का अनुभव करते हैं।

जहां कहीं भी सभ्यता से प्रेरित मनुष्य पहली बार प्रकट हुए, वहां के मूल निवासियों ने उन्हें शैतान, भूत या प्रेत समझा। कभी भी जीवित मनुष्य नहीं! अद्वितीय अंतर्ज्ञान, भविष्यसूचक दूरदर्शिता, अगर कभी किसी के पास ऐसी अंतर्दृष्टि थी तो यही थी।

अगर हर कोई सब कुछ समझ लेता, अगर हर कोई “समझ” लेता, तो इतिहास बहुत पहले ही समाप्त हो गया होता। लेकिन हम मूल रूप से, जैविक रूप से “समझने” के लिए अनुपयुक्त हैं। और अगर एक को छोड़कर बाकी सब समझ भी लें, तो भी इतिहास उस एक की वजह से, उसकी अज्ञानता की वजह से, एक अकेले भ्रम की वजह से कायम रहेगा!

एक्स का मानना है कि हम एक "ब्रह्मांडीय चक्र" के अंत में हैं और जल्द ही सब कुछ बिखर जाएगा। और उसे इस बात पर ज़रा भी संदेह नहीं है।
साथ ही, वह एक विशाल परिवार का पिता भी है। उसकी जैसी निश्चितताओं के साथ, किस भ्रम ने उसे इस विनाशशील दुनिया में एक के बाद एक बच्चे को जन्म देने के लिए प्रेरित किया है? यदि हम अंत को देख सकते हैं, यदि हमें यकीन है कि यह जल्द ही आने वाला है, यदि हम इसकी आशंका भी करते हैं, तो बेहतर है कि हम अकेले ही ऐसा करें। पैटमोस पर संतानोत्पत्ति नहीं होती।

मोंटेग्न, एक बुद्धिमान व्यक्ति, का कोई वंशज नहीं हुआ। रूसो, एक सनकी व्यक्ति, आज भी राष्ट्रों को झकझोरता है। मुझे केवल वे विचारक पसंद हैं जिन्होंने किसी जनवादी नेता को प्रेरित नहीं किया।

1441 में, फ्लोरेंस की परिषद ने यह फरमान जारी किया कि मूर्तिपूजकों, यहूदियों, विधर्मियों और फूट डालने वालों को "शाश्वत जीवन" में कोई स्थान नहीं मिलेगा और जो भी मरने से पहले सच्चे धर्म को नहीं अपनाएगा, वह सीधे नरक में जाएगा।
जिस समय चर्च ने इतने अत्याचार किए, उसी समय वह वास्तव में चर्च था। कोई संस्था तभी जीवंत और सशक्त होती है जब वह अपने से भिन्न हर चीज को अस्वीकार कर देती है। दुर्भाग्यवश, यही बात किसी राष्ट्र या शासन व्यवस्था पर भी लागू होती है।

एक गंभीर, ईमानदार व्यक्ति इतिहास को कुछ भी नहीं समझता—और न ही समझ सकता है। वहीं दूसरी ओर, इतिहास एक विद्वान संशयवादी को आनंदित करने के लिए अद्भुत रूप से उपयुक्त है।

§

§

§

§

§

जिसे हम रचनात्मक प्रवृत्ति कहते हैं, वह महज एक विचलन है, हमारी प्रकृति का मात्र एक विकृति है: हमें दुनिया में नवाचार करने, क्रांति लाने के लिए नहीं लाया गया है, बल्कि अपने अस्तित्व के आभास का आनंद लेने के लिए लाया गया है, ताकि इसे चुपचाप समाप्त कर दिया जाए और बाद में बिना किसी शोर-शराबे के गायब हो जाएं।

एज़्टेक लोगों का यह मानना सही था कि देवताओं को प्रसन्न करना आवश्यक है, और ब्रह्मांड को अराजकता में डूबने से बचाने के लिए उन्हें प्रतिदिन मानव रक्त अर्पित करना चाहिए।
हमने बहुत पहले ही देवताओं में विश्वास करना छोड़ दिया है, और अब हम उन्हें बलि भी नहीं चढ़ाते। फिर भी दुनिया आज भी मौजूद है। इसमें कोई शक नहीं। बस अब हमें यह जानने का सौभाग्य नहीं है कि यह दुनिया पल भर में क्यों नहीं ढह जाती।

9

हम जो भी करते हैं, पीड़ा की आवश्यकता से प्रेरित होकर करते हैं। मोक्ष की हमारी खोज ही एक पीड़ा है, सबसे सूक्ष्म, सबसे अच्छी तरह से छिपी हुई पीड़ा।

यदि यह सच है कि मृत्यु के द्वारा हम फिर से वही बन जाते हैं जो हम अस्तित्व में आने से पहले थे, तो क्या उस शुद्ध संभावना को स्वीकार कर लेना, उससे विचलित न होना, बेहतर नहीं होता? इस भटकाव का क्या फायदा, जब हम हमेशा के लिए एक अवास्तविक पूर्णता में ही रह सकते थे?

एक बार जब मेरा शरीर मेरा साथ छोड़ दे, तो मैं सोचता हूँ कि अपने हाथों में इतनी सड़ी हुई लाश के साथ, मैं अपने अंगों के आत्मसमर्पण का मुकाबला कैसे करूँगा?

प्राचीन देवता मनुष्यों का उपहास करते थे, उनसे ईर्ष्या करते थे, कभी-कभी उनका पीछा करते थे और उन्हें सताते थे। सुसमाचारों में वर्णित ईश्वर कम उपहास करने वाला और कम ईर्ष्यालु था, और नश्वर मनुष्य अपनी विपत्तियों में भी उस पर दोषारोपण करने का सुख नहीं पाते थे। यही कारण है कि ईसाई एस्किल्स का अस्तित्व या तो न के बराबर है या असंभव है। एक अच्छे ईश्वर ने त्रासदी का नाश कर दिया है। साहित्य में ज़्यूस का स्थान इससे कहीं अधिक उचित था।

मुझे हमेशा से ही राजत्याग का डर सताता रहा है। लेकिन किस चीज का राजत्याग? अगर कभी मैंने "कोई खास इंसान" बनने की ख्वाहिश रखी भी थी, तो सिर्फ इस संतुष्टि के लिए कि एक दिन मैं भी चार्ल्स पंचम की तरह युस्टे में कह सकूं: "मैं अब कुछ भी नहीं हूं।"

प्रांतीय पत्रों में से कुछ को सत्रह बार तक पुनर्लिखित किया गया था। यह आश्चर्यजनक है कि पास्कल ने इतना समय और ऊर्जा उस विषय पर कैसे खर्च की, जिसमें आज हमारी रुचि नगण्य प्रतीत होती है। प्रत्येक वाद-विवाद पुराना हो जाता है— मनुष्यों के साथ किया गया प्रत्येक वाद-विवाद। पेंसेज़ में, बहस ईश्वर के साथ थी। यह बात आज भी हमें कुछ हद तक चिंतित करती है।

§

§

§

§

जब हम किसी को कोई रहस्य बताने की मूर्खता कर बैठते हैं, तो यह सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है कि वह इसे अपने तक ही रखेगा, वह है उसे मौके पर ही मार देना।

“बीमारियाँ, कुछ दिन में, कुछ रात में, अपने-अपने तरीके से मनुष्यों पर आती हैं, नश्वर प्राणियों को पीड़ा पहुँचाती हैं—चुपचाप, क्योंकि बुद्धिमान ज़्यूस ने उन्हें बोलने से वंचित कर दिया है” (हेसियोड)।
सौभाग्यवश, मूक होने के कारण वे पहले से ही असहनीय पीड़ादायक हैं—अगर वे वाचाल भी होते तो क्या होता? क्या हम कल्पना भी कर सकते हैं कि उनमें से कोई एक स्वयं को प्रकट करे? लक्षणों के बजाय, घोषणाएँ! ज़्यूस ने पहली बार कोमलता के संकेत दिखाए हैं।

बांझपन की अवधि में, व्यक्ति को शीतनिद्रा में चले जाना चाहिए, अपनी शक्ति को संरक्षित करने के लिए दिन-रात सोना चाहिए, बजाय इसके कि उसे आत्म-यातना और क्रोध में बर्बाद कर दे।

हम किसी की प्रशंसा तभी कर सकते हैं जब वह तीन-चौथाई गैर-जिम्मेदार हो— प्रशंसा का सम्मान से कोई लेना-देना नहीं है।

जिन लोगों से अत्यधिक घृणा की जाती है, उनका एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इस घृणा के समाप्त होने से ही व्यक्ति उन्हें सहन करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

§

§

§

§

मैं उस कब्रिस्तान में अकेला था, जहाँ से गाँव दिखाई देता था, तभी एक गर्भवती महिला अंदर आई। मैं तुरंत वहाँ से चला गया, ताकि उस शववाहक को करीब से न देखूँ, और न ही एक उग्र गर्भ और समय के साथ जर्जर हो चुकी कब्रों के बीच के अंतर पर विचार करूँ—एक झूठे वादे और सभी वादों के अंत के बीच के अंतर पर।

प्रार्थना करने की इच्छा का आस्था से कोई संबंध नहीं है। यह एक विशेष प्रकार की निराशा से उत्पन्न होती है और तब तक बनी रहती है, जब तक कि देवता और उनकी स्मृति हमेशा के लिए लुप्त न हो जाएं।

“कोई भी भाषा अपनी हार के अलावा किसी और चीज की उम्मीद नहीं कर सकती” (ग्रेगरी पालामास)।
साहित्य की इतनी कट्टर निंदा केवल एक रहस्यवादी से ही आ सकती है—अव्यक्त के एक पेशेवर से।

प्राचीन काल में, विशेषकर दार्शनिकों के बीच, लोग स्वेच्छा से दम घोंटने का सहारा लेते थे—वे तब तक सांस रोकते थे जब तक कि उनकी मृत्यु न हो जाए। मृत्यु का यह इतना सुरुचिपूर्ण और व्यावहारिक तरीका अब पूरी तरह से लुप्त हो चुका है, और यह कहना असंभव है कि यह कभी दोबारा प्रकट हो पाएगा।

यह बात बार-बार कही जा चुकी है: नियति की अवधारणा, जो परिवर्तन और इतिहास को मानती है, एक अपरिवर्तनीय सत्ता पर लागू नहीं होती। इसलिए हम ईश्वर की "नियति" की बात नहीं कर सकते।
सैद्धांतिक रूप से तो निःसंदेह हम ऐसा नहीं कर सकते। व्यवहार में, हम इसके अलावा कुछ नहीं करते, विशेष रूप से उन समयों में जब मान्यताएँ भंग हो रही

होती हैं, जब आस्था डगमगा रही होती है, जब कुछ भी समय की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, जब स्वयं ईश्वर भी इस व्यापक विघटन में समाहित हो जाते हैं।

एक बार जब हम लालसा करने लगते हैं, तो हम शैतान के अधिकार क्षेत्र में आ जाते हैं।

जीवन कुछ भी नहीं है; मृत्यु सब कुछ है। फिर भी, मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं है जो जीवन से स्वतंत्र हो। स्वायत्त, विशिष्ट वास्तविकता का यही अभाव मृत्यु को सार्वभौमिक बनाता है; इसका अपना कोई क्षेत्र नहीं है, यह सर्वव्यापी है, हर उस चीज की तरह जिसमें पहचान, सीमा और दिशा का अभाव है: एक अस्वाभाविक अनंतता।

परमानंद। अपनी स्वाभाविक मनोदशाओं और उनसे उत्पन्न विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ, किसी अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर, मैं अकारण ही आनंदित हो उठा। मैंने स्वयं को याद दिलाया कि यही वह आनंद है, जिसका स्रोत अज्ञात है, जो उन लोगों का अनुभव है जो कुछ करते हैं, प्रयास करते हैं, जो सृजन करते हैं। वे उस चीज़ पर विचार नहीं कर सकते और न ही करेंगे जो उन्हें वंचित करती है। और यदि वे करते भी, तो उसका कोई महत्व नहीं होता, जैसा कि उस यादगार दिन मेरे साथ हुआ था।

जिस बात पर टिप्पणी संभव ही नहीं, उस पर अनावश्यक अलंकरण क्यों करें? व्याख्या किया गया पाठ अब पाठ नहीं रह जाता। हम किसी विचार के साथ जीते हैं, उसका विश्लेषण नहीं करते; हम उससे जूझते हैं, संघर्ष के विभिन्न चरणों का वर्णन नहीं करते। दर्शन का इतिहास दर्शन का खंडन है।

§

§

§

§

§

कई वर्षों से कॉफी, शराब, तंबाकू के बिना... सौभाग्य से, चिंता मौजूद है, जो सबसे शक्तिशाली उत्तेजक पदार्थों का उपयोगी विकल्प है।

पुलिस राज्यों के खिलाफ सबसे बुरी निंदा यह है कि वे विवेक के नाम पर पत्रों और डायरियों को नष्ट करने के लिए बाध्य करते हैं, अर्थात् साहित्य में जो सबसे कम झूठा होता है उसे नष्ट कर देते हैं।

मन को सतर्क रखने के लिए निंदा उतनी ही प्रभावी साबित होती है जितनी कि कोई बीमारी: वही सतर्कता, वही स्थिर ध्यान, वही असुरक्षा, वही आत्म-यातना, वही नश्वर समृद्धि।

ज़ाहिर है, मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन लंबे समय से कुछ बनने की चाहत रखने के कारण मैं उस आकांक्षा, उस इच्छा को दबा नहीं पाता: वह अस्तित्व में है क्योंकि वह हमेशा से रही है, वह मुझे परेशान करती है और हावी रहती है, भले ही मैं उसे नकारता रहूँ। मैं उसे अपने अतीत में धकेलने की कितनी भी कोशिश करूँ, वह फिर से उठ खड़ी होती है और मुझे सताती है: कभी संतुष्ट न होने के कारण, उसने अपना अस्तित्व बरकरार रखा है और मेरे आदेशों को मानने का उसका कोई इरादा नहीं है। अपनी इच्छा और अपने आप के बीच फँसा हुआ, मैं क्या करूँ?

अपनी पुस्तक 'पैराडाइज की सीढ़ी' में संत जॉन क्लाइमेकस लिखते हैं कि एक अभिमानी भिक्षु को शैतान द्वारा सताए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है - वह स्वयं ही अपना शैतान है।
मैं X के बारे में सोचता हूँ, जिसका मठ में जीवन असफल रहा। संसार में अपनी पहचान बनाने और चमकने के लिए कोई भी इतना योग्य नहीं था। विनम्रता और आज्ञाकारिता के लिए अनुपयुक्त, उसने एकांत को चुना और उसमें ही उलझ गया। उसी संत के शब्दों में, "ईश्वर का प्रेमी" बनने के लिए उसमें कुछ भी नहीं

था। विडंबना यह है कि न तो कोई स्वयं अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है और न ही दूसरों की; कोई केवल अपने घावों को छुपा सकता है, भले ही अपनी नापसंद को न छुपा पाए।

बिना किसी महत्वाकांक्षा के जीवन जीना एक महान शक्ति और एक महान सौभाग्य है। मैं इसकी आकांक्षा रखता हूँ, लेकिन ऐसी आकांक्षा रखना भी महत्वाकांक्षा का ही एक हिस्सा है।

ध्यान का खाली समय वास्तव में एकमात्र "विपरीत" समय है। हमें खाली क्षणों को इकट्ठा करने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए—जो देखने में खाली लगते हैं, लेकिन वास्तव में भरे हुए होते हैं। ध्यान करना एक परम विश्राम है, जिसका रहस्य खो गया है।

नेक इरादे हमेशा संदेह के घेरे में रहते हैं। हर बार, हमें उन्हें करने पर पछतावा होता है। उनमें कुछ बनावटीपन, कुछ नाटकीयता, कुछ दिखावटीपन होता है। यह सच है कि हमें नीच इरादों वाले इरादों पर भी लगभग उतना ही पछतावा होता है।

अगर मैं अपने जीवन के किसी भी पल पर विचार करूं, चाहे वह कितना भी उथल-पुथल भरा हो या कितना भी शांत, तो क्या शेष रह जाता है? और अब उनमें क्या अंतर है? सब कुछ एक जैसा हो गया है, बिना किसी राहत और बिना किसी वास्तविकता के। जब मैंने कुछ भी महसूस नहीं किया, तब मैं सत्य के सबसे करीब था, मेरा मतलब है अपनी वर्तमान स्थिति के, जिसमें मैं अपने अनुभवों को याद कर रहा हूं। कुछ भी महसूस करने का क्या फायदा? ऐसी कोई "परमानंद" नहीं है जिसे न तो स्मृति और न ही कल्पना पुनर्जीवित कर सके!

अपने अंतिम क्षण से पहले कोई भी अपनी मृत्यु का पूरी तरह से उपयोग नहीं कर पाता: यहां तक कि जन्म से ही मृत्यु के योग्य व्यक्ति के लिए भी, मृत्यु में कुछ नवीनता होती है।

कबाला मत के अनुसार, ईश्वर ने आरंभ में आत्माओं की रचना की, और वे सभी उनके समक्ष उस रूप में विद्यमान थीं जो वे बाद में अपने अवतार में धारण करेंगी। प्रत्येक आत्मा, जब उसका समय आता है, तो उसे अपने लिए नियत शरीर में प्रवेश करने का आदेश प्राप्त होता है, लेकिन प्रत्येक आत्मा अपने सृष्टिकर्ता से इस बंधन और इस विकृति से मुक्ति दिलाने की व्यर्थ प्रार्थना करती है।
जब मेरी आत्मा की बारी आई, तो जो कुछ होना तय था, उसके बारे में मैं जितना अधिक सोचता हूँ, उतना ही मुझे एहसास होता है कि यदि कोई ऐसी आत्मा थी जिसने बाकियों की तुलना में अवतार लेने का सबसे अधिक विरोध किया होगा, तो वह मेरी ही थी।

हम संशयवादी को खारिज कर देते हैं, हम "संदेह की स्वचालितता" की बात करते हैं, जबकि हम कभी भी किसी आस्तिक के बारे में यह नहीं कहते कि वह "आस्था की स्वचालितता" में पड़ गया है। फिर भी, आस्था संदेह की तुलना में कहीं अधिक यांत्रिक है, जिसके पास आश्चर्य से आश्चर्य की ओर बढ़ने का बहाना होता है — यह सच है कि यह आंतरिक उलझन है।

हममें से प्रत्येक के भीतर मौजूद वह मंद प्रकाश, जो हमारे जन्म से पहले, सभी जन्मों से पहले से मौजूद है, उसी की रक्षा करनी होगी यदि हम उस दूरस्थ महिमा में पुनः जुड़ना चाहते हैं जिससे हम कभी नहीं जान पाएंगे कि हम क्यों अलग हुए थे।

मुझे कभी भी सच्ची खुशी या संतुष्टि का कोई भी अहसास इस विचार के बिना नहीं हुआ कि यही वह क्षण है जब—अभी या कभी नहीं—मुझे हमेशा के लिए गायब हो जाना चाहिए।

एक ऐसा क्षण आता है जब तत्वमीमांसा और शौकियापन के बीच, अथाह और किस्सों के बीच चुनाव करना व्यर्थ प्रतीत होता है।

ईसाई धर्म की तुलना में मूर्तिपूजा में आई गिरावट को सटीक रूप से मापने के लिए, हमें केवल आत्महत्या पर चर्च के पिताओं की मार्मिक टिप्पणियों की तुलना प्लिनी, सेनेका और यहां तक कि सिसरो द्वारा इसी विषय पर दिए गए विचारों से करने की आवश्यकता है।

हम जो कहते हैं उसका क्या अर्थ है? क्या हमारी बातचीत में निहित इन कथनों की श्रृंखला का कोई अर्थ है? और क्या इन कथनों का, एक-एक करके, कोई उद्देश्य है? हम तभी बात कर सकते हैं जब हम इस प्रश्न को एक तरफ रख दें, या इसे यथासंभव कम बार उठाएँ।

“सब कुछ भाड़ में जाए”—अगर ये शब्द, भले ही एक बार ही सही, ठंडे दिमाग से, इनके अर्थ की पूरी जागरूकता के साथ कहे गए हों, तो इतिहास न्यायसंगत है और इसके साथ ही हम सब भी।

“धिक्कार है तुम पर, जब सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करें!” यहाँ यीशु मसीह अपने अंत की भविष्यवाणी कर रहे थे। अब सब लोग उनकी प्रशंसा करते हैं, यहाँ तक कि कट्टर अविश्वासी भी—वे तो सबसे अधिक। यीशु भली-भांति जानते थे कि एक दिन उन्हें सर्वत्र स्वीकृति प्राप्त होगी।

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

§

एक क्षण के लिए, मुझे लगा कि मैंने अनुभव किया कि ब्रह्म में विलीन होने का वेदांत के ज्ञाता के लिए क्या अर्थ हो सकता है। काश वह क्षण अनंत काल तक बना रहता!

मैंने संदेह में ही चिंता का उपाय खोजने की कोशिश की। उपाय का अंत बीमारी के साथ सांठगांठ करने में हुआ।

“यदि कोई सिद्धांत फैलता है, तो इसका कारण स्वर्ग की यही इच्छा है” (कन्फ्यूशियस)।
...जैसा कि मैं हर बार यह मानना चाहूंगा कि, किसी विजयी अपवाद का सामना करते हुए, मेरा क्रोध उन्माद की सीमा तक पहुंच जाता है।

मैंने कितने ही कट्टरपंथियों, चरमपंथियों और पतित लोगों को देखा है! यह सोचकर एक तरह की राहत मिलती है, मानो चरम सुख के समान, कि अब कभी किसी भी मकसद को नहीं अपनाना पड़ेगा...

क्या वह कोई कलाबाज है? या कोई ऑर्केस्ट्रा कंडक्टर जो इस विचार में खो गया हो? वह झटपट आता है, फिर शांत हो जाता है, लयबद्ध ताल को धीमी और धीमी ताल में बदलता रहता है, मानो वह फकीरों या धोखेबाजों की तरह अपने आप पर पूरी तरह से नियंत्रण रखता हो। बोलते समय ऐसा लगता है मानो वह कुछ खोज रहा हो, पर कोई नहीं जानता कि क्या: वह विचारक की नकल करने की कला में माहिर है। अगर वह एक भी बात स्पष्ट रूप से कह दे, तो वह खो जाएगा। चूंकि वह अपने श्रोताओं की तरह ही इस बात से अनभिज्ञ है कि वह क्या कहना चाहता है या क्या चाहता है, इसलिए वह घंटों तक बोलता रह सकता है, फिर भी उसके श्रोताओं की हैरानी कम नहीं होती।

अपने समय के विपरीत जीवन जीना एक सौभाग्य है। हर पल यह एहसास रहता है कि हम दूसरों से अलग सोचते हैं। यह तीव्र भिन्नता, चाहे कितनी भी दयनीय या निरर्थक क्यों न लगे, फिर भी एक दार्शनिक महत्व रखती है जिसे घटनाओं के अनुरूप चिंतन में खोजना असंभव है।

“इसका कोई इलाज नहीं है,” नब्बे वर्षीय महिला मेरी हर बात पर, मेरे हर चिल्लाने पर, चाहे वह वर्तमान, भविष्य या घटनाओं के क्रम के बारे में हो, यही दोहराती रही…
उससे कोई और प्रतिक्रिया मिलने की उम्मीद में, मैंने अपनी आशंकाओं, शिकायतों और परेशानियों को उसके सामने रखा। लेकिन मुझे केवल एक ही जवाब मिला, "कोई उपाय नहीं।" मेरा धैर्य टूट गया और मैं खुद से और उससे चिढ़कर वहाँ से चला गया। एक मूर्ख पर भरोसा करना कितनी बड़ी मूर्खता थी!
बाहर, बिल्कुल उलटी स्थिति: "लेकिन बुढ़िया सही कह रही थी। मैं यह समझने में कैसे असफल हो गया कि उसकी बात में सच्चाई थी, निःसंदेह सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई, क्योंकि जो कुछ भी घटित होता है वह इसे प्रमाणित करता है और हमारे भीतर सब कुछ इसे नकारता है?"

10

दो प्रकार की अंतर्ज्ञान शक्तियां: मौलिक (होमर, उपनिषद, लोककथाएं) और विलंबित (महायान बौद्ध धर्म, रोमन स्टोइसिज़्म, अलेक्जेंड्रियाई

ज्ञानवाद)। पहली चमक और मंद होती रोशनी। चेतना का जागरण और जागृत होने की सुस्ती।

यदि यह सत्य है कि जो नष्ट हो जाता है उसका कभी अस्तित्व ही नहीं था, तो नाशवान का स्रोत, जन्म, शेष सब की तरह ही नगण्य है।

व्यंजनाओं से सावधान रहें! वे उस भयावहता को और भी बढ़ा देती हैं जिसे वे छुपाने का प्रयास करती हैं। फ्रांसीसियों की तरह "मृतक" या "मरे हुए व्यक्ति" के स्थान पर "लापता" शब्द का प्रयोग करना मुझे बेतुका, यहाँ तक कि पागलपन लगता है।

जब मनुष्य अपनी नश्वरता को भूल जाता है, तो वह महान कार्य करने के लिए प्रेरित होता है और कभी-कभी सफल भी हो जाता है। यह विस्मृति, जो अतिभोग का परिणाम है, साथ ही साथ उसके दुखों का कारण भी बनती है। "नश्वर, नश्वर की तरह सोचो।" प्राचीन काल ने एक दुखद विनम्रता का आविष्कार किया था।

रोमन सम्राटों की सभी घुड़सवार मूर्तियों में से, बर्बर आक्रमणों और युगों के क्षरण से बची एकमात्र मूर्ति मार्कस ऑरेलियस की है - जो सभी में सबसे कम "सम्राट" थे और जो किसी भी अन्य स्थिति में खुद को ढाल लेते।

मन में ढेर सारी योजनाएँ लिए मैं उठा और मुझे पूरा यकीन था कि मैं पूरी सुबह काम करता रहूँगा। जैसे ही मैं अपनी डेस्क पर बैठा, एक घिनौनी, नीच और लुभावनी बात मेरे मन में आई: "इस दुनिया से तुम क्या उम्मीद करते हो?" और हमेशा की तरह, मैं कोई जवाब पाने और फिर से सोने की उम्मीद में अपने बिस्तर पर लौट गया।

§

§

§

§

§

§

एक पाखंडी, एक "धोखेबाज," जो इस बात से अवगत है और इसलिए एक आत्म-दर्शक है, स्वाभाविक रूप से गुणों से परिपूर्ण और एकसमान स्थिर मन की तुलना में ज्ञान में अधिक उन्नत होता है।

जिस किसी के पास शरीर है, उसे पापी कहलाने का अधिकार है। यदि वह आत्मा से भी ग्रसित है, तो ऐसा कोई अभिशाप नहीं है जिसका वह दावा न कर सके।

हम उस व्यक्ति से कैसे बात करें जिसने सब कुछ खो दिया है? हम किस भाषा का प्रयोग करें? सबसे अस्पष्ट और अनिश्चित भाषा ही सबसे प्रभावी होती है।

अफसोस की सर्वोच्चता: जिन कार्यों को हमने नहीं किया है, वे इस तथ्य से ही हमारे मन को सताते रहते हैं और हम लगातार उनके बारे में सोचते रहते हैं, और यही हमारी चेतना की एकमात्र सामग्री बन जाते हैं।

कभी-कभी मेरी इच्छा होती है कि मैं नरभक्षी होता—किसी को खाने के आनंद के लिए नहीं, बल्कि उसे उल्टी करके बाहर निकालने के आनंद के लिए।

अब पुरुष नहीं बनना चाहता..., असफलता के एक और रूप का सपना देख रहा हूँ।

जब भी आप किसी निर्णायक मोड़ पर हों, सबसे अच्छा यही होता है कि लेट जाएं और समय बीतने दें। खड़े होकर लिए गए संकल्प व्यर्थ होते हैं: वे या तो

अहंकार या भय से प्रेरित होते हैं। लेटे हुए भी हम इन दोनों विपत्तियों को जानते हैं, लेकिन अधिक क्षीण और अधिक क्षणभंगुर रूप में।

जब कोई शिकायत करता है कि उसका जीवन व्यर्थ हो गया है, तो हमें बस उसे यह याद दिलाना चाहिए कि जीवन स्वयं भी इसी तरह की स्थिति में है, या शायद इससे भी बदतर स्थिति में है।

कृतियाँ मर जाती हैं: अधूरी रचनाएँ, जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता, वे भी नहीं मर सकतीं।

सहायक तत्वों का भय मुझे पंगु बना देता है। सहायक तत्व संचार (और इसलिए विचार) का सार हैं, वे वाणी और लेखन का मांस और रक्त हैं। उनका त्याग करने का प्रयास कंकाल के साथ व्यभिचार करने के समान है।

किसी कार्य को पूरा करने से हमें जो संतुष्टि मिलती है (विशेषकर तब जब हमें उस कार्य में कोई विश्वास नहीं होता और हम उसे तुच्छ भी समझते हैं) वह दर्शाती है कि हम किस हद तक अभी भी आम लोगों के समूह का हिस्सा हैं।

मेरी खूबी पूरी तरह से अप्रभावी होना नहीं है, बल्कि अप्रभावी होने की इच्छा रखना है।

अगर मैं अपनी उत्पत्ति को नकारता नहीं हूं, तो इसका कारण यह है कि अंततः कुछ होने का दिखावा करने से बेहतर कुछ भी न होना है।

§

§

§

§

§

§

यह पल अब भी मेरा ही है, गुज़र जाता है, मुझसे दूर चला जाता है और हमेशा के लिए दफ़न हो जाता है। क्या मैं अगले पल के लिए खुद को समर्पित करूँगी? मैं मन बना लेती हूँ: यह यहीं है, यह मेरा है—और बहुत पहले ही बीत चुका है। सुबह से रात तक, अतीत को गढ़ती रहती हूँ!

रहस्यवादियों के बीच हर संभव प्रयास करने के बाद भी जब उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ, तो उनके पास केवल एक ही उपाय बचा था: ज्ञान की खोज में डूब जाना...

जब आप तथाकथित दार्शनिक प्रश्न पूछते हैं और अनिवार्य शब्दावली का प्रयोग करते हैं, तो आप एक श्रेष्ठ, आक्रामक रवैया अपना लेते हैं, और यह उस क्षेत्र में होता है जहाँ, अनसुलझे प्रश्नों के लिए विनम्रता अनिवार्य है। यह विसंगति मात्र दिखावटी है: आप जितने कठिन प्रश्नों का सामना करते हैं, उतना ही आप अपना आपा खो बैठते हैं: अंततः आप स्वयं को उन्हीं प्रश्नों के अनुरूप ढाल लेते हैं। यदि धर्मशास्त्रियों का अहंकार दार्शनिकों के अहंकार से भी अधिक घृणित है, तो इसका कारण यह है कि वे ईश्वर के प्रति निर्दयतापूर्वक चिंता व्यक्त करने लगते हैं: वे ईश्वर के कुछ गुणों को स्वयं पर थोपने की हद तक पहुँच जाते हैं—निःसंदेह, सबसे बुरे गुण।

मन जब स्वयं से और संसार से संतुष्ट हो जाता है, तो वह क्षीण हो जाता है। यह जरा सी भी विपरीतता से पनप उठता है। विचार वास्तव में हमारी शर्मिंदगी और अपमान का निर्लज्ज शोषण मात्र है।

यह शरीर, जो कभी वफादार था, अब मुझे नकारता है, मेरा साथ नहीं देता, मेरा साथी नहीं रहा। ठुकराया हुआ, धोखा खाया हुआ, त्यागा हुआ, मेरा क्या होगा अगर पुरानी कमजोरियाँ, अपनी वफादारी साबित करने के लिए, दिन-रात हर पल मेरा साथ देने न आएँ?

§

§

§

§

§

प्रगति की अवधारणा के बिना हमारा काम नहीं चल सकता, फिर भी यह हमारा ध्यान आकर्षित नहीं करती। यह जीवन के "अर्थ" की तरह है। जीवन का कोई अर्थ तो होना ही चाहिए। लेकिन क्या ऐसा कोई अर्थ है जो जांच करने पर हास्यास्पद न निकले?

पेड़ों का कत्लेआम हो रहा है, घर जलकर राख हो रहे हैं—हर जगह चेहरे ही चेहरे। इंसान फैल रहा है। इंसान धरती का कैंसर है।

मृत्यु की धारणा में कुछ ऐसा है जो आपको घेर लेता है और मोहकता पैदा करता है: यह आपको गर्माहट देता है।

एक गुफावासी जो तृप्ति के सभी सूक्ष्म अनुभवों से गुजर चुका होगा...

खुद की बदनामी करने का आनंद, बदनामी झेलने के आनंद से कहीं अधिक होता है।

मैं सबसे बेहतर यह जानता हूँ कि हर चीज़ की लालसा के साथ जन्म लेने का खतरा क्या है। यह एक विषैला वरदान है, ईश्वर की मर्ज़ी का बदला। इस बोझ से दबकर मैं आध्यात्मिक स्तर पर कहीं नहीं पहुँच सका, बेशक, यही एकमात्र स्तर है जो मायने रखता है। मेरी यह असफलता महज़ संयोग नहीं है, बल्कि यह मेरे मूल स्वभाव से जुड़ी हुई है।

रहस्यवादी और उनके “संग्रहित रचनाएँ।” जब कोई व्यक्ति ईश्वर को, और केवल ईश्वर को ही संबोधित करता है, जैसा कि वे दावा करते हैं, तो उसे लिखने से बचना चाहिए। ईश्वर पढ़ता नहीं है…

जब भी मैं सार तत्व के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे वह मौन या विस्फोट में, स्तब्धता या विस्मय में ही दिखाई देता है। कभी भी वाणी में नहीं।

जब आप दिनभर जन्म के दुर्भाग्य पर चिंतन करते रहते हैं, तो आपकी हर योजना और हर कार्य व्यर्थ और निरर्थक प्रतीत होता है। आप उस पागल की तरह हो जाते हैं जो ठीक होने के बाद भी केवल उसी संकट के बारे में सोचता रहता है जिससे वह बाहर निकला है, उस "सपने" के बारे में जिसे वह पीछे छोड़ आया है; वह बार-बार उसी सपने की ओर लौटता रहता है, जिससे उसका ठीक होना उसके लिए किसी काम का नहीं रह जाता।

कुछ लोगों के लिए कष्ट सहने की लालसा वही है जो दूसरों के लिए लाभ का आकर्षण है।

मनुष्य की शुरुआत ही गलत हुई थी। स्वर्ग में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना उसका पहला परिणाम थी। बाकी सब तो होना ही था।

मुझे यह कभी समझ नहीं आएगा कि हम यह जानते हुए कैसे जी सकते हैं कि हम अमर नहीं हैं—कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है!

आदर्श प्राणी? हास्य से ग्रस्त एक देवदूत।

इच्छा, घृणा और शांति से संबंधित कई प्रश्नों के बाद जब बुद्ध से पूछा गया: "निर्वाण का लक्ष्य, उसका अंतिम अर्थ क्या है?" तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वे मुस्कुराए। उस मुस्कान पर बहुत चर्चा हुई है, उसे एक निरर्थक प्रश्न पर सामान्य प्रतिक्रिया मानने के बजाय। हम भी ऐसा ही करते हैं जब कोई बच्चा हमसे पूछता है, "क्यों?" हम मुस्कुराते हैं, क्योंकि कोई उत्तर संभव नहीं होता, क्योंकि उत्तर प्रश्न से भी अधिक अर्थहीन होगा। बच्चे किसी भी चीज़ की सीमा नहीं मानते; वे हमेशा आगे देखना चाहते हैं, यह देखना चाहते हैं कि उसके बाद क्या है। लेकिन उसके बाद कुछ नहीं है। निर्वाण एक सीमा है, परम सीमा। यह पुनरावृत्ति है, परम गतिरोध है...

शोरगुल के आगमन से पहले, यानी नवपाषाण युग से पहले, अस्तित्व में शायद कुछ आकर्षण रहा होगा। वह मनुष्य कब आएगा जो हमें सभी मनुष्यों से मुक्ति दिलाएगा?

हम खुद से चाहे जो भी कहें कि हम एक मृत शिशु से ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहेंगे, लेकिन पहले अवसर पर ही वहां से निकल जाने के बजाय, हम पागलों जैसी ऊर्जा के साथ एक और दिन जीने की कोशिश करते रहते हैं।

स्पष्टता जीने की इच्छा को खत्म नहीं करती - बल्कि इसके विपरीत, स्पष्टता हमें जीवन के लिए अनुपयुक्त बना देती है।

ईश्वर: एक ऐसी बीमारी जिससे हम यह मान लेते हैं कि हम ठीक हो चुके हैं क्योंकि आजकल इससे कोई मरता नहीं है।

§

§

§

§

§

तरह नष्ट हो जाता है। एक बार फिर, यह केवल हमारी आँखें खोलने का काम करता है।

उस आदमी ने अपनी बात कह दी है। उसे अब आराम करना चाहिए। लेकिन वह मना कर देता है, और हालांकि वह अपने "उत्तरजीविता" चरण में प्रवेश कर चुका है, फिर भी वह ऐसे बेचैन रहता है मानो वह एक शानदार करियर की दहलीज पर खड़ा हो।

एक चीख का अर्थ केवल एक सृजित ब्रह्मांड में ही होता है। यदि कोई सृष्टिकर्ता नहीं है, तो स्वयं पर ध्यान आकर्षित करने का क्या लाभ?

नर्वल: "प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड पहुँचकर, मेरे मन में आत्महत्या करने का विचार आया।" फ्रांसीसी साहित्य में किसी भी अन्य वाक्य ने मुझे इतना परेशान नहीं किया जितना इस वाक्य ने।

हर चीज़ में, केवल आरंभ और परिणाम ही मायने रखते हैं, करना और न करना। अस्तित्व की ओर जाने का मार्ग और अस्तित्व से बाहर निकलने का मार्ग—यही साँस लेना है, जबकि अस्तित्व स्वयं में एक घुटन पैदा करने वाला है।

समय बीतने के साथ, मुझे यकीन हो गया है कि मेरे शुरुआती साल स्वर्ग समान थे। लेकिन मैं निश्चित रूप से गलत हूँ। अगर कभी स्वर्ग था भी, तो मुझे उसे अपने जीवन के सभी वर्षों से पहले ही खोजना होगा।

एक सुनहरा नियम: अपनी एक अधूरी छवि छोड़ जाना...

§

§

§

§

§

§

§

§

§

उचित नहीं होगा। वास्तव में, संकेत स्पष्ट होते हैं, लेकिन हममें वह एकमात्र उचित कार्य करने की पर्याप्त शक्ति नहीं होती जो एक जीवित व्यक्ति कर सकता है।

हमारी शारीरिक पीड़ाएँ हमें कुछ आत्मविश्वास के साथ भविष्य की कल्पना करने में मदद करती हैं: वे हमें अत्यधिक पीड़ा पहुँचाने से बचाती हैं, वे हमारी इस क्षमता की परीक्षा लेती हैं कि हमारी किसी भी दीर्घकालिक परियोजना को हमारी सारी उपलब्ध ऊर्जा को समाप्त करने का समय न मिले।

साम्राज्य का पतन हो रहा था, बर्बर लोग आगे बढ़ रहे थे... इस युग से भागने के अलावा और क्या किया जा सकता था? वह सुखद क्षण था जब जाने के लिए अभी भी जगह थी, जब वीरान जगहें सुलभ और स्वागतयोग्य थीं! हमसे सब कुछ छीन लिया गया, यहाँ तक कि रेगिस्तान भी।

जिस व्यक्ति को दिखावे को उजागर करने की बुरी आदत पड़ गई हो, उसके लिए घटना और गलतफहमी पर्यायवाची हैं। सार को समझना खेल को त्यागने के समान है, हार स्वीकार करने के समान है।

एक्स का खुद की तुलना "ज्वालामुखी" से करना निस्संदेह सही है, लेकिन इसके विवरण में जाना गलत है।

धन के बारे में निरंतर सोचते रहने से गरीब लोग गैर-संपत्ति के आध्यात्मिक लाभों को खो बैठते हैं, जिससे वे धनियों के समान ही निम्न स्तर पर पहुँच जाते हैं।

§

§

§

§

§

जब चीजों को यथार्थ रूप में देखने की आदत एक जुनून में बदल जाती है, तो हम उस पागल व्यक्ति पर पछताते हैं जो हम कभी थे और अब नहीं हैं।

11

जिस व्यक्ति को हम अत्यंत सम्मान देते हैं, वह हमारे और करीब तब आता है जब वह कोई ऐसा कार्य करता है जो उसके आदरणीय नहीं होता—इस प्रकार वह हमें श्रद्धा के बोझ से मुक्त कर देता है। और उसी क्षण से हम उसके प्रति सच्चा लगाव महसूस करने लगते हैं।

कायरता के कारण हम जो अशिष्टता और नीचतापूर्ण व्यवहार करते हैं, उससे बुरा कुछ नहीं है।

एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, नील नदी और पिरामिडों को देखते हुए, फ्लाउबर्ट के मन में नॉर्मंडी के अलावा और कुछ नहीं था—भविष्य की मैडम बोवरी के परिदृश्य और तौर-तरीकों के अलावा और कुछ नहीं। उनके लिए मानो यही अस्तित्व था। कल्पना करना स्वयं को सीमित करना है, खुद को अलग करना है: अस्वीकृति की अत्यधिक क्षमता के बिना, कोई योजना नहीं, कोई काम नहीं, कुछ भी साकार करने का कोई तरीका नहीं।

मुझे किसी भी प्रकार की जीत इतनी अपमानजनक लगती है कि मैं किसी भी परिस्थिति में, केवल गुप्त लाभ प्राप्त करने के दृढ़ इरादे से ही युद्ध कर सकता हूँ। मैं उस अवस्था से आगे निकल चुका हूँ जहाँ प्राणियों का कोई महत्व नहीं रह गया है, और मुझे ज्ञात संसारों में संघर्ष करने का कोई कारण नहीं दिखता।

दर्शनशास्त्र की शिक्षा केवल सार्वजनिक सभाओं में, बगीचों में या घरों में ही दी जाती है। व्याख्यान की कुर्सी दर्शनशास्त्र की कब्र है, किसी भी जीवंत विचार की मृत्यु है, और मंच शोकग्रस्त मन का प्रतीक है।

मेरी इच्छाओं का अभी भी होना यह साबित करता है कि मुझे वास्तविकता का सटीक ज्ञान नहीं है, मैं विचलित हूँ, मैं सत्य से हज़ारों मील दूर हूँ। धम्मपद में हम पढ़ते हैं, “मनुष्य इच्छाओं का शिकार केवल इसलिए होता है क्योंकि वह चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में नहीं देखता।”

मैं गुस्से से कांप रहा था: मेरी इज्जत दांव पर लगी थी। घंटे बीतते गए, भोर होने वाली थी। क्या मैं एक छोटी सी बात पर अपनी रात बर्बाद करने वाला था? मैंने घटना को कम करके आंकने की बहुत कोशिश की, लेकिन खुद को शांत करने के लिए मैंने जो भी बहाने बनाए, वे बेअसर रहे। किसी की हिम्मत कैसे हुई मेरे साथ ऐसा करने की! मैं खिड़की खोलकर पागलों की तरह चीखने ही वाला था, तभी अचानक मेरे मन में लट्टू की तरह घूमती हुई धरती की छवि कौंध गई। मेरा गुस्सा तुरंत शांत हो गया।

मृत्यु पूरी तरह से व्यर्थ नहीं है: आखिरकार, मृत्यु के कारण ही हम जन्मपूर्व के उस स्थान को पुनः प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारा एकमात्र स्थान है...

§

§

§

§

§

§

प्रत्येक के भीतर के मनोवैज्ञानिक और प्रयोगकर्ता को जगा देती है: हम देखना चाहते हैं कि हम असहनीयता की सीमा तक कहाँ तक जा सकते हैं।

बीमारी के सामने अन्याय क्या है? सच है, बीमार होना अन्यायपूर्ण लग सकता है। और यही वह तरीका है जिससे हममें से हर कोई प्रतिक्रिया करता है, बिना यह सोचे कि वह सही है या गलत। बीमारी, रोग से ज़्यादा वास्तविक कुछ नहीं है। अगर हम इसे अन्यायपूर्ण कहते हैं, तो हमें अस्तित्व के साथ भी ऐसा ही करने का साहस करना होगा—हमें अस्तित्व के अन्याय की बात करनी होगी।

सृष्टि अपने मूल स्वरूप में बहुत कम थी; उसमें छेड़छाड़ करने से उसका मूल्य और भी कम हो गया। काश, उसे उसके मूल स्वरूप, उसकी मौलिक शून्यता में ही रहने दिया जाता! आने वाला मसीहा—वास्तविक मसीहा—स्वरूप प्रकट होने में स्वाभाविक रूप से देरी कर रहा है। उसके सामने जो कार्य है वह आसान नहीं होगा: वह मानवता को सुधार के उन्माद से कैसे मुक्ति दिलाएगा?

जब हम खुद से बहुत ज्यादा अभ्यस्त हो जाते हैं और खुद से नफरत करने लगते हैं, तो जल्द ही हमें एहसास होता है कि हमारी हालत और भी खराब हो गई है, और खुद से नफरत वास्तव में खुद से लगाव को मजबूत करती है।

मैं उसे बीच में नहीं टोकता, मैं उसे हर व्यक्ति के गुणों का आकलन करने देता हूँ, और उसके मुझे डांटने का इंतज़ार करता हूँ... दूसरों को न समझ पाना आश्चर्यजनक है। सूक्ष्म और भोला, वह आपको ऐसे परखता है मानो आप कोई इकाई या श्रेणी हों। समय का उस पर कोई प्रभाव नहीं है, वह यह स्वीकार नहीं कर सकता कि मैं उसके वर्जित दायरे से बाहर हूँ, कि उसकी पसंद की कोई भी बात अब मुझे प्रभावित नहीं करती। जो व्यक्ति समय के प्रवाह से परे हो, उससे बातचीत

करना व्यर्थ है। मैं अपने प्रियजनों से प्रार्थना करता हूँ कि वे बुढ़ापे को भी स्वीकार करें।

किसी भी चीज के सामने घबराहट—मौजूदगी की, शून्य की, किसी भी चीज की। मौलिक घबराहट।

ईश्वर है, भले ही वह न हो।

डी बुराई को आत्मसात करने में असमर्थ है। वह इसके अस्तित्व को स्वीकार तो करता है, लेकिन इसे अपने मन में समाहित नहीं कर पाता। यदि वह नरक से बाहर आ भी जाए, तो उसे अपने ठिकाने का भी पता नहीं चलेगा, क्योंकि उसका चिंतन बुराई से इतना दूर है... उसके विचारों में उसके द्वारा सहे गए कष्टों का जरा सा भी अंश नहीं है। कभी-कभी उसमें कुछ प्रतिक्रियाएँ होती हैं—बस इतना ही—एक घायल व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ। नकारात्मकता के प्रति उदासीन होने के कारण, वह यह नहीं समझ पाता कि हमारे पास जो कुछ भी है, वह केवल अस्तित्वहीनता का भंडार है। फिर भी, उसके कई हाव-भाव अनजाने में ही एक राक्षसी भावना को प्रकट करते हैं। वह अच्छाई द्वारा छिपाया और शुद्ध किया गया एक विनाशक है।

असफलता की ओर अपनी प्रगति को मापने की जिज्ञासा ही एकमात्र कारण है जिसके चलते हम बूढ़े होते हैं। हमने सोचा था कि हम अपनी सीमा तक पहुँच गए हैं, हमने सोचा था कि क्षितिज हमेशा के लिए अवरुद्ध हो गया है, हम अपनी निराशा के चंगुल में विलाप करते रहे। और अब हमें एहसास होता है कि हम और भी नीचे गिर सकते हैं, कि कुछ नया है, कि सारी आशा समाप्त नहीं हुई है, कि थोड़ा और नीचे डूबना संभव है और इस प्रकार अटक जाने, यहाँ तक कि लकवाग्रस्त हो जाने के खतरे को टाला जा सकता है...

§

§

§

§

§

हृदयविदारक है, और मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा। अब से, अत्यधिक एकांत के क्षणों में, मुझे बस उन ध्वनियों को याद करने की आवश्यकता होगी और मुझे एक समुदाय से जुड़ाव का एहसास होगा।

हार स्पष्ट होते ही हिटलर ने जीत के सिवा कुछ नहीं कहा। उसे जीत पर पूरा भरोसा था—कम से कम उसका व्यवहार तो ऐसा ही था—और अंत तक वह अपने आशावाद और विश्वास में डूबा रहा। उसके चारों ओर सब कुछ बिखर रहा था, हर दिन उसकी उम्मीदें टूट रही थीं, लेकिन असंभव पर भरोसा बनाए रखते हुए, खुद को इस तरह अंधा करते हुए जैसे कोई असाध्य ही हो सकता है, उसमें अंत तक आगे बढ़ने, एक के बाद एक भयानक घटनाएँ रचने और अपने पागलपन से भी आगे, यहाँ तक कि अपनी नियति से भी आगे बढ़ने की शक्ति थी। इसीलिए हम उसके बारे में—उस व्यक्ति के बारे में जो पूरी तरह असफल रहा—कह सकते हैं कि उसने खुद को किसी भी अन्य इंसान से बेहतर समझा।

“Aprà moi le déluge” हर व्यक्ति का अघोषित आदर्श वाक्य है: यदि हम यह स्वीकार करते हैं कि दूसरे हमसे बच जाएंगे, तो यह इस आशा में होता है कि उन्हें इसके लिए दंडित किया जाएगा।

एक प्राणीविज्ञानी ने गोरिल्लाओं को उनके प्राकृतिक आवास में देखकर उनके जीवन की एकरूपता और उनकी असीम निष्क्रियता को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। घंटों तक कुछ भी न करना... क्या उन्हें ऊब का अनुभव नहीं होता था?
यह सवाल वाकई एक इंसान, एक व्यस्त प्राणी द्वारा उठाया गया है। जानवर नीरसता से भागने के बजाय, उसे तरसते हैं, और सबसे ज्यादा उन्हें यही डर सताता है कि कहीं वह खत्म न हो जाए। क्योंकि नीरसता के खत्म होते ही डर जन्म लेता है, जो तमाम गतिविधियों का मूल कारण है।
निष्क्रियता दैवीय है; फिर भी मनुष्य ने निष्क्रियता के विरुद्ध ही विद्रोह किया है। प्रकृति में केवल मनुष्य ही एकरसता सहन करने में असमर्थ

§

§

§

§

§

था, और अभी। … मैंने एक के बाद एक कई अनुमानों को छोड़ दिया: यह बीमारी नहीं हो सकती; कोई लक्षण नहीं जिस पर भरोसा किया जा सके। मैं क्या करता? मैं उलझन में था, मुझे कोई स्पष्टीकरण नहीं मिल रहा था, तभी मेरे मन में एक विचार आया—और इससे मुझे सचमुच राहत मिली—कि जो मैं महसूस कर रहा था वह बस अंतिम ठंड का एक रूप था—कि यह बस मृत्यु का अभ्यास था, पूर्वाभ्यास था…।

स्वर्ग में, चारों ओर से प्रकाश से घिरे होने के कारण, वस्तुएँ और प्राणी कोई छाया नहीं बनाते। इसका अर्थ यह है कि उनमें वास्तविकता का अभाव होता है, ठीक वैसे ही जैसे अंधकार से अछूती और मृत्यु से परित्यक्त किसी भी चीज़ में होता है।

हमारी पहली अंतर्ज्ञान ही सच्ची होती है। जवानी के शुरुआती दिनों में मैंने जिन चीजों के बारे में सोचा था, वे अब मुझे उत्तरोत्तर सही प्रतीत होती हैं, और इतने सारे भटकावों और बाधाओं के बाद, अब मैं उन्हीं की ओर लौटता हूँ, इस बात से दुखी होकर कि मैं उन अंतर्दृष्टियों के विनाश पर अपना जीवन कैसे खड़ा कर सकता था।

मुझे कोई स्थान तभी याद रहता है जब मुझे वहां घोर दुख का अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

स्ट्रीट फेयर में, एक करतब दिखाने वाले को मुंह बनाते, चिल्लाते और खुद को थकाते हुए देखकर, मैंने खुद से कहा कि वह अपना कर्तव्य निभा रहा है, जबकि मैं अपने कर्तव्य से भाग रहा था...

किसी भी क्षेत्र में स्वयं को प्रकट करना, कुछ हद तक छद्मवेश में कट्टरपंथी की विशेषता है। यदि हम स्वयं को किसी मिशन से ग्रस्त नहीं मानते, तो अस्तित्व कठिन है; कर्म असंभव।

मोक्ष का कोई अस्तित्व नहीं, यह निश्चितता ही एक प्रकार का मोक्ष है, वास्तव में यह मोक्ष ही है। यहीं से शुरुआत करते हुए, हम अपने जीवन को व्यवस्थित कर सकते हैं और इतिहास का एक दर्शन भी गढ़ सकते हैं: अनसुलझे को ही समाधान के रूप में, एकमात्र उपाय के रूप में…

मेरी कमजोरियों ने मेरे अस्तित्व को बिगाड़ दिया है, लेकिन इन्हीं कमजोरियों की बदौलत मेरा अस्तित्व है, इन्हीं की बदौलत मैं अपने अस्तित्व की कल्पना करता हूँ।

मनुष्य में मेरी रुचि तभी से जागृत हुई है जब से उसने स्वयं पर विश्वास करना छोड़ दिया है। जब वह उत्थान के दौर में था, तब वह केवल उदासीनता का पात्र था। अब वह एक नई भावना, एक विशेष सहानुभूति, करुणामय भय को जन्म देता है।

मैंने तमाम अंधविश्वासों और बंधनों से खुद को मुक्त कर लिया है, फिर भी मैं खुद को एक स्वतंत्र व्यक्ति नहीं मान सकता, जो हर चीज से अलग हो। अन्य जुनूनों से उबरने के बाद भी, त्याग की तीव्र इच्छा मेरा पीछा नहीं छोड़ती: यह मुझे सताती है, यह बनी रहती है, यह मुझसे लगातार त्याग करने, पीछे हटने की मांग करती है। लेकिन किससे? अब क्या बचा है जिसे मैं त्याग सकूँ? मैं इस प्रश्न पर विचार करता हूँ। मेरी भूमिका समाप्त हो गई है, मेरा करियर खत्म हो गया है, फिर भी मेरे जीवन में कुछ नहीं बदला है, मैं उसी मोड़ पर हूँ, मुझे अभी भी त्याग करना होगा, अभी भी और हमेशा के लिए।

12

सब कुछ समझ लेने के बाद भी जीवित रहना सबसे गलत धारणा है।

जब हम ठंडे दिमाग से विचार करते हैं कि हममें से प्रत्येक को कितना समय दिया गया है, तो यह उतना ही संतोषजनक और उतना ही हास्यास्पद लगता है, चाहे वह एक दिन का हो या एक सदी का।
"मेरा समय बीत चुका है"—जीवन के किसी भी क्षण में, यहां तक कि पहले क्षण में भी, इससे अधिक उपयुक्त कोई अभिव्यक्ति नहीं हो सकती।

मृत्यु उन लोगों का भाग्य है जिन्हें असफलताओं का स्वाद और प्रतिभा प्राप्त होती है—उन सभी का प्रतिफल जो कुछ भी नहीं बन पाए, जो बनना ही नहीं चाहते थे…। यह उनके लिए उचित है, यह उनकी जीत का तरीका है। दूसरी ओर, उन अन्य लोगों के लिए, जिन्होंने सफलता के लिए परिश्रम किया है और जो सफल हुए हैं: यह कितना बड़ा इनकार है, कितना बड़ा तमाचा है!

पंद्रह वर्षों के पूर्ण एकांतवास के बाद, एक मिस्री भिक्षु को अपने परिवार और मित्रों के पत्रों का एक पैकेट मिला। उसने उन्हें खोला नहीं, बल्कि

स्मृति के प्रकोप से बचने के लिए उन्हें आग में फेंक दिया। यदि हम भूतों को प्रकट होने दें, उन्हें हावी होने दें, तो हम स्वयं से और अपने विचारों से संवाद स्थापित नहीं कर सकते। रेगिस्तान नए जीवन का नहीं, बल्कि अतीत की मृत्यु का प्रतीक है: अंततः हम अपने इतिहास से मुक्त हो गए हैं। समाज में, और थेबैद में भी, हमारे द्वारा लिखे गए और प्राप्त किए गए पत्र इस तथ्य की गवाही देते हैं कि हम जंजीरों में जकड़े हुए हैं, हमने किसी भी बंधन को नहीं तोड़ा है, हम केवल गुलाम हैं और इसी के योग्य हैं।

थोड़ा धैर्य रखें, और वह क्षण आ जाएगा जब कुछ भी संभव नहीं होगा, जब मानवता स्वयं पर सिमटकर किसी भी दिशा में एक कदम भी नहीं बढ़ा पाएगी। यद्यपि हम इस अभूतपूर्व दृश्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, फिर भी हमें विस्तृत जानकारी चाहिए।...और हमें डर है कि हम उत्सवों से वंचित रह जाएंगे, क्योंकि हम इतने युवा नहीं हैं कि उनमें शामिल हो सकें।

चाहे इसे कोई दुकानदार बोले या कोई दार्शनिक, यह शब्द, देखने में इतना समृद्ध, इतना लुभावना और इतना अर्थपूर्ण होने के बावजूद, वास्तव में कुछ भी अर्थ नहीं रखता; यह अविश्वसनीय है कि कोई भी समझदार व्यक्ति इसे किसी भी अवसर पर इस्तेमाल कर सकता है।

आधी रात को उठकर, मैं अपने कमरे में इस निश्चितता के साथ घूमने लगा कि मुझे चुना गया है और मैं एक अपराधी भी हूँ, यह एक दोहरा विशेषाधिकार है जो नींद न आने वालों के लिए स्वाभाविक है, लेकिन दिन के समय के तर्क के कैदियों के लिए घृणित या समझ से परे है।

हर किसी का बचपन दुखमय नहीं होता। मेरा बचपन तो सुखमय से भी कहीं अधिक सुखद था—सफलता से भरा हुआ। उस बचपन की पीड़ाओं में भी जो विजय का भाव था, उसे

व्यक्त करने के लिए इससे बेहतर विशेषण नहीं मिल सकता। उसकी कीमत चुकानी ही थी, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता था।

अगर मुझे दोस्तोवस्की के पत्र-व्यवहार इतने पसंद हैं, तो इसलिए कि उनमें वे बीमारी और पैसे के अलावा किसी और विषय पर बात नहीं करते, जो उनके जीवन के एकमात्र ज्वलंत विषय हैं। बाकी सब तो बस दिखावा और निरर्थक बातें हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि पाँच लाख वर्षों में इंग्लैंड पूरी तरह से जलमग्न हो जाएगा। यदि मैं एक अंग्रेज होता, तो मैं तुरंत अपने हथियार डाल देता। हममें से प्रत्येक के लिए समय की अपनी इकाई होती है। किसी के लिए यह दिन, सप्ताह, महीना या वर्ष हो सकता है; किसी के लिए यह दशक या शताब्दी हो सकती है... ये इकाइयाँ, जो मानवीय पैमाने पर ही हैं, किसी भी योजना या कार्य के अनुकूल हैं।
लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो अपना समय अपने काम के लिए ही निकाल लेते हैं, और कभी-कभी तो उससे भी ऊपर उठ जाते हैं: उनके लिए कौन सा काम, कौन सी योजना गंभीरता से लेने लायक है? जो व्यक्ति बहुत दूर तक देखता है, जो पूरे भविष्य के साथ-साथ चलता है, वह न तो कुछ कर सकता है और न ही आगे बढ़ सकता है...

अनिश्चितता के प्रति एक जुनून हर परिस्थिति में मेरा पीछा करता है: आज सुबह एक पत्र भेजते समय, मैंने खुद से कहा कि यह एक नश्वर व्यक्ति को संबोधित है।

किसी भी विषय पर आधारित एक ऐसा अनुभव जो आपको पूर्ण रूप से प्रभावित करे, और आप अपनी ही नजर में एक उत्तरजीवी प्रतीत होते हैं।

§

§

§

§

§

§

जब भी मुझे क्रोध का दौरा पड़ता है, मैं पहले दुखी और निराश होता हूँ, फिर खुद से कहता हूँ: क्या किस्मत है, क्या वरदान है! मैं अभी भी जीवित हूँ, मैं अभी भी उन हाड़-मांस के भूतों में से एक हूँ, ...

अभी-अभी मुझे जो टेलीग्राम मिला था, उसका कोई अंत नहीं था। मेरे सारे दावे, मेरी सारी कमियाँ उसमें थीं। कुछ ऐसी कमियाँ जिनका मुझे खुद भी शायद ही शक था, उजागर हो गईं, सबके सामने आ गईं! क्या दूरदर्शिता थी, क्या बारीकी थी! उस अंतहीन अभियोग के अंत में, कोई सुराग नहीं, कोई संकेत नहीं जिससे मैं भेजने वाले की पहचान कर सकूँ। आखिर कौन हो सकता है? और इतनी जल्दबाजी क्यों, संचार का यह अपरिचित तरीका क्यों? भला कौन अपने मन की बात इतनी सख्ती से कह सकता है? यह सर्वज्ञानी न्यायाधीश कहाँ से आया, जो अपना नाम लेने की हिम्मत नहीं करता, यह कायर जो मेरे सारे राज़ जानता है, यह पूछताछ करने वाला जो किसी भी तरह की नरमी नहीं बरतता, यहाँ तक कि सबसे कठोर यातना देने वालों द्वारा दी जाने वाली नरमी भी नहीं? मुझसे भी एक-दो गलतियाँ हो सकती हैं, मुझे भी कुछ रियायत पाने का हक है। मैं अपनी कमियों की सूची के सामने झुक जाता हूँ, मेरा दम घुटता है, मैं सच्चाइयों के इस सिलसिले को सहन नहीं कर सकता… शापित टेलीग्राम—मैं इसे फाड़ देता हूँ, और जाग जाता हूँ…

राय रखना स्वाभाविक है, लाज़मी है; लेकिन दृढ़ विश्वास रखना उतना स्वाभाविक नहीं है। जब भी मैं किसी ऐसे व्यक्ति से मिलता हूँ जिसके दृढ़ विश्वास होते हैं, तो मैं सोचता हूँ कि किस बौद्धिक दोष, किस कमी के कारण उसने ऐसा विश्वास विकसित किया है। हालाँकि यह प्रश्न कितना भी जायज़ क्यों न हो, इसे बार-बार उठाने की मेरी आदत बातचीत का मज़ा किरकिरा कर देती है, मुझे कचोटती है और मुझे खुद की नज़रों में घृणित बना देती है।

एक समय था जब लेखन मेरे लिए महत्वपूर्ण हुआ करता था। मेरी तमाम अंधविश्वासों में से यह सबसे समझौतावादी और सबसे समझ से परे लगता है।

मैंने घृणा शब्द का दुरुपयोग किया है। लेकिन मैं उस स्थिति को व्यक्त करने के लिए और कौन सा शब्द इस्तेमाल कर सकता हूँ जिसमें झुंझलाहट लगातार सुस्ती से और सुस्ती झुंझलाहट से दूर होती रहती है?

पूरी शाम, उसे परिभाषित करने की कोशिश करते हुए, हमने उन सभी नरम शब्दों पर विचार किया जिनसे उसके लिए विश्वासघात शब्द का उच्चारण न करना पड़े। वह विश्वासघाती नहीं है, वह तो बस पेचीदा है, शैतानी रूप से पेचीदा, और साथ ही साथ निर्दोष, भोला, यहाँ तक कि देवदूत जैसा भी। कल्पना कीजिए, अगर आप कर सकते हैं, तो अलियोशा और स्मरद्याकोव का मिश्रण।

जब आप स्वयं पर विश्वास खो देते हैं, तो आप सृजन और संघर्ष करना बंद कर देते हैं, यहाँ तक कि प्रश्न पूछना और उनके उत्तर देना भी बंद कर देते हैं, जबकि इसके विपरीत होना चाहिए था। क्योंकि यही वह क्षण है जब सभी बंधनों से मुक्त होकर आप सत्य को समझ पाते हैं, वास्तविक और असत्य के बीच अंतर कर पाते हैं। लेकिन एक बार जब अपनी भूमिका या अपने भाग्य पर आपका विश्वास समाप्त हो जाता है, तो आप हर चीज के प्रति उदासीन हो जाते हैं, यहाँ तक कि "सत्य" के प्रति भी, जबकि आप उसके पहले से कहीं अधिक करीब होते हैं।

स्वर्ग में, मैं एक "मौसम" या एक दिन भी नहीं टिक पाऊँगा; तो फिर उसके लिए मेरी तड़प का क्या कारण है? मैं इसका कारण नहीं बता सकता, यह हमेशा से मुझमें बसा हुआ है, यह मेरे अस्तित्व में आने से पहले ही मेरा हिस्सा था।

कभी-कभी किसी को यह अहसास हो सकता है कि वह केवल एक बिंदु और एक क्षण में ही मौजूद है; दिन-रात, घंटे-घंटे ऐसा अहसास होना कम ही होता है, और इसी अनुभव,

इसी तथ्य से व्यक्ति निर्वाण या व्यंग्य की ओर—या दोनों की ओर—संभालता है।

यद्यपि मैंने पवित्र संक्षिप्तता के विरुद्ध कभी पाप न करने की शपथ ली है, फिर भी मैं शब्दों के साथ मिलीभगत में हूँ, और यदि मैं मौन से मोहित हो जाता हूँ तो मैं उसमें प्रवेश करने का साहस नहीं करता, मैं केवल उसकी परिधि पर ही मंडराता रहता हूँ।

हमें किसी धर्म की सत्यता का निर्धारण इस आधार पर करना चाहिए कि वह शैतान को किस प्रकार देखता है: वह धर्म शैतान को जितना अधिक ऊंचा स्थान देता है, उतना ही यह इस बात का प्रमाण है कि वह वास्तविकता से संबंधित है, छल और झूठ को अस्वीकार करता है, गंभीर है, और ध्यान भटकाने या सांत्वना देने की तुलना में सत्यापन को अधिक महत्व देता है।

कुछ भी मिटाने लायक नहीं है, निःसंदेह इसलिए क्योंकि कुछ भी करने लायक नहीं था। इसलिए हम हर चीज से विरक्त हो जाते हैं, मूल से भी और अंतिम से भी, उत्पत्ति से भी और पतन से भी।

हम जानते हैं, हम महसूस करते हैं कि सब कुछ कहा जा चुका है, कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं है। लेकिन हम इस बात को कम ही महसूस करते हैं कि यह सत्य भाषा को एक विचित्र, यहाँ तक कि विचलित करने वाला दर्जा प्रदान करता है जो उसे मुक्ति दिलाता है। अंततः शब्द इसलिए बच जाते हैं क्योंकि उनका जीवन समाप्त हो चुका होता है।

मृतकों की स्थिति पर मेरे चिंतन से मुझे जो अपार लाभ और अपार हानि हुई है।

§

§

§

§

§

बुद्ध से भी आगे जाना, निर्वाण से भी ऊपर उठना, उसके बिना जीना सीखना..., किसी भी चीज़ से न रुकना, यहाँ तक कि मुक्ति की धारणा से भी नहीं, उसे महज़ एक पड़ाव, एक शर्मिंदगी, एक ग्रहण मानना...

मेरी कमजोरी उन राजवंशों के लिए है जिनका अंत निश्चित है, उन साम्राज्यों के लिए जो पतन की ओर हैं, उन मोंटेज़ुमाओं के लिए जो हमेशा बने रहेंगे, उन लोगों के लिए जो संकेतों में विश्वास करते हैं, उन लोगों के लिए जो घायल और सताए हुए हैं, उन नशेड़ियों के लिए जो अपरिहार्य के नशे में चूर हैं, उन लोगों के लिए जो खतरे में हैं, जो निगल लिए गए हैं, उन सभी के लिए जो अपने जल्लाद की प्रतीक्षा कर रहे हैं...

मैं उस आलोचक की समाधि पर बिना रुके आगे बढ़ जाता हूँ, जिसकी कटु टिप्पणियों पर मैंने अक्सर विचार किया है। न ही उस कवि की समाधि पर, जिसने अपना जीवन अपने अंतिम अंत के स्वप्न में व्यतीत किया। अन्य नाम मेरा पीछा करते हैं, पराये नाम जो निर्मम और शांतिदायक ज्ञान से जुड़े हैं, एक ऐसे दृष्टिकोण से जो मन को सभी आसक्तियों से, यहाँ तक कि अंत्येष्टि से भी मुक्त करने के लिए रचित है। नागार्जुन, चंद्रकीर्ति, शांतिदेव—अद्वितीय साहसी, मोक्ष की आसक्त चेतना से ग्रस्त तर्कशास्त्री, कलाबाज और शून्यता के दूत, जिनके लिए, ऋषियों में ऋषियों के समान, ब्रह्मांड मात्र एक शब्द था…।

चाहे मैं कितनी ही शरद ऋतुओं में गिरने के लिए इतने उत्सुक इन पत्तों के दृश्य को देखूं, यह मुझे हर बार आश्चर्यचकित कर देता है - एक ऐसा आश्चर्य जिसमें "रीढ़ की हड्डी में सिहरन" पैदा हो जाती, अगर अंतिम क्षण में उस उल्लास का विस्फोट न होता जिसका स्रोत मैं बता नहीं सकता।

कुछ ऐसे क्षण होते हैं जब, धर्म से पूरी तरह दूर होने के बावजूद, हम केवल ईश्वर को ही अपना संवादकर्ता मान सकते हैं। किसी और से संवाद करना असंभव, बल्कि पागलपन जैसा लगता है। एकांत अपने चरम पर पहुँचकर एक ऐसे संवाद की मांग करता है जो स्वयं भी चरम होता है।

मनुष्य से एक विशेष प्रकार की गंध आती है: सभी जानवरों में से, केवल उसी से शव जैसी गंध आती है।

घंटे बीतते ही नहीं थे; भोर दूर, अकल्पनीय लग रही थी। वास्तव में मैं भोर का नहीं, बल्कि उन निर्दयी घंटों की विस्मृति का इंतजार कर रहा था जो जागने से इनकार कर रहे थे। मैंने मन ही मन सोचा, मृत्युदंड प्राप्त व्यक्ति कितना भाग्यशाली है, जिसे अपनी फांसी की पूर्व संध्या पर कम से कम एक अच्छी रात तो मिलेगी!

क्या मैं एक और मिनट भी खड़ा रह पाऊंगा? क्या मैं गिर जाऊंगा? अगर कोई एक दिलचस्प अनुभूति है, तो वह है जो हमें मिर्गी का पूर्वाभास देती है।

जो व्यक्ति खुद से बच जाता है, वह बिना स्वीकार किए ही खुद से नफरत करता है, कभी-कभी तो बिना यह जाने भी कि वह कितना नफरत करता है।

जब आप विद्रोह की उम्र पार कर लेते हैं, और फिर भी विद्रोह करते रहते हैं, तो आप खुद को एक प्रकार का बूढ़ा लुसिफर समझने लगते हैं।

यदि हम जीवन के कलंक को न मिटाएं, तो चोरी करना कितना आसान होगा, और सब कुछ अपने आप कितना सुचारू रूप से चलता रहेगा!

मैं किसी को भी तुरंत माफ कर सकता हूँ। बदला लेने की मेरी इच्छा बहुत देर से जागती है, इतनी देर से कि अपराध की याद धुंधली पड़ जाती है और जब कार्रवाई करने की प्रेरणा लगभग खत्म हो जाती है, तो मेरे पास केवल एक ही रास्ता बचता है: अपनी "अच्छी भावनाओं" पर पछतावा करना।

हमारे जीवन के जिन क्षणों में हमें मृत्यु से कुछ हद तक संपर्क स्थापित करने का अवसर मिलता है, केवल उसी हद तक हमें इस बात की झलक मिल पाती है कि संपूर्ण अस्तित्व किस पागलपन पर आधारित है।

अंततः, हम कुछ हैं या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, चाहे हम ईश्वर ही क्यों न हों। थोड़ा दबाव डालने पर लगभग हर कोई इस बात से सहमत हो सकता है। लेकिन फिर ऐसा कैसे होता है कि हर कोई जीवन के अतिरिक्त स्तर, अस्तित्व के अतिरिक्त स्तर की आकांक्षा रखता है, और कोई भी ऐसा नहीं है जो आदर्श स्थिति की ओर गिरने, नीचे उतरने का प्रयास करता हो?

कुछ जनजातियों में प्रचलित एक मान्यता के अनुसार, मृत आत्माएं जीवित आत्माओं की ही भाषा बोलती हैं, सिवाय इसके कि उनके लिए शब्दों का अर्थ उनके अर्थ से विपरीत होता है: बड़ा का अर्थ छोटा, पास का अर्थ दूर, काला का अर्थ सफेद...
क्या मृत्यु का सार यही है? फिर भी, अंत्येष्टि से जुड़ी किसी भी नई प्रथा से कहीं बेहतर, भाषा का यह पूर्ण उलटफेर मृत्यु के बारे में उस अनपेक्षित, विस्मयकारी पहलू को दर्शाता है...

मैं मनुष्य के भविष्य में पूर्णतः विश्वास करने को तैयार हूँ, लेकिन जब व्यक्ति के पास अभी भी अपनी इंद्रियाँ हैं, तो उसका प्रबंधन कैसे किया जाए? इसके लिए तो उनकी लगभग पूर्णतः विफलता ही आवश्यक होगी, और तब भी…!

जो विचार गुप्त रूप से नियति से प्रभावित नहीं होता, वह विनिमेय, अर्थहीन, मात्र विचार ही होता है...

ट्यूरिन में, अपने पागलपन की शुरुआत में, नीत्शे अपने दर्पण के पास दौड़कर जाते, खुद को देखते, नज़रें फेर लेते, फिर देखते। बेसल ले जा रही ट्रेन में, वह हमेशा एक दर्पण मांगते थे। उन्हें अब पता नहीं था कि वे कौन हैं, वे खुद को ही खोजते रहते थे, और यह व्यक्ति, जो अपनी पहचान को बचाने के लिए इतना उत्सुक था, खुद को जानने के लिए इतना प्यासा था, उसके पास सबसे भद्दा, सबसे दयनीय उपाय के अलावा कोई और साधन नहीं था।

मुझसे ज्यादा बेकार और अनुपयोगी कोई नहीं: यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे मुझे बिना किसी गर्व के स्वीकार करना होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, मेरी बेकारता का बोध किसी काम का नहीं।

चाहे दुःस्वप्न कैसा भी हो, उसमें व्यक्ति की कोई न कोई भूमिका होती है, वह नायक होता है, वह कुछ न कुछ होता है। रात में ही वंचित व्यक्ति की विजय होती है। यदि हम बुरे सपनों को दबा दें, तो जन-क्रांतियाँ हो जाएँगी।

भविष्य का आतंक हमेशा उस आतंक का अनुभव करने की इच्छा से जुड़ा होता है।

अचानक मैं अकेला रह गया… मुझे अपने बचपन की उस दोपहर ऐसा लगा जैसे कोई बहुत गंभीर घटना घटित हुई हो। यह मेरी पहली जागृति थी, पहला संकेत, चेतना का पूर्वसूचक। इससे पहले मैं महज़ एक प्राणी था। उस क्षण से, मैं उससे कहीं अधिक और उससे कहीं कम हो गया। हर चीज़ की शुरुआत एक दरार और एक रहस्योद्घाटन से होती है।

जन्म और बंधन पर्यायवाची हैं। दिन का उजाला देखना, बेड़ियाँ देखना...

“सब कुछ मायावी है” कहना भ्रम को बढ़ावा देना है, उसे अत्यधिक वास्तविकता, सर्वोच्च वास्तविकता का दर्जा देना है, जबकि वास्तव में हम उसे नकारना चाहते थे। इसका समाधान क्या है? इसका प्रचार या खंडन करना बंद कर दें, इसके बारे में सोचकर इसकी सेवा करना बंद कर दें। वह विचार जो सभी विचारों को अमान्य कर देता है, एक बंधन है।

अगर हम दिन में चौबीस घंटे सो सकते, तो हम जल्द ही आदिम कीचड़ में लौट जाते, उत्पत्ति से पहले की उस पूर्ण सुस्ती की परम सुख की अवस्था में—हर उस चेतना का सपना जो खुद से तंग आ चुकी है।

जन्म न लेना निस्संदेह सबसे अच्छी योजना है। दुर्भाग्य से, यह किसी के बस की बात नहीं है।

इस दुनिया को मुझसे ज्यादा प्यार किसी ने नहीं किया, और फिर भी अगर यह मुझे बचपन में भी थाली में परोस कर दी जाती, तो मैं चीख कर कहता, "बहुत देर हो गई, बहुत देर हो गई!"

§

“□□□□ □□□—□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□?” □□□ □□□□, □□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□…

******* end *******

sjeet